रश्मि आलोक

चुने हुए रचनांश

राकेश नारायण द्विवेदी

रश्मि आलोक

(चुने हुए रचनांश)

राकेश नारायण द्विवेदी

जानकी प्रकाशन

© Publisher

Published by Janki Publication

By Pt Babulal Dwivedi, Neerajanam, Rawatyana, Lalitpur-284403

Mob. 9838303690

Rashmi Alok (Collection the substance from different much known books and citations)

By Dr Rakesh Narayan Dwivedi

rakeshndwivedi@gmail.com

Mob.9236114604

E-Book Publication Year 2015

ISBN 978-81908912-8-8

Price Rs 150/-

पूज्यपाद–द्वय –

माताजी श्रीमती श्यामा द्विवेदी

एवं

पिताजी श्री बाबूलाल द्विवेदी

को सादर

पुरोवाक्

विद्यार्थी जीवन में श्रीरामचरितमानस के बारे में पिताजी कहा करते थे कि यदि तुम्हें हिंदी सीखनी हो तो मानस का पाठ अर्थ समझते हुए किया करो। अतिशयता के बावजूद वह कहते– ऐसा कोई हिंदी का शब्द नहीं जो इसमें न हो, धार्मिकता के कारण भी यह मेरे पाठ में शामिल रहा और हिंदी का बहुत सा शब्द भंडार इससे बढ़ा।

रामचरितमानस हिन्दी भाषियों के लिए एक अमूल्य एवं शाश्वत उपहार है, 'गले का हार' है। गोस्वामी तुलसीदास ने इसकी रचना करके भारत तथा अनेक दूरस्थ देशों में बसे भारतवंशियों पर बड़ा उपकार किया है। आज के आपाधापी युग में क्लान्त मानव को कहीं विश्राम नहीं, वह पूर्णतः अशान्त, उद्विग्न एवं विक्षुब्ध है, उसे अपरिमित भौतिक साधनों के परिग्रह में भी सुख नहीं।

दिग्भ्रमित मनुष्य को सम्यक् नीति का परिज्ञान होने के निमित्त रामचरितमानस का महत्व 17वीं शताब्दी से लेकर आज तक बना हुआ है। भले ही समय बदला हो, स्थितियां बदली हों किन्तु मानव को 'मानव' बनाने की आचार संहिता भारतीय समाज के एक बड़े हिस्से के लिए रामचरितमानस ही है।

रामचरितमानस एक विशद् ग्रंथ है। आज मनुष्य को कुछ जल्दी है और कुछ जल्दबाजी भी। पूरा ग्रंथ पारायण करने के प्रति मनुष्य केवल अखण्डपाठ तक सीमित रह गया है। ऐसे में गुलदस्ते के फूलों के समान रामचरितमानस के सुभाषितों का संकलन मुझे आवश्यक एवं उपयोगी जान पड़ा । नारी संबंधी कुछ दोहों चौपाइयों को छोड़कर ये वे मोती हैं जिन्हैं मानस रूपी महासागर में गोते लगाकर चुना गया है। तुलसी की नारी विषयक दृष्टि आज के स्त्री विमर्श में तो नहीं आ सकती, पर सम्यक् विचारोपरांत यह कहा जा सकता है कि तुलसी नारी विरोधी नहीं थे। कवितावली में तो तुलसी के आराध्य 'राम' भगवती 'सीता' के पांव में चुभा कांटा निकालने के बहाने उनका श्रम परिहार करते हैं। सुभाषितों का यह संकलन पूरा हो, ऐसा मेरा दावा कतई नहीं। नाना पुराण निगमागमयुत मानस के भाव वैविध्य और कथा विस्तार में पूरा तो क्या पूरे के निकट पहुंचने का दावा भी बचकाना होगा। मानस में वर्णित नारी संबंधी कथनों को कांडवार अलग से दिया जा रहा है, इसमें नारी के अधिकांश तुलसी कथन समाहित हुए, पर सारे कथनों को समेटने का मेरा दावा बिलकुल नहीं है।

मानस और हिंदी के साहित्यकारों ही नहीं उर्दू के प्रसिद्ध शायरों और संस्कृत तथा अंग्रेजी विचारकों की सूक्तियां पुस्तक में संग्रहीत की गई हैं। गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अपने समय में प्राप्त पुस्तकों में संवेदना के आधार पर जो अंश चुने गए, उन्हें यथारूप प्रस्तुत किया जा रहा है।

यही नहीं; यह पुस्तक विद्यार्थी जीवन में पाठ्यक्रम से भिन्न पुस्तकों में पठित एवं यत्र–तत्र सुनी गई सूक्तियों का संकलन है। बीस–पच्चीस वर्ष पूर्व से यह संकलन प्रारंभ हुआ, जहां से जो बात सुन–पढ़कर अच्छी लगी, उसे एक डायरी में लिखता गया। पूज्य पिताजी भी अपना संकलन इस प्रकार करते थे, उन्हीं से प्रेरित होकर लिखता गया। कालप्रवाह में इनमें से कुछ अंश ग़ायब हुए, जुड़ते भी रहे। इसमें मेरा कुछ नहीं है, यह कवियों और मनीषियों की रचनाओं के अंश हैं। उनका यथास्थान उल्लेख किया गया है, किंतु जहां कहीं ज्ञात नहीं हो पाया, वह अंश बिना उल्लेख के भी दे दिया है। अतः सर्वप्रथम उन विद्वानों से क्षमा चाहते हुए व्यक्तिगत स्मृति के लिए लिखे इन अंशों को सार्वजनिक कर रहा हूं। दिए गए अंशों से मेरा सहमत होना अनिवार्य नहीं है, बल्कि कई बातों से असहमति ही है। यहां देने का उद्देश्य यही है कि और लोगों के समान ऐसी चीजें मेरे द्वारा पढ़ी या सुनी गई हैं। यह कहना भी आवश्यक है कि इतना मात्र ही नहीं पढ़ा गया, लेकिन जो पढ़ा, उसे गुना अवश्य है। स्वाभाविक रूप से समय के साथ–साथ उसमें विचारगत योग होता गया।

मुझे लगता है कि किसी को भी आत्मकथा लिखने की बजाय जो उसने पढ़ा–सुना, लिखा–किया; उसका ब्यौरेवार वर्णन पाठकों को यदि दिया जाता है तो पाठक स्वयं आत्मकथाकार के व्यक्तित्व को समझ सकेगा। व्यक्ति द्वारा विद्यार्थी काल से युवावस्था तक के जीवन में जो कुछ किया गया होता है, वस्तुतः वही उसके जीवन में आगे जाता है; क्योंकि हमारा चरित्र दो वस्तुओं से बनता है, विचारधारा से और समय बिताने के ढंग से। समयाभाव और त्वरा के कारण कृतियां नहीं पढ़ी जा रही हैं, ऐसे में इस कृति के माध्यम से स्वेट मार्डन, आचार्य रजनीश, एडॉल्फ हिटलर, स्वामी विवेकानंद जैसे प्रसिद्ध व्यक्तित्वों, विचारकों एवं रचनाकारों से एक साथ जुड़ना संभव हुआ, जिससे पाठक को परितोष प्राप्त होगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

शब्दार्णव, उरई। नववर्ष 2015

राकेश नारायण द्विवेदी

अनुक्रम

पुरोवाक्	6
1 रामचरितमानस के सुभाषित	9
2 रामचरितमानस में नारी	39
3 दशद्वार से सोपान तक–हरिवंशराय बच्चन	43
4 रहीम पदावली	45
5 तरकश – जावेद अख्तर	49
6 पद्मश्री बशीर बद्र	51
7 मिर्ज़ा ग़ालिब	57
8 नज़ीर	59
9 संस्कृत साहित्य से	60
10 इंगलिश कोटेशंस	65
11 साकेत (मैथिलीशरण गुप्त)–सार	66
12 भारत–भारती– मैथिलीशरण गुप्त	72
13 पांचाली– रांगेय राघव	77
14 स्वामी विवेकानन्द	80
15 चित्रलेखा–भगवती चरण वर्मा	83
16 स्वेट मार्डन	84
17 रजनीश–राज 'भारत, गांधी और मैं'	92
18 महावीर, ब्रह्मचर्य, कर्मवाद और पुनर्जन्म– आचार्य रजनीश	96
19 नए भारत की खोज– आचार्य रजनीश	99
20 एडॉल्फ हिटलर की आत्मकथा – माइन काम्फ	101
21 साहित्य का खुला आकाश– विद्यानिवास मिश्र	103
22 पद्य सार	107
23 गद्य सार	119

1

रामचरितमानस के सुभाषित

बालकाण्ड

साधु चरित सुभ चरित कपासू । निरस बिसद गुनमय फल जासू ।।
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । बंदनीय जेहि जग जस पावा ।।
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परस कुधातु सुहाई ।।
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ।।

बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध करि दोइ ।। 3 क ।।

संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु ।
बालविनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु ।। 3 ख ।।

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ । जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ ।।
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें । उजरें हरष बिषाद बसेरें ।।
हरि हर जस राकेस राहु से । पर अकाज भट सहसबाहु से ।।
जे पर दोश लखहिं सहसाखी । पर हित घृत जिन्ह के मन माखी ।।
पर अकाजु लगि तनु पररिहरहीं । जिमि हिम उपल कृषी दल गरहीं ।।

उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।
जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ।। 4 ।।

बंदउँ संत असज्जन चरना । दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ।।
बिछुरत एक प्रान हर लेहीं । मिलत एक दुख दारुन देहीं ।।
उपजहिं एक संग जग माहीं । जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ।।
सुधा सुरा सम साधु असाधू । जनक एक जग जलधि अगाधू ।।
गुन अवगुन जानत सब कोई । जो जेहिं भाव नीक तेहि सोई ।।

भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरता गरल सराहिअ मीचु ।।5।।

जड़ चेतन गुन दोसमय बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ।।6।।

हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहुँ बेद बिदित सब काहू ।।
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संगा ।।
धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ।।
सोइ जल अनल अनिल संघाता । होइ जलद जग जीवन दाता ।।

ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ।।7 क ।।

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह ।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस कीन्ह ।। 7 ख ।।

सीय राम मय सब जग जानी । करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ।।
जौं बालक कह तोतरि बाता । सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ।।
निज कबित्त केहिं लाग न नीका । सरस होउ अथवा अति फीका ।।
जे पर भनिति सुनत हरशाहीं । ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं ।।
जग बहु नर सर सरि सम भाई । जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई ।।
सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई । देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई ।।

भाग छोट अभिलाङ्ग बड़ करउँ एक बिस्वास ।
पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास ।। 8 ।।

खल परिहास होइ हित मोरा । काक कहहिं कलकंठ कठोरा ।।

भाशा भनिति भोरि मति मोरी । हॅसिबे जोग हॅसें नहिं खोरी ।।
हरि हर पद रति मति न कुतरकी । तिन्ह कहॅ मधुर कथा रघुबर की ।।
कबि न होउॅ नहिं बचन प्रबीनू । सकल कला सब बिद्या हीनू ।।
आखर अरथ अलंकृति नाना । छंद प्रबंध अनेक बिधाना ।।
भाव भेद रस भेद अपारा । कबित दोष गुन बिबिध प्रकारा ।।
कबित बिबेक एक नहिं मोरें । सत्य कहहु लिखि कागद कोरें ।।
एहि महॅ रघुपति नाम उदारा । अति पावन पुरान श्रुति सारा ।।
मंगल भवन अमंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ।।
बिधुबदनी सब भॉति सॅवारी । सोह न बसन बिना बर नारी ।।
जदपि कबित रस एकउ नाहीं । राम प्रताप प्रगट एहिं माहीं ।।
भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी । राम कथा जग मंगल करनी ।।
मनि मानिक मुकुता छबि देखी । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ।।
नृप किरीट तरुनी तनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई ।।
तैसेहिं सुकबि कबित बुध कहहीं । उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं ।।
कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना । सिर धुनि गिरा लगत पछिताना ।।
कबि न होउॅ नहिं चतुर कहावउॅ । मति अनुरूप राम गुन गावउॅ ।।
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं । सो श्रम बादि बाल कबि करहीं ।।
कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरि सम सब कहॅ हित होई ।।

गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न ।
बंदउॅ सीताराम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ।। 18 ।।

अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी । उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ।।

ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद ।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद ।। 50 ।।

सती कीन्ह चह तहॅहुॅ दुराऊ । देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ ।।

सतीं हृदयँ अनुमान किय सब जानेउ सर्बग्य ।
कीन्ह कपटु मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य ।। 57 क ।।

जलु पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि ।
बिलग होइ रस जाइ कपट खटाई परत पुनि ।। 57 ख ।।

नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ।।
जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा । जाइअ बिनु बोलेउ न सँदेहा ।।
तदपि बिरोध मान जहँ कोई । तहाँ गए कल्यान न होई ।।
जद्यपि जग दारुन दुख नाना । सब तें कठिन जाति अवमाना ।।
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं । तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं ।।
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई । सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ।।
समरथु कहुँ नहिं दोशु गोसाईं । रबि पावक सुरसरि की नाईं ।।

प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरउ भगवान ।
पारबतिहि निरमयउ जेहि सोइ करिहि कल्यान ।। 71 ।।

मातु पिता गुर प्रभु कै बानी । बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी ।।
पर घर घालक लाज न भीरा । बाँझ कि जान प्रसव की पीरा ।।
कत बिधि सृजी नारि जग माहीं । पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ।।
सिव सम को रघुपति ब्रतधारी । बिनु अघ तजी सती असि नारी ।।
अब मोहि आपनि किंकरि जानी । जदपि सहज जड़ नारि अयानी ।।

जदपि जोषिता नहिं अधिकारी । दासी मन क्रम बचन तुम्हारी ।।
जिन्ह कृत महामोह मद पाना । तिन्ह कर कहा करिय नहिं काना ।।
सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ।।
अगुन अरूप अलख अज जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ।।
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें । जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें ।।
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना । कर बिनु करम करइ बिधि नाना ।।

आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु बानी बकता बड़ जोगी ।।

जेहिं इमि गावहिं बेद बुध जाहिं धरहिं मुनि ध्यान ।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान ।। 118 ।।

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी । मत हमार अस सुनहिं सयानी ।।
जब जब होइ धरम कै हानी । बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी । सीदहिं (कष्ट पाते हैं) बिप्र धेनु सुर धरनी ।।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।।
कुपथ माग रुज (रोगी) ब्याकुल रोगी । बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी ।।
परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । भावइ मनहिं करहु तुम्ह सोई ।।

नील सरोरुह नीलमनि नीरधर (मेघ) स्याम ।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ।। 146 ।।

जथा दरिद्र बिबुध तरु पाई । बहु संपति मॉगत सकुचाई ।।

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहेउ सतिभाउ ।
चाहउॅ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ।। 149 ।।

तुलसी देखि सुबेषु भूलहिं मूढ़ न चतुर नर ।
सुन्दर केकिहि पेखु बचन सुधा सम अशन अहि ।। 161 ख ।।

जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ । फलउ तबहिं जब करिअ दुराऊ ।।

रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु ।
अजहुॅ देत दुख रबि ससिहि सिर अवसेषित राहु ।। 170 ।।

भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर ।

किएँ अन्यथा होइ नहिं बिप्र श्राप अति घोर ।। 174

भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम ।
धूरि मेरु सम जनक जम ताहि ब्याल सम दाम ।। 175 ।।

सुख संपति सुत सेन सहाई । जय प्रताप बल बुद्वि बड़ाई ।।
नित नूतन सब बाढ़त जाई । जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ।।
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना । प्रेम ते प्रगत होहिं मैं जाना ।।
बाढ़े खल बहु चोर जुआरा । जे लंपट परधन परदारा ।।
मानहिं मातु पिता नहिं देवा । साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ।।
जिन्ह के यह आचरन भवानी । ते जानहु निसिचर सब प्रानी ।।

ब्यापक ब्रह्म निरंजन (माया रहित) निर्गुन बिगत बिनोद (विनोद रहित) ।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या कें गोद ।। 198 ।।

देखरावा मातहिं निज अद्भुद रूप अखण्ड ।
रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मण्ड ।। 201 ।।

भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ ।
भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन (दही भात) लपटाइ ।। 203 ।।

ब्यापक अकल (निरवयव) अनीह (इच्छा रहित) अज (अजन्मा) निर्गुन नाम न रूप ।
भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप ।। 205 ।।

बय किसोर सुषमा सदन स्याम गौर सुखधाम ।
अंग अंग पर बारिअहिं कोटि कोटि सतकाम ।। 220 ।।

उठे लखन निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान ।
गुर तें पहले जगतपति जागे राम सुजान ।। 226 ।।

स्याम गौर किमि जाइ बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी ।।
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी । नहिं पावहिं परतिय मनु डीठी ।।
मंगन लहहिं न जिन्ह कै नाहीं । ते नरबर थोरे जग माहीं ।।
जिन्ह कें रही भावना जैसी । प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ।।
रबि मंडल देखत लघु लागा । उदय तासु तिभुवन तम भागा ।।

मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब ।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब ।। 256 ।।

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ।।
तृषित बारि बिनु जो तन त्यागा । मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ।।
का बरषा सब कृषी सुखानें । समय चुकें पुनि का पछितानें ।।

संकर चापु जहाज सागरु रघुबर बाहुबलु ।
बूड़ सो सकल समाज चढ़ा जो प्रथमहि मोह बस ।। 261 ।।

सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई ।।

सांत बेषु करनी कठिन बरनि न जाइ सरूप ।
धरि मुनि तनु जनु बीर रसु आयउ जहँ सब भूप ।। 268 ।।

सुर महिसुर हरिजन अरु गाई । हमरें कुल इन्ह पर न सुराई ।।

सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु ।
बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ।। 274 ।।

जौं लरिका कछु अचगरि करहीं । गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ।।

लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोध पाप कर मूल ।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल ।। 277 ।।

बररैं बालक एक सुभाऊ । इन्हहिं न संत बिदूषहिं काऊ ।।
गुनह लखन कर हम पर रोषू । कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू ।।
टेढ़ जानि सब बंदइ काहू । बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू ।।

तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा बंस ब्यवहारु ।
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुर बेद बिदित आचारु ।। 286 ।।

सास ससुर गुर सेवा करेहू । पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू ।।
अति सनेह बस सखीं सयानी । नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी ।।
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारीं । कहहिं बिरंचि रचीं कत नारी ।।
बधू लरिकनीं पर घर आईं । राखहु नयन पलक की नाईं ।।
जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नसाहीं ।।

अयोध्याकाण्ड

जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं । ते जनु सकल बिभव बस करहीं ।।

बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाज ।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब राम होहिं जुबराजु ।। 4 ।।

जौं पॉचहिं मत लागै नीका । करहु हरषि हियँ रामहिं टीका ।।
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं । इहइ सगुन फल दूसर नाहीं ।।
सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू ।।
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू । भयउ पुनीत आजु यहु गेहू ।।
ऊँच निवास नीच करतूती । देखि न सकहिं पराइ बिभूती ।।

काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।
तिय विसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि ।। 14 ।।

कोउ नृप होउ हमें का हानी । चेरि छाड़ि अब होब कि रानी ।।
को न कुसंगति पाइ नसाई । रहइ न नीच मतें चतुराई ।।
जद्यपि नीति निपुर नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ।।
नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा ।।
सत्यमूल सब सुकृत सुहाए । बेद पुरान बिदित मनु गाए ।।
दुइ कि होइ एक समय भुआला । हँसब ठठाइ फुलाउब गाला ।।
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी । जो पितु मातु बचन अनुरागी ।।
तनय मातु पितु तोषनिहारा । दुर्लभ जननि सकल संसारा ।।
सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ । सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ ।।
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ।।

काह न पावक जारि सक का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ।। 47 ।।

जौं केवल पितु आयसु ताता । तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ।।
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना । तौ कानन सत अबध समाना ।।
दिवस जात नहिं लागहिं बारा । सुन्दरि सिखवनु सुनहु हमारा ।।

भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल ।
ते कि सदा सब दिन मिलहिं सबुइ समय अनुकूल ।। 62 ।।

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी ।।
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा । जब लगि गंग जमुन जल धारा ।।

मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ ।। 70 ।।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृप अवसि नरक अधिकारी ।।
धरम नीति उपदेसिअ ताही । कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ।।
पुत्रवती जुबती जग सोई । रघुपति भगतु जासु सुतु होई ।।
नतरु बॉझ भलि बादि बिआनी । राम बिमुख सुत तें हित जानी ।।
धरम नीति उपदेसिअ ताही । कीरति भूति सुगति प्रिय जाही ।।
राग रोगु इरिषा मद मोहू । जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू ।।
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी । ईसु देइ फलु हृदयँ बिचारी ।।
करइ जो करम पाव फल सोई । निगम नीति असि कह सबु कोई ।।

औरु करै अपराधु कोउ और पाव फल भोगु ।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु ।। 77 ।।

सपने होइ भिखारि नृपु रंक नाकपति (स्वर्ग का स्वामी इन्द्र) होइ ।
जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपंचं जियँ सोइ ।। 92 ।।

धरम न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ।।

सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहँसे करुना ऐन चितइ जानकी लखन तन ।। 100 ।।

पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ।।
खंजन मंजु तिरीछे नयननि । निज पति कहेउ तिन्हहि सिय सयननि ।।
भईं मुदित सब ग्राम बधूटीं । रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं ।।

राम सरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर (वाणी के अगोचर और बुद्धि से परे) ।
अबिगत (अव्यक्त) अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ।। 126 ।।

जग पेखन तुम्ह देखनिहारे । बिधि हरि संभु नचावनिहारे ।।

काम कोह मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ।।
जिन्ह कें कपट दम्भ नहिं माया । तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया ।।
सबके प्रिय सबके हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी ।।
जे हरषहिं पर संपति देखी । दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी ।।

जाहि न चाहिउ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु ।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु ।। 131 ।।

जनम मरन सब दुख सुख भोगा । हानि लाभु प्रिय मिलन बियोगा ।।
काल करम बस होहिं गोसाईं । बरबस राति दिवस की नाईं ।।
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं । दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ।।
धीरज धरहु बिबेकु बिचारी । छाड़िअ सोच सकल हितकारी ।।
बिधिहु न नारि हृदय गति जानी । सकल कपट अघ अवगुन खानी ।।
सरल सुसील धरम रत राऊ । सो किमि जानै तीय सुभाऊ ।।

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभ जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ।। 171 ।।

सोचिअ बिप्र जो बेद बिहीना । तजि निज धरमु बिशय लयलीना ।।
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना ।।
सोचिअ बयसु कृपन धनवानू । जो न अतिथि सिव भगति सुजानू ।।
सोचिअ सूद्र बिप्र अवमानी । मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी ।।
सोचिअ पुनि पति बंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ।।
सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई । जो नहिं गुर आयसु अनुसरई ।।

सोचिअ गृही जो मोह बस करहु करम पथ त्याग ।
सोचिअ जती प्रपंच रत बिगत बिबेक बिराग ।। 172 ।।

बैखानस सोइ सोचै जोगू । तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू ।।

सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुर बंधु बिरोधी ।।
सब बिधि सोचिअ पर अपकारी । निज तनु पोषक निरदय भारी ।।
सोचनीय सबहीं बिधि सोई । जो न छाड़ि छलु हरि जन होई ।।

अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ।। 174 ।।

बेद बिदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ।।
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी । सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी ।।
उचित कि अनुचित किएँ बिचारू । धरमु जाइ सिर पातक भारू ।।

कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहिं मोर ।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ।। 179 ।।

ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार ।
ताहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार ।। 180 ।।

लोक बेद सब भाँतिहिं नीचा । जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा ।।
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता । मिलत पुलक परिपूरित गाता ।।
राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहिं न पाप पुंज समुहाहीं ।।
उलटा नाम जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ।।

स्वपच (मूर्ख और पामर चाण्डाल) सबर खस जमन (यमन) जड़ पावँर कोल किरात ।
रामु कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात ।। 194 ।।

झलका झलकत पायन्ह कैसें । पंकज कोस ओस कन जैसें ।।

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरवान ।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन ।। 204 ।।

लोक बेद संमत सब कहई । जेहि पितु देइ राज सो लहई ।।

संपति (भोग विलास की सामग्री) चकई भरतु चक मुनि (भरद्वाज) आयस खेलवार ।
तेहि निसि आश्रम पिंजरा राखे भा भिनुसार ।। 215 ।।

भरत सरिस को राम सनेही । जग जपु राम राम जपु जेहीं ।।
भायप भगति भरत आचरनू । कहत सुनत दुख दूषन हरनू ।।
विषयी जीव पाइ प्रभुताई । मूढ़ मोह बस होहिं जनाई ।।
भरतहि दोसु देइ को जाएँ । जग बौराइ राज पदु पाएँ ।।

ससि गुर तिय गामी नघुषु चढ़ेउ भूमिसुर जान ।
लोक बेद तें बिमुख भा अधम न बेन समान ।। 228 ।।

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू । केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ।।
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ । रिपु रिन रंच न राखब काऊ ।।

छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।
लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ।। 229 ।।

कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सबते कठिन राजमदु भाई ।।

भरतहि होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ ।। 231 ।।

जौं न होत जग जनम भरत को । सकल धरम धुर धरनि धरत को ।।
यह हमारि अति बड़ सेवकाई । लेहिं न बासन बसन चुराई ।।
जनम हेतु सब कहँ पितु माता । करम सुभासुभ देइ बिधाता ।।
गा चह पार जतनु हियँ हेरा । पावति नाव न बोहितु बेरा ।।

भरत बिनय सादर सुनिअ करिय बिचारि बहोरि ।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ।। 258 ।।

तात कुतरक करहु जनि जाएँ । बैर प्रेम नहिं दुरइ दुराएँ ।।
हित अनहित पसु पच्छिउ जाना । मानुष तनु गुन ग्यान निधाना ।।

सुनिय सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ।। 281 ।।

कठिन करम गति जान बिधाता । जो सुभ असुभ सकल फल दाता ।।
कसें कनकु मनि पारिखि पाएँ । पुरुष परिखिअहिं समयँ सुभाएँ ।।
अनुचित आज कहब अस मोरा । सोक सनेहँ सयानप थोरा ।।
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं ।।
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ।।
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू । बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू ।।
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे । अरथु अमित अति आखर थोरे ।।
ज्यों मुख मुकुरु मुकुरु निज पानी । गहि न जाइ अस अद्‌भुद बानी ।।

करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।
गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ।। 304 ।।

होहिं कुठायँ सुबंधु सुहाए । ओड़ियहिं हाथ असिनहु के धाए ।।

सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिब होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोइ ।। 306 ।।

मुखिया मुख सो चाहिए खान पान कहुँ एक ।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक ।। 315 ।।

भरत चरित कर नेमु तुलसी जे सादर सुनहिं ।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ रस भव बिरति ।। 326 ।।

अरण्यकाण्ड

धीरज धरम मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहिं चारी ।।
बृद्ध रोग बस जड़ धन हीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना ।।
ऐसेहु पति कर किऍं अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ।।
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा । कायॅ बचन मन पति पद प्रेमा ।।
बिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई ।।
पति प्रतिकूल जनम जहॅ जाई । बिधवा होइ पाइ तरुनाई ।।

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुॅ तुलसिका हरिहि प्रिय ।। 5 क ।।

आगें राम अनुज पुनि पाछें । मुनि बर बेश बिराजत काछें ।।
उभय बीच श्री सोहइ कैसी । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ।।
मैं अरु मोर तोर मैं माया । जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया ।।
भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ।।
होइ बिकल सक मनहिं न रोकी । जिमि रबि मनि द्रब रबिहिं बिलोकी ।।
प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा । जो कछु करहिं उनहि सब छाजा ।।
सेवक सुख चह मान भिखारी । ब्यसनी धन सुभ गति बिभिचारी ।।
लोभी जसु चह चार गुमानी । नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी ।।
रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई । रिपु पर कृपा परम कदराई ।।
राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा । हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा ।।
बिद्या बिनु बिबेक उपजाऍं । श्रम फल पढ़ें किऍं अरु पाऍं ।।
संग तें जती कुमंत्र तें राजा । मान ते ग्यान पान तें लाजा ।।
प्रीति प्रनय बिनु मद ते गुनी । नासहिं बेगि नीति अस सुनी ।।

रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअ न छोट करि ।
अस कहि बिबिध बिलाप करि लागी रोदन करन ।। 21 क ।।

नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ।।
भयदायक खल कै प्रिय बानी । जिमि अकाल के कुसुम भवानी ।।
भइ मम कीट भृंग की नाई । जहॅ तहॅ मैं देखउॅ दोउ भाई ।।
तब मारीच हृदय अनुमाना । नवहिं बिरोधे नहिं कल्याना ।।
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी । बैद बंदि कबि भानस गुनी ।।
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । तिन्ह कहुॅ कछु दुर्लभ जग नाहीं ।।
कोमल चित अति दीन दयाला । कारन बिन रघुनाथ कृपाला ।।
अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महॅ मैं मति मंद अघारी ।।
भगति हीन नर सोहइ कैसा । बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा । दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ।।

गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान ।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ।। 35 ।।

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा । पंचम भजन सो बेद प्रकासा ।।
छठ दम सील बिरति बहु करमा । निरत निरंतर सज्जन धरमा ।।
सातवॅ मम मोहिमय जग देखा । मोते संत अधिक कर लेखा ।।
आठवॅ जथा लाभ संतोषा । सपनेहुॅ नहिं देखइ परदोषा ।।
नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हियॅ हरष न दीना ।।
राखिअ नारि जदपि उर माहीं । जुबती सास्त्र नृपति बस नाहीं ।।

तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिष महुॅ छोभ ।। 38 क ।।

लोभ कें इच्छा दम्भ बल काम कें केवल नारि ।

क्रोध कें परुष बचन बल मुनिबर कहहिं बिचारि ।। 38 ख ।।

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एक तें एका ।।
राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन बधिका ।।

काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि ।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ।। 43 ।।

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता । मोह बिपिन कहुँ नारि बसंता ।।
जप तप नेम जलाश्रय झारी । होइ ग्रीषम सोषइ सब नारी ।।

पाप उलूक निकर सुखकारी । नारि निविड़ रजनी अँधियारी ।।
बुधि बल सील सत्य सब मीना । बन सी सम त्रिय कहहिं प्रबीना ।।
अवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि ।
ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि ।। 44 ।।

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं । पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं ।।
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती । सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ।।

दीपसिखा सम जुवति तन मन जन होसि पतंग ।
भजहिं राम तजि काम मद करहिं सदा सतसंग ।। 46 ख ।।

किष्किन्धाकाण्ड

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी । तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी ।।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना । मित्रक दुख रज मेरु समाना ।।
जिन्ह के असि मति सहज न आई । ते सठ कत हठि करत मिताई ।।
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा । गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा ।।
देत लेत मन संक न धरई । बल अनुमान सदा हित करई ।।

बिपति काल कर सतगुन नेहा । श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ।।
आगें कह मृदु बचन बनाई । पाछें अनहित मन कुटिलाई ।।
जाकर चित अहि गति सम भाई । अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई ।।
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी । कपटी मित्र सूल सम चारी ।।
अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ।।
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बधें कछु पाप न होई ।।
उमा दारु जोषित की नाईं । सबहिं नचावत राम गोसाईं ।।
सुर नर मुनि सब कै यह रीती । स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ।।
दामिनि दमक रह न घन माहीं । खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ।।
बूँद अघात सहहिं गिरि जैसें । खल के बचन संत सह जैसें ।।
छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई । जस थोरेहुँ धन खल इतराई ।।

हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सद्ग्रंथ ।। 14 ।।

ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ।।
महाबृष्टि चलि फूटि किआरीं । जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं ।।

कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत के उपजें कुल सद्धर्म नसाहिं ।। 15 क ।।

उदित अगस्ति पंथ जल सोषा । जिमि लोभहि सोषइ संतोषा ।।
सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ।।
सुखी मीन जे नीर अगाधा । जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ।।
फूलें कमल सोह सर कैसा । निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा ।।
मसक दंस बीते हिम त्रासा । जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा ।।
नाथ बिषय सम मद कछु नाहीं । मुनि मन मोह करइ छन माहीं ।।
नारि नयन सर जाहि न लागा । घोर क्रोध तम निसि जो जागा ।।

सुन्दरकाण्ड

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला एक अंग ।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ।। 4 ।।

सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभु प्रताप ते गरुड़हिं खाइ परम लघु ब्याल ।। 16 ।।

बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषन भूषित बर नारी ।।
साधु अबग्या कर फलु ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ।।
साखामृग कै बड़ि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ।।
सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ।।

सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि ही होइ बेगिहीं नास ।। 37 ।।

सो परनारि लिलार गोसाईं । तजउ चउथि के चंद कि नाईं ।।
सुमति कुमति सब के उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।।
जहॉ सुमति तहॅ संपति नाना । जहॉ कुमति तहॅ बिपति निदाना ।।
साधु अबग्या तुरत भवानी । कर कल्यान अखिल कै हानी ।।
निर्मल मन जन सो मोहि पावा । मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।।
बरु भल बास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ।।
समदरसी कछु इच्छा नाहीं । हरष सोक भय नहिं मन माहीं ।।
अस सज्जन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयॅ बसइ धनु जैसें ।।
कादर मन कर एक अधारा । दैव दैव आलसी पुकारा ।।

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ।। 57 ।।

सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुन्दर नीती ।।
ममतारत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी ।।
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बए फल जथा ।।

काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ।। 58 ।।

ढोल गॅवार सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ।

लंकाकाण्ड

सिव द्रोही मम भगत कहावा । सो नर सपनेहुॅ नहिं भावा ।।

संकर प्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक महॅ बास ।। 2 ।।

बॉध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ।। 5 ।।

नाथ बयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सकिअ जीति जाही सों ।।

अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान ।
मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान ।। 15 क ।।

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।।
साहस अनृत चपलता माया । भय अबिबेक असौच अदाया ।।

फूलइ फरइ न बेंत जदपि सुधा बरसहिं जलद ।
मूरुख हृदय न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम ।। 16 ख ।।

प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति अस आहि ।
जौं मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ।। 23 ग ।।

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई । मुएहि बधें नहिं कछु मनुसाई ।।
कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ।।
सदा रोगबस संतत क्रोधी । बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी ।।
तनु पोशक निंदक अघ खानी । जीवत सव सम चौदह प्रानी ।।
सुत बित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ।।
अस बिचारि जियॅ जागहु ताता । मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ।।
चरित राम के सगुन भवानी । तर्कि न जाहिं बुद्धि बल बानी ।।
अस बिचारि जे तग्य बिरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ।।
पर उपदेस कुसल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।।
साम दान अरु दण्ड बिभेदा । नृप उर बसहिं नाथ कह बेदा ।।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ।।
बल बिबेक दम परहित घोरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ।।
ईसु भजन सारथी सुजाना । बिरति चर्म संतोष कृपाना ।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा । बर बिग्यान कठिन कोदंडा ।।
अमल अचल मन त्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ।।
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा । एहि सम बिजय उपाय न दूजा ।।
सखा धर्ममय अस रथ जाकें । जीतन कहॅ न कतहुॅ रिपु ताकें ।।

छन्द – जनि जल्पना करि सुजसु नासहिं नीति सुनहि करहि छमा ।
संसार महॅ पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा ।।
एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं ।
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं ।।

काटत बढ़हिं सीस समुदाई । जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ।।

उत्तरकाण्ड

नारि कुमुदिनी अबध सर रघुपति बिरह दिनेस ।
अस्त भएँ बिगसत भई निरखि राम राकेस ।। 9 क ।।

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि ।। 19 ग ।।

राम राज बैठे त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ।।
बयरु न कर काहू सन कोई । राम प्रताप बिषमता खोई ।।

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोक न रोग ।। 20 ।।

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहिं काहुहिं ब्यापा ।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ।।
चारिउ चरन धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ।।
राम भगति रत नर अरु नारी । सकल परम गति के अधिकारी ।।
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा । सब सुन्दर सब बिरुज सरीरा ।।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ।।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ।।
सब उदार सब पर उपकारी । बिप्र चरन सेवक नर नारी ।।
एक नारि ब्रत रत सब झारी । ते मन बच क्रम पति हितकारी ।।

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज ।। 22 ।।

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन । रहहिं एक संग गज पंचानन ।।
खग मृग सहज बयरु बिसराई । सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ।।

कूजहिं खग मृग नाना बृंदा । अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ।।
सीतल सुरभि पवन बह मंदा । गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ।।
लता बिटप मांगे मधु चवहीं । मनभावतो धेनु पय स्रवहीं ।।
ससि संपन्न सदा रह धरनी । त्रेतॉ भइ कृतजुग कै करनी ।।
सरिता सकल बहहिं बर बारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ।।
सागर निज मरजादॉ रहहीं । डारहिं रत्न तटहिं नर लहहीं ।।
सरसिज संकुल सकल तड़ागा । अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा ।।

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जितनेहिं काज ।
मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज ।। 23 ।।

दुइ सुत सुंदर सीतॉ जाए । लव कुस वेद पुरानन गाए ।।
संत असंतन्ह कै असि करनी । जिमि कुठार चंदन आचरनी ।।
जहॅ कहुॅ निन्दा सुनइ पराई । हरषहिं मनहुॅ परी निधि पाई ।।
काम क्रोध मद लोभ परायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ।।
बयरु अकारन सब काहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ।।
झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ भोजन झूठ चबेना ।।
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा । खाइ महा अहि हृदय कठोरा ।।

परद्रोही परदार रत पर धन पर अपबाद ।
ते नर पावॅर पापमय देह धरें मनुजाद ।। 39 ।।

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन । सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न ।।
काहू की जो सुनहिं बड़ाई । स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ।।
जब काहू की देखहिं बिपती । सुखी भए मानहुॅ जग नृपती ।।
स्वारथ रत परिवार बिरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ।।
मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ।।
करहिं मोह बस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ।।
अवगुन सिंधु मंदमति कामी । बेद बिदूषक पर धन स्वामी ।।

बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषा । दंभ कपट जियॅ धरें सुबेषा ।।

ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक बृंद बहु होइहहिं कलिजुग माहिं ।। 40 ।।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई । परपीड़ा सम नहिं अधमाई ।।
सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहउॅ न कछु ममता उर आनी ।।
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहिं सोहाई ।।
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसासन माने जोई ।।
जो अनीति कछु भाषौं भाई । तौ मोहि बरजहु भय बिसराई ।।
बड़े भाग मानुष तन पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हिं गावा ।।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । पाइ न जेहिं परलोक सॅवारा ।।

सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ।। 43 ।।

कबहुॅक करि करुना नर देही । देत ईस बिनु हेतु सनेही ।।
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिन न मन कहुॅ टेका ।।
पुन्य एक जग महुॅ नहिं दूजा । मन क्रम बचन बिप्र पद पूजा ।।
कहहु भगति पथ कवन प्रयासा । जोग न मख जप तप उपवासा ।।
उपरोहित्य कर्म अति मंदा । बेद पुरान सुमृति कर निंदा ।।
छूटइ मल कि मलहि के धोएॅ । घृत कि पाव कोइ बारि बिलोएॅ ।।
ग्यानवंत कोटिक महॅ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ ।।

बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गएॅ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ।। 61 ।।

कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग खगही कै भाषा ।।
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । जथा लाभ संतोष सदाई ।।?

मोह न अंध कीन्ह केहिं केही । को जग काम नचाव न जेही ।।
तृस्नॉ केहि न कीन्ह बौराहा । केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा ।।

ग्यानी तापस सूर कबि कोबिद गुन आगार ।
केहि कै लोभ बिडंबना कीन्ह न एहिं संसार ।। 70 क ।।

श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ।। 70 ख ।।

सुत बित लोक ईशना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ।।
एक पिता के बिपुल कुमारा । होहिं पृथक गुन सील अचारा ।।
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता । कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ।।
कोउ सर्बग्य धर्मरत कोई । सब पर पितहिं प्रीति सम होई ।।
कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा । सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा ।।
सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना । जद्यपि सो सब भॉति अयाना ।।
प्रीति बिना नहिं भगति दिढ़ाई । जिमि खगपति जल कै चिकनाई ।।

बिनु गुर होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु ।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ।। 89 क ।।

कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ ।। 89 ख ।।

बिनु संतोष न काम नसाहीं । काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं ।।
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महि गंध कि पावइ कोई ।।
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ।।

बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह बिश्रामु ।। 90 क ।।

अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुबीर करुनाकर सुंदर सुखद ।। 90 ख ।।

गुर बिन भव निधि तरइ न कोई । जौं बिरंचि संकर सम होई ।।
जेहि तें कछु निज स्वारथ होई । तेहि पर ममता कर सब कोई ।।

पन्नगारि अस नीति श्रुति संमत सज्जन कहहिं ।
अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित ।। 95 क ।।

पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर ।
कृमि पालइ सब कोइ परम अपावन प्रान सम ।। 95 ख ।।

कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सद्ग्रंथ ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ ।। 97 क ।।

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी । श्रुति बिरोध रत सब नर नारी ।।
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । कोउ नहिं मान निगम अनुसासन ।।
मारग सोइ जा कहुँ जोइ भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ।।
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई । ता कहुँ संत कहइ सब कोई ।।
सो सयान जो परधन हारी । जो कर दंभ सो बड़ आचारी ।।
जो कह झूठ मसखरी जाना । कलियुग सोइ गुनवंत बखाना ।।
जाके नख अरु जटा बिसाला । सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ।।

असुभ बेष भूषन धरें भच्छाभच्छ जे खाहिं ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ।। 98 क ।।

जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुँ ।। 98 ख ।।

नारि बिबस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ।।
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । भजहिं नारि पर पुरुश अभागी ।।
सौभागिनीं बिभूषन हीना । बिधवन्ह के सिंगार नबीना ।।
गुर सिश बधिर अंध का लेखा । एक न सुनइ एक नहिं देखा ।।
हरइ सिष्य धन सोक न हरई । सो गुर घोर नरक महुँ परई ।।
मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं । उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं ।।

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ।
जानइ ब्रह्म सो बिप्रबर ऑखि देखावहिं डाटि ।। 99 ख ।।

जे बरनाधम तेलि कुम्हारा । स्वपच किरात कोल कलवारा ।।
नारि मुई गृह संपति नासी । मूड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी ।।

बहु दाम सॅवारहिं धाम जती । बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती ।।
तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलि कौतुक तात न जात कही ।।
कुलवंत निकारहिं नारि सती । गृह आनहिं चेरि निबेरि गती ।।
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । अबलानन दीख नहीं जब लौं ।।
ससुरारि पिआरि लगी जब तें । रिपुरूप कुटुंब भए तब तें ।।
नृप पाप परायन धर्म नहीं । करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं ।।
धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी ।।
नहिं मान पुरान न बेदहिं जो । हरि सेवक संत सही कलि सो ।।
कबि बृंद उदार दुनी न सुनी । गुन दूषन ब्रात न कोपि गुनी ।।
कलि बारहिं बार दुकाल परै । बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ।।

अबला कच भूषन भूरि छुधा । धनहीन दुखी ममता बहुधा ।।
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता । मति थोरि कठोरि न कोमलता ।।
नर पीड़ित रोग न भोग कहीं । अभिमान बिरोध अकारनहीं ।।
लघु जीवन संबतु पंच दसा । कलपांत न नास गुमानु असा ।।

कलिकाल बिहाल किए मनुजा । नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा ।।
नहिं तोष बिचार न सीतलता । सब जाति कुजाति भए मगता ।।
इरिशा परुषाच्छर लोलुपता । भरि पूरि रही समता बिगता ।।
सब लोग बियोग बिसोक हए । बरनाश्रम धर्म अचार गए ।।
दम दान दया नहिं जानपनी । जड़ता परबंचनताति घनी ।।
तनु पोषक नारि नरा सगरे । परनिंदक जे जग मो बगरे ।।

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना । एक अधार राम गुन गाना ।।
कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ।।
तामस बहुत रजोगुन थोरा । कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा ।।
जेहि ते नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहि हति ताहि नसावा ।।
धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ।। आग से उत्पन्न धुआं मेघ की पदवी पाकर उसी अग्नि को बुझा देता है ।
रज मग परी निरादर सहई । सब कर पद प्रहार नित सहई ।।
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि गरई । पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई ।।
कबि कोबिद गावहिं अस नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ।।
उदासीन नित रहिअ गोसाईं । खल परिहरिअ स्वान की नाईं ।।
जे सठ गुर सन इरिशा करहीं । रौरव नरक कोटि जुग परहीं ।।
अति संघरषन कर जो कोई । अनल प्रगट चंदन ते होई ।।
कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकें । तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकें ।।
अघ कि पिसुनता सम कछु आना । धर्म कि दया सरिस हरिजाना ।।

उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध ।
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध ।। 112 ख ।।

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ । कछु दुख तुम्हहि न ब्यापिहि काऊ ।।
भगतिहि ग्यानिहि नहिं कछु भेदा । उभय हरहिं भव संभव खेदा ।।
ईस्वर अंस जीव अबिनासी । चेतन अमल सहज सुखरासी ।।
मोह न नारि नारि कें रूपा । पन्नगारि यह रीति अनूपा ।।

सो मायाबस भयउ गोसाईं । बँध्यो कीर मरकट की नाईं ।।

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेक ।। 118 ख ।।

ग्यान पंथ कृपान कै धारा । परत खगेस होइ नहिं बारा ।।

सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि ।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ।। 119 क ।।

मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा । राम ते अधिक राम कर दासा ।।
नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाहीं ।।
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ।।
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला । तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला ।।
काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा ।।
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई । उपजइ सन्यपात दुखदाई ।।

एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि ।
पीड़हिं संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि ।। 121 क ।।

बारि मथें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ।। 122 क ।।

संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन्ह पर कहै न जाना ।।
निज परिताप द्रवै नवनीता । पर दुख द्रवै संत सुपुनीता ।।

गिरिजा संत समागत सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं बेद पुरान ।। 125 ख ।।

सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुबीर परायन जेहिं नर उपज बिनीत ।। 127 ।।

कहिअ न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि । जो न भजइ सचराचर स्वामिहि ।।
राम कथा के तेइ अधिकारी । जिन्ह कें सत संगति अति प्यारी ।।

एहिं कलिकाल न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ।।

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ।। 130 ख ।।

2

रामचरितमानस में नारी

बालकाण्ड

बिधुबदनी सब भॉति सॅवारी । सोह न बसन बिना बर नारी ।।
सती कीन्ह चह तहॅहुॅ दुराऊ । देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ ।।

सतीं हृदयॅ अनुमान किय सब जानेउ सर्बग्य ।
कीन्ह कपटु मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य ।। 57 क ।।

पर घर घालक लाज न भीरा । बॉझ कि जान प्रसव की पीरा ।।

प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्री भगवान ।
पारबतिति निरमयउ जेहि सोइ करिहि कल्यान ।। 71 ।।

कत बिधि सृजी नारि जग माहीं । पराधीन सपनेहुॅ सुखु नाहीं ।।
सिव सम को रघुपति ब्रतधारी । बिनु अघ तजी सती असि नारी ।।
अब मोहि आपनि किंकरि जानी । जदपि सहज जड़ नारि अयानी ।।

जदपि जोषिता नहिं अधिकारी । दासी मन क्रम बचन तुम्हारी ।।
सास ससुर गुर सेवा करेहू । पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू ।।
अति सनेह बस सखीं सयानी । नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी ।।
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारीं । कहहिं बिरंचि रचीं कत नारी ।।
बधू लरिकनीं पर घर आईं । राखहु नयन पलक की नाईं ।।

अयोध्याकाण्ड

काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।
तिय विसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि ।। 14 ।।

जद्यपि नीति निपुर नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ।।
सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ । सब बिधि अगहु अगाध दुराऊ ।।
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ।।

काह न पावक जारि सक का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ ।। 47 ।।

जौं केवल पितु आयसु ताता । तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ।।
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना । तौ कानन सत अबध समाना ।।
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी ।।
बिधिहु न नारि ह्रदय गति जानी । सकल कपट अघ अवगुन खानी ।।
सरल सुसील धरम रत राऊ । सो किमि जानै तीय सुभाऊ ।। ?

अरण्यकाण्ड

धीरज धरम मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहिं चारी ।।
बृद्ध रोग बस जड़ धन हीना । अंध बधिर क्रोधी अति दीना ।।
ऐसेहु पति कर किऍं अपमाना । नारि पाव जमपुर दुख नाना ।।
एकइ धर्म एक ब्रत नेमा । कायॅ बचन मन पति पद प्रेमा ।।
बिनु श्रम नारि परम गति लहई । पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई ।।
पति प्रतिकूल जनम जहॅ जाई । बिधवा होइ पाइ तरुनाई ।।

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुॅ तुलसिका हरिहि प्रिय ।। 5 क ।।
भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ।।
होइ बिकल सक मनहिं न रोकी । जिमि रबि मनि द्रब रबिहिं बिलोकी ।।
अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महॅ मैं मति मंद अघारी ।।
राखिअ नारि जदपि उर माहीं । जुबती सास्त्र नृपति बस नाहीं ।।

लोभ कें इच्छा दम्भ बल काम कें केवल नारि ।
क्रोध कें परुष बचन बल मुनिबर कहहिं बिचारि ।। 38 ख ।।
काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि ।
तिन्ह महँ अति दारुन दुखद मायारूपी नारि ।। 43 ।।

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता । मोह बिपिन कहुँ नारि बसंता ।।
जप तप नेम जलाश्रय झारी । होइ ग्रीशम सोशइ सब नारी ।।

पाप उलूक निकर सुखकारी । नारि निविड़ रजनी अँधियारी ।।
बुधि बल सील सत्य सब मीना । बन सी सम त्रिय कहहिं प्रबीना ।।
अवगुन मूल सूलप्रद प्रमदा सब दुख खानि ।
ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि ।। 44 ।।
दीपसिखा सम जुवति तन मन जन होसि पतंग ।
भजहिं राम तजि काम मद करहिं सदा सतसंग ।। 46 ख ।।

किष्किन्धाकाण्ड

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी । कपटी मित्र सूल सम चारी ।।
अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ।।
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बधें कछु पाप न होई ।।
महाबृष्टि चलि फूटि किआरीं । जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं ।।
नारि नयन सर जाहि न लागा । घोर क्रोध तम निसि जो जागा ।।

सुन्दरकाण्ड

बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषन भूति बर नारी ।।
सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगल महुँ भय मन अति काचा ।।
सो परनारि लिलार गोसाईं । तजउ चउथि के चंद कि नाईं ।।
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी ।।

लंकाकाण्ड

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ।।
साहस अनृत चपलता माया । भय अबिबेक असौच अदाया ।।

उत्तरकाण्ड

नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपति बिरह दिनेस ।
अस्त भएँ बिगसत भईं निरखि राम राकेस ।। 9 क ।।
सब उदार सब पर उपकारी । बिप्र चरन सेवक नर नारी ।।
एक नारि ब्रत रत सब झारी । ते मन बच क्रम पति हितकारी ।।
बरन धर्म नहिं आश्रम चारी । श्रुति बिरोध रत सब नर नारी ।।
नारि बिबस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ।।
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । भजहिं नारि पर पुरुष अभागी ।।
सौभागिनीं बिभूषन हीना । बिधवन्ह के सिंगार नबीना ।।
कुलवंत निकारहिं नारि सती । गृह आनहिं चेरि निबेरि गती ।।
सुत मानहिं मातु पिता तब लौं । अबलानन दीख नहीं जब लौं ।।
ससुरारि पिआरि लगी जब तें । रिपुरूप कुटुंब भए तब तें ।।
मोह न नारि नारि कें रूपा । पन्नगारि यह रीति अनूपा ।।
कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ।। 130 ख ।।

3

दशद्वार से सोपान तक–हरिवंशराय बच्चन

- ग़लत हिन्दी से चलकर हम सही हिन्दी पर पहुंच सकते हैं, पर अहिन्दी से हिन्दी की ओर कोई रास्ता नहीं बनाया जा सकता ।
- भाषा वह बैल है, जिस पर जितना अधिक बोझ लादा जाय; वह उतना ही मजबूत होता जाता है । भाषा की स्थिति उसकी संभावना से आंकी जानी चाहिए, न कि उसकी अविकसित स्थिति से ।
- प्रथम चुंबने ओष्ठभंगः
- हिन्दी को लाना है तो हिन्दी सेक्शनों को तोड़ देना चाहिए ।
- टेंट में कोंड़ी नहीं नाम करोड़ीमल । मूस मुटाई लोढ़ा होई ।
- उम्र जितनी बढ़ती जाती है उतनी ही घटती जाती है ।
- उम्र सारी तो कटी इश्क बुतां में मोमिन ।
  आखिरी वक़्त में क्या खाक मुसलमां होंगे ।।
- जो सुख छज्जू के चौबारे । वह न बलख न बुखारे ।
- जिन गीतों में शायर अपना ग़म रोते हैं ।
  वे उनके सबसे मीठे नग़मे होते हैं ।।
- काबा ने मुझे कहके मुसलमां पुकारा ।
  हिन्दोस्तान में मुझे काफिर कहा गया ।।
- कुछ अप्रत्याशित घटित होने पर आदमी जिस प्रकार व्यवहार करता है, वही उसके आत्मबल की सच्ची परख करता है ।
- पूरब में पारवती पच्छिम में जय गनेश ।
  दक्खिन में खडानना उत्तर में जय महेस ।।
- कौन जाय जौक़ अब दिल्ली का गलियां छोड़कर ।
  उसकी बेटी ने उठा रक्खी है दुनिया सिर पर ।
  यह तो अच्छा हुआ अंगूर के बेटा न हुआ ।
- त्रिभिर्वर्षैः त्रिभिर्मासैः त्रिभिर्पक्षैः त्रिभिर्दिनः ।

अत्युत्कटैः पाप पुण्यश्च इहैरेव फलमश्नुते ।।

- वासुदेव जराकष्टं कष्ट जीवन निर्धनं ।
  पुत्रशोकं महाकष्टं कष्टातिकष्टं क्षुधा । महाभारत में गांधारी
- क्यों न हम लें मान हम हैं चल रहे ऐसी डगर पर ।
  हर पथिक जिस पर अकेला दुख नहीं बंटते परस्पर ।
- सीस काटि भुइं पर धरै तापर धारै पांव ।
  दास कबीरा यो कहै ऐसा होउ तो आव ।।
- न बंधु मध्ये धनहीन जीवनम ।
  पांसे अपने हाथ में दाव न अपने हाथ ।
- भाग्यं फलति सर्वत्र व बलं न च पौरुषम्।
- पिंडे पिंडे मतिर्भिन्ना कुंडे कुंडे नवं पयः ।
  जातौ जातौ नवाचारः नवावाणी मुखे मुखे ।।
- सुख तो थोड़े से पाते दुख सबके उपर आता
  सुख से वंचित बहुतेरे बच कौन दुखों से पाता ।
- उस प्याले से प्यार मुझे जो दूर हथेली से प्याला
  उस हाला से चाव मुझे जो दूर अधर से है हाला ।
- प्यार नहीं पा जाने में है पाने के अरमानों में
  पा जाता तब हाय, न इतनी प्यारी लगती मधुशाला ।
- प्रात नहीं थी वैसी जैसी रात लगी थी मधुशाला ।
- इस पार प्रिये, मधु है, तुम हो, उस पार, न जाने क्या होगा ?
- तीर पर कैसे रुकूं में आज लहरों में निमंत्रण ।
- क्यों न हम लें मान हम हैं चल रहे ऐसी डगर पर
  हर पथिक जिस पर अकेला दुःख नहीं बंटते परस्पर ।
  दूसरों की वेदना में वेदना जो है दिखाता
  वेदना से मुक्ति का निज हर्ष केवल वह छिपाता ।
  तुम दुःखी हो तो सुखी मैं विश्व का अभिशाप भारी
  क्या करूं संवेदना लेकर तुम्हारी ? क्या करूं संवेदना लेकर तुम्हारी ?

4

रहीम पदावली

- कदली, सीप, भुजंग–मुख, स्वाति एक गुन तीन ।
  जैसी संगति बैठिए तैसोई फल दीन ।।
- कहि रहीम संपति सगे बनत बहुत बहुरीत ।
  बिपति कसौटी जे कसे ते ही सांचे मीत ।।
- काज परे कछु और हैं काज सरे कछु और ।
  रहिमन भंवरी के भए नदी सिरावत मौर ।।
- खीरा सिर ते काटिए मलियत नमक लगाय ।
  रहिमन करुए मुखन को चहियत इहे सजाय
- चाह गई चिंता मिटी मनुआ बेपरवाह ।
  जिनको कछू न चाहिए वे साहन के साह ।।
- छिमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात ।
  का रहीम हरि को घट्यो जो भृगु मारी लात ।।
- जे गरीब परहित करें ते रहीम बड़ लोग ।
  कहां सुदामा बापुरो कृष्ण मिताई जोग ।।
- जो रहीम ओछो बढ़े तो अति ही इतराय ।
  प्यादे सों फरजी भयो टेढ़ो–टेढ़ो जाय ।।
- जो रहीम गति दीप की सुत सपूत की सोय ।
  बारे उजियारो लगे बढ़े अंधेरो होय ।।
- जो रहीम गति दीप की सुत सपूत की सोय ।
  बड़ो उजेरो तेहि रहे गए अंधेरे होय ।।
- जो रहीम भावी कतौं होति आपुने हाथ ।
  राम न जाते हरिन संग सीय न रावन साथ ।।
- रहिमन नीचन संग बसि लगत कलंक न काहि ।
  दूध कलारी कर गहे मद समुझे सब ताहि ।।

- रहिमन रहिबो वां भलो जौं लों सील समूच ।
  सील ढील जब देखिए तुरत कीजिए कूच ।।
- ओछे को सतसंग रहिमन तजहु अंगार ज्यों ।
  तातो बारे अंग सीरे पै कारो करै ।।
- रहिमन प्रीति सराहिए जो घट गुन सम होय ।
  भीति आप पै डारि कै सबै पियावै तोय ।।
- अब रहीम चुप करि रहउ समुझि दिनन का फेर ।
  जब नीके दिन आइहैं बनत न लागे देर
- अब रहीम मुश्किल पड़ी गाढ़े दोऊ काम ।
  सांचे से तो जग नहीं झूठे मिलें न राम ।।
- अरज गरज माने नहीं रहिमन ए जन चारि ।
  रिनिया राजा मांगता काम आतुरी नारि ।।
- आप न काहू काम के डार पात फल फूल ।
  औरन को रोकत फिरें रहिमन पेड़ बबूल ।।
- उरग तुरंग नारि नृपति नीच जाति हथियार ।
  रहिमन इन्हें संभारिए पलटत लगे न बार ।।
- एकै साधे सब सधे सब साधे सब जाय ।
  रहिमन मूलहिं सींचिबो फूलै फलै अघाय ।।
- ओछो काम बड़े करैं तौ न बड़ाई होय ।
  ज्यों रहीम हनुमंत को गिरधर कहै न कोय ।।
- तरुवर फल नहिं खात है सरबर पियहिं न पान ।
  कह रहीम पर काज हित संपति सँचहिं सुजान ।।
- बिगरी बात बनै नहीं लाख करौ किन कोय ।
  रहिमन फाटे दूध को मथे न माखन होय ।।
- रहिमन अपने गोत को सबै चहत उत्साह ।
  मृग उछरत आकाश को भूमी खनत बराह ।।
- रहिमन ओछे नरन सों बैर भली न प्रीति ।

काटे चाटे स्वान के दोऊ भांति विपरीत ।।

- रहिमन कबहु बड़ेन को नाहिं गर्व को लेस ।
  भार धरें संसार को तउ कहावत सेस ।।
- रहिमन जिह्वा बावरी कहि गइ सरग पाताल ।
  आपु तो कहि भीतरि रही जूती खात कपाल ।।
- रहिमन निज मन की बिथा मन ही राखो गोय ।
  सुनि लैहें लोग सब बांटि न लेहे कोय ।।
- रहिमन निज संपति बिना कोउ न विपति सहाय ।
  बिनु पानी ज्यों जलज को नहिं रबि सके बचाय ।।
- रहिमन ब्याह बियाधि है सकहु तो जाहु बचाय ।
  पायन बेड़ी परत है ढोल बजाय बजाय ।।
- रहिमन यहि संसार में सब सों मिलिए धाइ ।
  ना जानें केहि रूप में नारायण मिलि जाइ ।।
- रहिमन विद्या बुद्धि नहिं नहीं धरम जस दान ।
  भू पर जनम वृथा धरै पसु बिनु पूंछ विषान
- रहिमन विपदा हू भली जो थोरे दिन होय ।
  हित अनहित या जगत में जानि परत सब कोय ।।
- रहिमन वे नर मर चुके जे कहुं मांगन जाहिं ।
  उनते पहिले वे मुए जिन मुख निकसत नाहिं
- रीति प्रीति सब सों भली बैर न हित मित गोत ।
  रहिमन याही जनमकी बहुरि न संगत होत ।।
- वे रहीम नर धन्य हैं पर उपकारी अंग ।
  बांटनवारे को लगे ज्यों मेंहदी को रंग ।।
- रहिमन जग की रीति मैं देख्यो रस ऊख में ।
  ताहू में परतीति जहां गांठ तहं रस नहीं ।।
- रहिमन मोहिं न सुहाय अमिय पियावै मान बिनु ।
  बरु विष देय बुलाय मान सहित मरिबो भलो ।।

- उत्तम जाती ब्राह्मनी देखत चित्त लुभाय ।
  परम पाप पल में हरत परसत वाके पाय ।।
- रहिमन रहिला की भली जो परसै चित लाय।
  परसत मन मैला करै सो मैदा जरि जाय।।
- खैर खून खांसी खुशी वैर प्रीति मद पान।
  रहिमन दाबे ना दबै जानत सकल जहान।।

5

तरकश – जावेद अख्तर

- गिन गिन के सिक्के हाथ मेरा खुरदुरा हुआ ।
  जाती रही वो लम्स(स्पर्श) की नरमी बुरा हुआ ।।
- ऊँची इमारतों से मकां मेरा घिर गया ।
  कुछ लोग मेरे हिस्से का सूरज भी खा गए
- खुशशक्ल भी है वो, ये अलग बात है, मगर ।
  हमको ज़हीन (समझदार) लोग हमेशा अज़ीज़ थे ।।
- हमको उठना तो मुंह अंधेरे था ।
  लेकिन इक ख़्वाब हमको घेरे था ।
- सबका खुशी से फ़ासला एक क़दम है ।
  हर घर में बस एक ही कमरा कम है ।।
- अपनी वजहे–बरबादी सुनिए तो मज़े की है ।
  ज़िंदगी से यूं खेले जैसे दूसरे की है ।।
- इस शहर में जीने के अंदाज़ निराले हैं ।
  होंठों पे लतीफे हैं आवाज़ में छाले हैं ।
- आज की दुनिया में जीने का क़रीना (तरीका) समझो ।
  जो मिलें प्यार से उन लोगों को ज़ीना(सीढ़ी) समझो ।।
- उन चराग़ों में तेल ही कम था ।
  क्यो गिला फिर हमें हवा से रहे ।।
- रात सर पर है और सफ़र बाकी ।
  हमको चलना जरा सबेरे था ।।
- मेरे कुछ पल मुझको दे दो बाकी सारे दिन लोगो ।
  तुम जैसा जैसा कहते हो सब वैसा वैसा होगा ।।
- तुम्हें भी याद नहीं और मैं भी भूल गया ।
  वो लम्हा कितना हसीं था मगर फुजूल गया ।।
- रहिए जहां में जब तलक इंसा की शान से ।

वरना कफ़न उठाइए उठिए जहान से ।।

- कल वो आलम था खुदा को भी न कहते थे खुदा ।
  अब ये आलम है कि हर बुत को खुदा कहते हैं ।।
- नहीं सताते किसी को भी जो ज़माने में ।
  वही ज़माने में अक्सर सताए जाते हैं ।।
- उस कश्ती से किसने पूछा क्या गुज़री तूफ़ानों में ।
  जिसने न जाने कितने मुसाफ़िर अब तक पार उतारे हैं ।।
- ये ठीक है कि अंधेरा नहीं है महफिल में ।
  मगर चिराग़ पै क्या–क्या गुज़र गयी होगी ।।
- जीना भी एक मुश्किल फ़न है सबके बस की बात नहीं ।
  कुछ तूफान ज़मीं से हारे कुछ क़तरे तूफ़ान हुए ।।
- ज़रूरतों के अंधेरे में डूब जाती हैं ।
  न जाने कितनी ज़मीनें जो आसमां होतीं ।।
- चाहे जिस शान से निकले सूरज ।
  शाम होती है तो ढल जाते हैं ।।
- आंखें वीरान हैं होंठों पे कोई बात नहीं ।
  यह अगर हम हैं तो तस्वीर किसे कहते हैं ?
- कोई आहट कोई आवाज़ कोई शोर नहीं ।
  मेरे ही घर की तरह चांद में रक्खा क्या है ?
- यही सहरा कि जिसे शहर कहा जाता है ।
  इसी सहरा में हमारा मकां भी है लोगो ।।
- हम भी कैसे दीवाने हैं किन लोगों में बैठे ।
  जान पे खेल के जब सच बोले तब झूठे कहलाए ।।

6

पद्मश्री बशीर बद्र

- कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से ।
  ये नए मिज़ाज का शहर है ज़रा फासले से मिला करो ।
- अभी राह में कई मोड़ हैं कोई आएगा कोई जाएगा
  तुम्हें जिसने दिल से भुला दिया उसे भूलने की दुआ करो
  यूं ही बेसबब न फिरा करो कोई शाम भी घर रहा करो ।
  जो ग़ज़ल की सच्ची क़िताब है उसे चुपके–चुपके पढ़ा करो ।
  मुझे इश्तहार सी लगती है ये मोहब्बतों की कहानियां
  जो कहा नहीं वो सुना करो जो सुना नहीं वो कहा करो ।
  ये फ़िजा की ज़र्द सी साल में जो उदास पेड़ के पास है
  ये तुम्हारे घर की बहार है इसे आंसुओं से हरा करो ।
- बेवफ़ा बावफ़ा नहीं होता खतम ये सिलसिला नहीं होता ।
- कुछ तो मजबूरियां रहीं होंगी यों कोई बेवफ़ा नहीं होता ।
  गुफ्तगू उनसे रोज होती है मुद्दतों सामना नहीं होता ।
  जी बहुत चाहता है सच बोले क्या करें हौसला नहीं होता ।
- मेरी क्लास में मुद्दत से मीरो–मीरां हैं न कोई पास हुआ है न कोई फेल हुआ है ।
- दूध पीते हुए बच्चे की तरह दिल भी दिन में सो जाता है रातों में जगाता है ।
- सारी दुनिया के लिए भारत का ये पैग़ाम है
  प्यार ही आग़ाज़ है और प्यार ही अंज़ाम है
  हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई तभी जब इंसान हैं
  जो किसी मजहब का दुश्मन वही बड़ा शैतान है ।
- रात का इंतजार कौन करे आजकल दिन में क्या नहीं होता ।
- किसी की राह में दहलीज़ पर दिए न रखो किवाड़ सूखी हुई लकड़ियों के होते हैं ।
- लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
  तुम तरस नहीं खाते बस्तियां जलाने में ।
- उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो

न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए ।

- दुश्मनी जम कर करो लेकिन यह गुंजाइश रहे
  जब कभी हम दोस्त बन जाएं तो शर्मिंदा न हों ।
- हम क्या जाने दीवारों से कैसे धूप उतरती होगी
  रात रहे बाहर जाना है रात गए घर आना बाबा ।
- ये फूल मुझे कोई विरासत में मिले हैं
  तुमने मिरा कांटों भरा बिस्तर नहीं देखा ।
- धूप के ऊँचे–नीचे रस्तों को
  एक कमरे का बल्ब क्या जाने ।
- कोई शोला है कोई जलती आग
  जल रहे हैं, जला रहे हैं हम ।
- वो नहीं है तो उसकी आस रहे
  एक जाए तो एक पास रहे ।
- आज हम सब के साथ खूब हंसे
  और फिर देर तक उदास रहे ।
- सूरज चंदा जैसी जोड़ी हम दोनों दिन का राजा रात की रानी हम दोनों
  जगमग–जगमग दुनिया का मेला झूठा सच्चा सोना सच्ची चांदी हम दोनों
  एक दूजे से मिलकर पूरे होते हैं आधी–आधी एक कहानी हम दोनों
  चारों ओर समुंदर बढ़ती चिंता का लहर–लहर लहराती कश्ती हम दोनों
  दुनिया की ये माया कंकर–पत्थर है आंसू–शबनम हीरा मोती हम दोनों ।
- दुश्मनी का सफर इक क़दम दो क़दम तुम भी थक जाओगे हम भी थक जाएंगे
  रफ़्ता–रफ़्ता हर इक जख़्म भर जाएगा सब निशानात फूलों से ढंक जाएंगे
  नाम पानी पे लिखने से क्या फ़ायदा लिखते–लिखते तिरे हाथ थक जाएंगे
  दिन में परियों की कोई कहानी न सुन जंगलों में मुसाफिर भटक जाएंगे ।
- तुम भी मजबूर हो हम भी मजबूर हैं
  बेवफ़ा कौन है बावफ़ा कौन है ?
- खुशी हम ग़रीबों की क्या है मियां मज़ारों पर चादर चढ़ाई हुई
  उदासी बिछी है बड़ी दूर तक बहानों की बेटी पराई हुई ।

- इस तरह दुनिया मिली शिकवा गिला कोई नहीं
  मैं समझता था मिरा तेरे सिवा कोई नहीं ।
- मैं तुझे भूलकर भी नहीं भूलता
  प्यार सोना है सोने का पानी नहीं ।
- हम ग़रीब लोगों के आज भी वही दिन हैं
  पहले क्या असीरी (क़ैद) थी आज क्या रिहाई दी ।
- ये उदासी धुंआं चांदनी चौक में
  चांदनी है कहां चांदनी चौक में ?
- आलम में इंतिखाब (दुनिया के चुनिंदा) थे कुछ लोग शहर में
  कोई तो कुछ बताए कहां जा के बस गए ।
- दिल की दहलीज़ पे यादों के दिये रक्खे हैं
  आज तक हमने ये दरवाज़े खुले रक्खे हैं ।
- आज हम सब एक बहतर ज़िंदगी की दौड़ में
  कैसे–कैसे ख़्वाब क़बरों में सुलाने आए हैं ।
- यहां लिबास की क़ीमत है आदमी की नहीं
  मुझे गिलास बड़ा दे शराब कम कर दे ।
- उदास आंखों से आंसू नहीं निकलते हैं
  ये मोतियों की तरह सीपियों में पलते हैं
  मैं शाहराह (राजपथ) नहीं रास्ते का पत्थर हूं
  यहां सवार भी पैदल उतर के चलते हैं ।
- राहों में कौन आया गया कुछ पता नहीं
  उसको तलाश करते रहे जो मिला नहीं
  मैं चुप रहा तो और ग़लतफ़हमियां बढ़ीं
  वो भी सुना है उसने जो मैंने कहा नहीं ।
- कहां आंखों की ये सौग़ात होगी नए लोग होंगे नई बात होगी ।
  मैं हर हाल में मुस्कुराता रहूंगा तुम्हारी मुहब्बत अगर साथ होगी ।
  चराग़ों को आंखों में महफ़ूज़ रखना बड़ी दूर तक रात ही रात होगी ।
  न तुम होश में हो न मैं होश में हूं चलो वहीं मयक़दे में बात होगी ।

जहां वादियों में नए फूल आए हमारी तुम्हारी मुलाक़ात होगी ।
सदाओं को अल्फ़ाज़ मिलने न पाएं न बादल घिरेंगे न बरसात होगी ।
मुसाफ़िर हैं हम भी मुसाफ़िर हो तुम भी किसी मोड़ पर फिर मुलाक़ात होगी ।

- पहचान हमने अपनी मिटाई है इस तरह
  बच्चों में कोई बात हमारी न आएगी ।
- काश वो आता मिरे माथे के बोसे लेता
  मैं हूं बीमार मिरे हक़ में दुआ कर देता ।
- ख़ाक जब ख़ाकसार लगती है
  किस क़दर बावक़ार लगती है ।
- ज़िंदगी तूने मुझे कब्र से कम दी है ज़मीन
  पांव फैलाऊं तो दीवार में सर लगता है ।
- सभी चार दिन की है चांदनी ये रियासतें ये वजारतें
  मुझे उस फ़क़ीर की शान दे कि ज़माना जिसकी मिसाल दे ।
- तुमको क्या तुम ग़ज़लें कहकर अपनी आग बुझा लोगे
  उसके जी से पूछो जो पत्थर की तरह चुप रहती है ।
- माटी की कच्ची गागर को क्या खोना क्या पाना बाबा
  माटी को माटी में रहना माटी में मिल जाना बाबा ।
  इन ऊंचे शहरों में पैदल सिर्फ़ देहाती ही चलते है
  हमको बाज़ारों से इक दिन कांधे पर ले जाना बाबा ।
- खुदा की इतनी बड़ी कायनात में मैंने
  बस एक शख़्स को मांगा मुझे वही न मिला ।
- हर धड़कते पत्थर को लोग दिल समझते हैं
  उम्रें बीत जातीं हैं दिल को दिल बनाने में ।
- सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा
  इतना मत चाहो उसे वो बेवफ़ा हो जाएगा ।
- शाम तक मेला है पागल पेड़–पंछी किसके मीत
  अपनी–अपनी बोलियां सब बोलकर उड़ जाएंगे ।
- गुर्बत बुरा नशा है इसी का असर न हो

अब बात–बात पर जो बहकने लगे हैं हम ।

- काग़ज़ में दब के मर गए कीड़े क़िताब के
  दीवाना बेपढ़े–लिखे मशहूर हो गया ।
- बात क्या है के मशहूर लोगों के घर
  मौत का सोग होता है तैह्वार सा ।
- मैं चुप था तो चलती नदी रुक गई
  जुबां सब समझते हैं जज़्बात की ।
- हवा के आंख नहीं हाथ और पांव नहीं
  इसीलिए वो सभी रास्तों पर चलती है ।
- अपना टेप बजाकर सुनता है
  सबको अपनी बोली अच्छी लगती है ।
- अण्डा मछली छूकर जिनको पाप लगे
  उनका पूरा हाथ लहू में डूबा है ।
- मुहब्बत अदावत वफ़ा बेरुख़ी किराए के घर थे बदलते रहे
  सुना है उन्हें भी हवा लग गई हवाओं का रुख़ जो बदलते रहे
  वो क्या था जिसे हमने ठुकरा दिया मगर उम्र भर हाथ मलते रहे ।
- कभी–कभी तो छलक पड़ती हैं यूं ही आंखें उदास होने का कोई सबब नहीं होता
  मैं वाल्देन को ये बात कैसे समझाऊँ मुहब्बतों में ह–स–बो–नसब (कुलीनता) नहीं होता ।
- कोई हाथ नहीं खाली है बाबा ये नगरी कैसी है
  कोई किसी का दर्द न जाने सबको अपनी–अपनी पड़ी है
  उसका भी कुछ हक़ है आख़िर उसने मुझसे नफ़रत की है
  जैसे सदियां बीत चुकी हों फिर भी आधी रात अभी है
  कैसे कटेगी तन्हा–तन्हा इतनी सारी उम्र पड़ी हैं ।
  हम दोनों की खूब निभेगी मैं भी दुखी हूं वो भी दुखी है
  अब ग़म से क्या नाता तोड़ें ज़ालिम बचपन का साथी है ।
- इस खुशी में मुझे ख़्याल आया
  ग़म के दिन कितने खूबसूरत थे ।
- दिल की बस्ती पुरानी दिल्ली है जो भी गुज़रा है उसने लूटा है

हम तो कुछ देर हंस भी लेते हैं दिल हमेशा उदास रहता है
कोई मतलब ज़रूर होगा मियां यूं कोई कब किसी से मिलता है ?
तुम अगर मिल भी जाओ तो भी हमें हश्र तक इंतिज़ार करना है ।

- वही ताज है वही तख्त है वही जहर है वही जाम है
  ये वही खुदा की ज़मीन है ये वही बुतों का निज़ाम (व्यवस्था) है ।
- कभी तो शाम ढले अपने घर गए होते किसी की आंख में रहकर संवर गए होते ।
  सिंगारदान में रहते हो आइने की तरह किसी के हाथ से गिरकर बिखर गए होते ।
  ग़ज़ल ने बहते हुए फूल चुन लिए वर्ना ग़मों में डूब के हम लोग मर गए होते ।
  बहुत दिनों से है दिल अपना खाली–खाली सा खुशी नही ंतो उदासी से भर गए होते ।
- मैंने दरिया से सीखी है पानी की पर्दादारी
  ऊपर–ऊपर हंसते रहना गहराई में रो लेना ।
  रोते क्यों हो दिल वालों की किस्मत ऐसी होती है
  सारी रात यूं ही जागोगे दिन निकले तो सो लेना ।
- दूसरों को हमारी सजाएं न दे चांदनी रात को बद्दुआएं न दे
  फूल से आशिकी की हुनर सीख ले तितलियां खुद रुकेंगी सदाएं न दे ।
- मैंने दो चार क़िताबें तो पढ़ी हैं लेकिन
  शहर के तौर–तरीक़े मुझे कम आते हैं ।
- चाहे आंखों की रोशनी ले लो आंसुओ आज रात भर चमको
  आओ इक दूसरे का ग़म बांटे कुछ हमारी सुनो कुछ अपनी कहो
  कौन जाने कहां बिछड़ जाएं राह तारीक़ है क़रीब रहो
  ये ज़मीं मुद्दतों की प्यासी है आंसुओ दिल पे टूटकर बरसो
  वक़्त सौ मुसिफ़ों का मुंसिफ़ है वक़्त आएगा इंतिज़ार करो ।
- मैं जानता हूं कि अंजामकार (अंततः) क्या होगा
  अकेला पत्ता रात भर लड़ता रहे ।
- मैं खुद भी अहतियातन उस गली से कम गुज़रता हूं
  कोई मासूम क्यों मेरे लिए बदनाम हो जाए ।

7

मिर्ज़ा ग़ालिब

- मुनहसिर (निर्भर) मरने पै हो जिसकी उमीद
  नाउमीदी उसकी देखा चाहिए ।
- रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो
  हम सुख़न (साथ बोलने वाला) कोई न हो और हम जवां कोई न हो ।
- बे–दरो–दीवार–सा इक घर बनाया चाहिए
  कोई हमसाया (पड़ोसी) न हो और पासबां (पहरेदार) कोई न हो ।
- पड़िए गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
  और अगर मर जाइए तो नौहा–ख्वां (रोने वाला) कोई न हो ।
- न लुटता दिन को तो कब रात को यूं बेखबर सोता
  रहा खटका न चोरी का दुआ देता हूं रहज़न (बटमार) को ।
- ग़ालिब छुटी शराब पर अब भी कभी–कभी
  पीता हूं रोज़े–अब्रो (जिस दिन बादल छाया हो) सबे–माहताब (चांदनी रात) में ।
- आज हम अपनी परेशानी–ए–खातिर उनसे
  कहने जाते तो हैं पर देखिए क्या कहते हैं ?
- इस सादगी पे कौन न मर जाए ऐ खुदा
  लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं ।
- हमने माना कि तग़ाफुल (उपेक्षा) न करोगे लेकिन
  ख़ाक हो जाएंगे हम तुमको खबर होने तक ।
- थी ख़बर गर्म कि 'ग़ालिब' के उड़ेंगे पुरज़े
  देखने हम भी गए थे पे तमाशा न हुआ ।
- जान दी, दी हुई उसी की थी
  हक़ (सच) तो यह है कि हक़ (कर्तव्य) अदा न हुआ ।
- न था कुछ तो खुदा था कुछ न होता तो खुदा होता
  डुबोया मुझको होने ने न होता मैं तो क्या होता ?

हुई मुद्दत कि 'ग़ालिब' मर गया पर याद आता है
वो हर बात पर कहना कि यूं होता तो क्या होता ?
घर हमारा जो न रोते भी तो वीरां (बरबाद) होता
बहर (समुद्र) गर बहर न होता तो बयाबां होता ।

- दर्द, मिन्नत–कशे–दवा (दवा का आभारी) न हुआ
  मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ ।
- कम जानते थे हम भी ग़मे–इश्क को, पर अब
  देखा, तो कम हुए पै, ग़मे रोज़गार था ।
- रेख़्ता के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब'
  कहते हैं कि पहले कोई मीर भी थे ।
- नहीं, है बिल्कुल ऐसी कि मांगे पानी महज प्यासे ही
  पानी को भी तलाश रहा करती है प्यासे की ।
- हमको मालूम है जन्नत की हक़ीकत लेकिन
  दिल को खुश रखने को ग़ालिब ख़याल अच्छा है ।
- थी ख़बर गर्म कि ग़ालिब के उड़ेंगे पुरज़े
  देखने हम भी गए थे पे तमाशा न हुआ ।
- दुनिया में हूं दुनिया का तलबग़ार नहीं हूं
  बाज़ार से गुज़रा हूं ख़रीदार नहीं हूं ।

8

नज़ीर

- न कुछ हम होके सीखे हैं न कुछ हम रोके सीखे हैं ।
  जो कुछ थोड़ा–सा सीखे हैं किसी के होके सीखे हैं ।
- अच्छा भी आदमी ही कहाता है ए नजीर ।
  और सबमें जो बुरा है सो है वो भी आदमी ।
- है दुनिया जिसका नांव मियां ये और तरह की बस्ती है
  जो महंगों को ये महंगी है और सस्तों को ये सस्ती है ।
  यां हरदम झगड़े उठते हैं हर आन अदालत बस्ती है
  गर मस्त करे तो मस्ती है और पस्त करे तो पस्ती है ।
  कुछ देर नहीं अंधेर नहीं इंसाफ और अह्लपरस्ती है
  इस हाथ करो उस हाथ मिले जां सौदा दस्त–ब–दस्ती है ।

9

संस्कृत साहित्य से

- आहार निद्रा भय मैथुनंच सामान्यमेतत पशुभिः नराणां ।
  धर्मोहितेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनः पशुभिः समानः ।।
- काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
  व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ।।
- धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिंद्रिय निग्रहः ।
  धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकम् धर्मलक्षणम् ।।
- यावद्भ्रियेत्जठरं तावत्स्वत्वं हि देहिनाम् ।
  अधिकं योऽभिमन्येत सस्तेनोदण्डमर्हति ।।
- वेद स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।
  एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ।।
- नारिकेल समाकारा दृश्यंते हि सह्रज्जनाः ।
  अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहराः ।।
- घृतं न श्रूयते कर्णे दधि स्वप्ने न दृश्यते ।
  दुग्धस्य तर्हिका वार्ता तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ।।
- न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।
  न कर्मफलं संयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ।।
- नादत्ते कस्यचित्पापं न चैवं सुकृतं विभुः ।
  अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जंतवः ।।
- भाग्यं फलति सर्वत्र न बलं न च पौरुषम् ।
  समुद्र मथनाल्लेभे हरिर्लक्ष्मी हरोविषः ।।
- श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
  स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।।
- अबला यत्र प्रबला बालोराजा निरक्षरो मंत्री ।
  नहि नहि तत्र धनाशा जीविताशापि दुर्लभाभवति

- कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः ।
- उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।
  पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ।।
- परोक्षे कार्यहंतारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।
  वर्जयेत् तादृशंमित्रं विषकुंभं पयोमुखम् ।।
- लालयेः पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत् ।
  प्राप्ते तु षोडषे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत् ।।
- यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्या छन्दानुगामिनी ।
  विभवे यश्च संतुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैव हि ।।
- ऋणकर्ता पिता शत्रुर्माता च व्यभिचारिणी ।
  भार्या रूपवती शत्रुः पुत्र शत्रुरपण्डितः (मूर्ख पुत्र)।
- धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पंचमः ।
  पंच यत्र न विद्यन्ते न तत्र दिवसं वसेत् ।।
- लोकयात्रा (जीविका) भयं लज्जा दाभिष्यं (चतुरता) त्यागशीलता ।
  पंच यत्र न विद्यंते न कुर्यात् तत्र संगतिम् ।।
- अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दशवर्षाणि तिष्ठति ।
  प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं च विनश्यति ।। चा.नी.द
- प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमंति मध्याः ।
  विघ्नैः पुनःपुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्यतूत्तमजनाः न परित्यजन्ति ।। नीतिशतक 27
- विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
  विद्या भोगकरीयशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
  विद्या बंधुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
  विद्या राजसु पूजते नहि धनं विद्याविहीनः पशु।।20
- पापान्निवारयति योजयते हिताय गुह्यं च गूहति गुणान् प्रकटीकरोति ।
  आपद्गतं च न जहाति ददाति काल सन्मित्रलक्षमिदं प्रवदंति संतः ।। 73
- निन्दन्तु नीति निपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
  अद्यैव वा मरणमस्तु युगांतरे वा न्याय्यात् पथः प्रविचलंति पदं न धीराः ।। 84

- मातृवत परदाराणि परद्रव्याणि लोष्टवत् ।
  आत्मवत सर्वभूतानि परेषां न समाचरेत् ।।पंचतंत्र
- ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति ।
  भुंक्ते भोजयते चैव षडविधं प्रीतिलक्षणम् ।।
- यस्य बुद्धिर्बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ।
  वने सिंहो मदोन्मत्तः शशकेन निपातितः ।।
- त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ।
  ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।। ग.पु
- उद्योगः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
  षडविधो यस्य उत्साहस्तस्य देवोऽपि न शंकते ।।
- सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रियंवदा ।
  सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता
- दुष्टा भार्या षठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः ।
  ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः ।।
- सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
  देवाभागं यथापूर्वे संजानाना उपासते ।। हे श्रेष्ठ वीर मनुष्यो ! तुम सब संगठित होकर एक साथ मिलकर प्रगति करो, उन्नति की ओर बढ़ो । राग–द्वेष तथा वैर–भाव आदि से रहित होकर प्रेमपूर्वक संवाद करो ।
- उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मी
  दैंवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति ।
- श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
  आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।।
- पूजनीया महाभागा : पुण्याश्च गृहदीप्तयः ।
  स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्ष्या विशेषतः ।।
- वित्तातुराणां न पितां न बंधुः कामातुराणां न भयं न लज्जा ।
  विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा क्षुधातुराणां न रुचि न वेला।।
- अनन्याश्चिंतयंतो मां ये जनाः पर्युपासते ।
  तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।

- अयं निजः परोवेत्ति गणनां लघुचेतसाम् ।
  उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम् ।।
- अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ।
  गच्छन पिपीलिकायाति योजनानां शतैरपि ।। बिना परिश्रम शक्तिमान भी कुछ नहीं कर सकता
- शीलं हि सर्वनरस्य भूषणम् ।
- बुभुक्षितं किं न करोति पापम् ।
- शरीरमाद्यम् खलु धर्म साधनम् ।
- आचारहीनं न पुनंति वेदाः ।
- सुलभा रम्यतालोके दुर्लभो हि गुणार्जनम् ।
- महाजनो येन गतः स पंथाः ।
- आत्मज्ञानं परम ज्ञानं
- ज्ञानमेव परमोधर्मः ।
- मा ब्रूहि दीनं वचः ।
- मानो हि महतां धनम् ।
- वीरभोग्या वसुंधरा ।
- वचने का दरिद्रता ।
- नास्ति क्रोधसमो रिपुः ।
- शत्रोरपि गुणावाच्याः ।
- आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जा सुखी भवेत् ।
- कः परः प्रियवादिनाम् ।
- परोपकाराय सतां विभूतयः ।
- उद्यमेन हि सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः ।
  न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखेमृगाः ।।
- यत्ने कृते यदि न सिध्यंति कोऽत्र दोषः ।
- भोगो भूषयते धनम् ।

- संपूर्ण कुंभो न करोति शब्दम् ।
- संतोष एव पुरुषस्य परमनिधानम् ।
- यस्तु क्रियावान पुरुषः स एव ।
- उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
  आत्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मनः ।।

10

English Quotations

-
- Simple living and high thinking.
- It is dangerous to be tooo good.
- Every man has his own mind.
- Sweet are the uses of adversity. विपत्ति के परिणाम मधुर होते हैं ।
- Studies surve for delight, for ornament and for ability. अध्ययन से प्रसन्नता, ज्ञान तथा योग्यता प्राप्त होती है ।
- It is no easy task to understand unfamiliar blood (नव प्रस्तुत आत्मा). I hate the reading idlers.(वक्त काटने के लिए किताबें पढ़ने वालों से मुझे घृणा है) नीत्शे
- Well begun is half done. Old age is second childhood. Misfortune never comes singly.
- Time and tide wait for none.
- Where there is a will, there is a way.
- Prevention is better than cure.
- As you sow, sow you reap.
- Travel teaches tradition.
- Barking dogs seldom bite.
- Hope is a good breakfast, but it is not supper.
- We should proceed known to unknown.
- Money can’t buy you happiness but it does bring you a more pleasant form of misery.

11

हिन्दी काव्य

साकेत (मैथिलीशरण गुप्त)–सार

- कामना को छोड़कर ही कर्म है ।
- प्रेमियों का गीत गीतातीत है, हार में जिसमें परस्पर जीत है ।
- जागरण है स्वप्न से अच्छा कहीं प्रेम में कुछ भी बुरा होता नहीं ।
- हो रहा है जो जहां सो हो रहा यदि वही हमने कहा तो क्या कहा?
  किन्तु होना चाहिए कब, क्या, कहां? व्यक्त करती है कला ही वह वहां ।
- सरलता भी ऐसी है ब्यर्थ समझ जो सके न अर्थानर्थ ।
- स्वामि सम्मुख सेवक या भृत्य आप ही अपराधी हैं नित्य ।
- ईश के इंगित के अनुसार हुआ करते हैं सब व्यापार ।
- भरत से सुत पर संदेह बुलाया तक न उन्हें जो गेह ।
- सत्य से ही स्थिर है संसार सत्य ही सब धर्मों का सार ।
- प्रिये, प्रत्यय रखता है प्रेम ।
- नहीं अधिकार अपना वीर खोते उचित उपदेष ही हैं भव्य होते ।
- बडों की बात है अविचारणीया मुकुट–मणि तुल्य शिरसा धारणीया ।
- उऋण होना कठिन है तात–ऋण से ।
- समझ लो दैव की इच्छा यही है करे जो कुछ कि वह होता नहीं है ।
- भले ही दैव का बल दैव जाने पुरुष जो है न क्यों पुरुषार्थ माने ?
- पतित क्या उन्नतों के भाव जानें? उन्हें वे आप ही में क्यों न साने ?
- तुम्हीं माता पिता हो और भ्राता तुम्हीं सर्वस्व हो मेरे विधाता ।
- अमंगल पूछना भी कष्टमय है न जाने क्या न हो अस्पष्ट भय है ।
- प्राप्य याचना वर्जित है आप भुजों से अर्जित है ।
- वीर न अपना देते हैं न वे और का लेते हैं ।
- त्याग प्राप्त का ही होता ।
- यदि अपना आत्मिक बल है जंगल में भी मंगल है ।

- मेरी यही महामति है पति ही पत्नी की गति है ।
- राम–भाव अभिषेक–समय जैसा रहा वन जाते भी सहज–सौम्य वैसा रहा ।
  वर्षा हो या ग्रीष्म, सिंधु रहता वही मर्यादा की सदा साक्षिणी है मही ।
- कर्म–हेतु ही कर्म कहीं हम कर सकें तो उनके फल हमें कहां से धर सकें ।
  कर्ता मानो जिसे तात भोक्ता वही बंध मुक्ति की एक मुक्ति जानो यही ।
- कोमल है बस प्रेम कठिन कर्तव्य है
  कौन दिव्य है कौन न जाने भव्य है ।
- अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला ।
- अत्र–तत्र उद्योग सर्व सुख सत्र है पर सुयोग–संयोग मुख्य सर्वत्र है ।
- ''माना आर्ये सभी भाग्य का भोग है, किन्तु भाग्य भी पूर्वकर्म का योग है ।
- जिन रत्नों पर बिके प्राण भी पण्य में वे कंकण हैं निपट नगण्य अरण्य में ।
- राम तुम्हारा वृत्त आप ही काव्य है कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है ।
- सीता ने अपना भाग लिया पर इसने वह भी त्याग दिया ।
- आशा अवलंबदायिका है ।
- मृत्यु? उसमें तो सहज ही मुक्ति भोग तू निज भावना की भुक्ति ।
- क्षत्रियों के चाप–कोटि–समक्ष लोक में है कौन दुर्गम लक्ष ।
- राज्य को यदि हम बना लें भोग तो बनेगा वह प्रजा का रोग ।
- राज्य में दायित्व का ही भार सब प्रजा का वह व्यवस्थागार ।
- विगत हों नर–पति रहे नर–मात्र और जो जिस कार्य के हों पात्र
  वे रहें उस पर समान नियुक्त सब जियें ज्यों एक ही कुलभुक्त ।
- तात, राज्य नहीं किसी का वित्त वह उन्हीं के सौख्य शान्ति निमित्त
  सब बलि देते हैं उसे जो पात्र नियत शासक लोक–सेवक मात्र ।
- मिल गया मेरा मुझे तू राम तू वही है, भिन्न केवल नाम।
  एक सुहृदय और एक सुगात्र एक सोने के बने दो पात्र ।
- सहन कर जीना कठिन है देवि, सहज मरना एक दिन है देवि ।
- अब उठो हे वत्स, धीरज धार, बैठते हैं वीर क्या थक–हार ?
- लो क्रमागत गोत्र–जीवन सत्य मरण है अवकाश जीवन कार्य ।

- सुकृतियों के जन्म में भव–भुक्ति और उनकी मृत्यु में शुभ–मुक्ति ।
- सत्य है स्वयं ही शिव राम सत्य सुंदर हैं ।
  सत्य काम सत्य है और राम नाम सत्य है ।
- करके अपना कर्तव्य रहो संतोषी
  फिर सफल हो कि तुम विफल न होगे दोषी ।
- गौरव क्या है जन–भार वहन करना ही
  सुख क्या है बढ़कर दुख सहन करना ही ।
- करते हैं जब उपकार किसी का हम कुछ
  होता है तब संतोष हमें क्या कम कुछ ?
- जल निष्फल था यदि तृषा न हममें होती
  है वही उगाता अन्न चुगाता मोती ।
  निज हेतु बरसता नहीं व्योम से पानी
  हम हो समष्टि के लिए व्यष्टि बलिदानी ।
- निज रक्षा का अधिकार रहे जन–जन को
  सबकी सुविधा का भार किंतु शासन को ।
  मैं आर्यों का आदर्श बताने आया
  जन–सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया ।
- संदेश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया
  इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया ।
- चर्चा भी अच्छी नहीं बुरी की मानो
  सांपों की बातें जहां वहीं वे जानो ।
- मानव मन दुर्बल और सहज चंचल है
  इस जगती तल में लोभ अतीव प्रबल है ।
  देवत्व कठिन दनुजत्व सुलभ है नर को
  नीचे से उठना सहज कहां ऊपर को ।
- है श्रद्धा पर ही श्राद्ध न आडंबर पर ।
- करने में निज कर्तव्य कुयश भी यश है ।
- भावुक जन से ही महत्कार्य होते है ज्ञानी संसार असार मान रोते हैं ।

- मत की स्वतंत्रता विशेषता आर्यों की
  निज मत के ही अनुसार किया कार्यों की ।
- शासन सब पर है इसे न कोई भूले
  शासक पर भी, वह भी न फूल कर ऊले ।
- प्रभु बोले शिक्षा वस्तु सदैव अधूरी
- है बड़ी दण्ड से दया अंत में न्यायी ।
- पर जिसमें संतोष तुम्हें हो
  मुझे उसी में है संतोष ।
  सर्ग 9. हम राज्य लिए मरते हैं
  सच्चा राज्य परंतु हमारे कर्षक ही करते हैं ।
  जिनके खेतों में है अन्न कौन अधिक उनसे संपन्न?
  पत्नी सहित विचरते हैं वे भव वैभव भरते हैं । हम राज्य लिए मरते हैं ।
  वे गोधन के धनी उदार उनको सुलभ सुधा की धार ।
  सहनशीलता के आगर वे श्रम सागर तरते हैं । हम राज्य लिए मरते हैं ।
  यदि वे करें उचित है गर्व बात–बात में उत्सव पर्व
  हम से प्रहरी–रक्षक जिनके वे किससे डरते हैं । हम राज्य लिए मरते हैं ।
  करके मीन मेख सब ओर किया करें बुध वाद कठोर ।
  शाखामयी बुद्धि तज कर वे मूल–धर्म धरते हैं । हम राज्य लिए मरते हैं ।
- दुखों का भी है एक अंत ।
- फूल और आंसू दोनों ही उठें हृदय की हूल में ।
- सुधा क्या क्षुधा जो न होती ।
  तुम्हारे हंसने में हैं फूल हमारे रोने में मोती ।
  काल की चाहे रुके न चाल
  मिलन से बड़ा विरह का काल
  वहां लय यहां प्रलय विकराल ।
  दृष्टि में दर्शनार्थ धोती ।
  तुम्हारे हंसने में हैं फूल हमारे रोने में मोती ।
- धन के पीछे जन जगती में उचित नहीं उत्पात ।

- प्रेम की ही जय जीवन में यही आता है इस मन में ।
- सुनो किंतु है लोभ संसार में इसी हेतु है क्षोभ संसार में ।
- सहज है समालोचना शुभे
  कठिन साधना किंतु तत्व की
  प्रथम चाहिए सिद्धि सत्व की
  सर्ग 10. सुख शान्ति रहे स्वदेश की
  यह सच्ची छबि क्षात्र वेष की ।
  कृषि–गो–द्विज–धर्म वृद्धि हो रिपु से रक्षित ऋद्धि हो ।
- द्विजता तक आततायिनी
  बध में है कब दोषदायिनी ?
- पति का सुख मुख्य मानियो
  सुख को भी सहनीय मानियो ।
  सर्ग 11. जीवन में सुख–दुख निरंतर आते जाते रहते हैं ।
  सुख तो सभी भोग लेते हैं दुख धीर ही सहते हैं ।
  मनुज दुग्ध से दनुज रुधिर से अमर सुधा से जीते हैं ।
  किंतु हलाहल भव–सागर का शिवशंकर ही पीते हैं ।
- ब्यथा भरी बातों में ही तो रहता है कुछ अर्थ–भरा
  तप में तपकर ही वर्षा में होती है उर्वरा धरा ।
- होता कुछ भी वहां कहां से
  जहां न होती माताएं ।
- नाथ बली हो कोई कितना यदि उसके भीतर है पाप ।
  तो गजभुक्त कपित्थ–तुल्य वह निष्फल होगा अपने आप ।
- क्या विलंब लगता है आते
  आपद को आशंका को ?
- स्वयं ब्रह्म ही मायामय है
  कितना–सा है जन का जीव ?
- भूल मित्र का दुख शत्रु–सा
  सुख भोगे वह कैसा मित्र ?

- बाधाओं के भीतर ही तो
  कार्य–सिद्धि करती है वास ।
- तात, देश की रक्षा का ही कहता हूं मैं उचित उपाय ।
  पर वह मेरा देश नहीं जो करे दूसरों पर अन्याय ।
  किसी एक सीमा में बंधकर रह सकते हैं क्या ये प्राण ?
  एक देश क्या अखिल विश्व का तात चाहता हूं मैं त्राण ।
  सर्ग 12. जो आकस्मिक वही अधिक आकर्षक होता ।
  यह साधारण बात काटता है जो बोता ।
- शंकाएं हैं जहां वहीं धीरों की मति है
  आशंकाएं जहां वहां वीरों की गति है ।
- किंतु विजय तो शरण, मरण में भी वीरों के चिर जीवन है कीर्ति–वरण में भी वीरों के ।
  भूल जयाजय और भूलकर जीना–मरना हमको निज कर्तव्य–मात्र है अपना करना ।
- यात्रा में उत्साह योग ही मुख्य शकुन है
  फल की चिंता नहीं धर्म की हमको धुन है ।
- निश्चय हमको उन्हें मारना है या मरना
  जब मरने से नहीं भला तब किससे डरना ।
- सावधान! वह अधम धान्य–सा धन मत छूना
  तुम्हें तुम्हारी मातृभूमि ही देगी दूना ।
- अरे, काल के लिए कौन पथ खुला नहीं है ?
  आता अपने आप अंत तो सभी कहीं है ।
- कर केवल कर्तव्य छोड़ दे चिंता फल की ।
- जीवन क्या है एक जूझना मात्र जनों का
  और मरण? वह नया जन्म है पुरातनों का ।
- मैं वन जाकर हंसा किंतु घर आकर रोया
  खोकर रोए सभी, भरत, मैं पाकर रोया ।
- तूने तो सहधर्मचारिणी के भी ऊपर
  धर्मस्थापन किया भाग्यशालिनि इस भू पर ।
- अरी, हृदय की प्रीति हृदय पर ही होती है।

12

भारत–भारती– मैथिलीशरण गुप्त

उन्नत रहा होगा, कभी जो हो रहा अवनत अभी
जो हो रहा उन्नत अभी , अवनत रहा होगा कभी।
हंसते प्रथम जो पद्म हैं तम पंक में फंसते नहीं
मुरझे पड़े रहते कुमुद जो अंत में हंसते वही।

उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखंड है।
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तंड है।
अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति कला
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन ही क्या भला।

हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।

इस दिव्य दर्शनशास्त्र में है कौन हमसे अग्रणी
यूनान, यूरुप, अरब आदिक हैं हमारे ही ऋणी।
पाए प्रथम जिनसे जगत ने दार्शनिक संवाद हैं
गौतम, कपिल, जैमिनि, पतंजलि, व्यास और कणाद हैं

जब याद आती है बड़ों के उन सपूतों की कथा
उनके सखा, संगी, विदूषक और दूतों की कथा।
तब निकल पड़ते हैं हृदय से वचन ऐसे दुख भरे
होवें न ऐसे पुत्र चाहे हो कुलक्षय हे हरे।

श्रीमान् शिक्षा दें उन्हें तो श्रीमती कहती वहीं–
''घेरो न लल्ला को हमारे, नौकरी करनी नहीं।''
शिक्षे! तुम्हारा नाश हो, तुम नौकरी के हित बनी

लो मूर्खते! जीती रहो, रक्षक तुम्हारे हैं धनी।

दाएं तथा बाएं सदा सहचर हमारे चार हैं–
अविचार, अंधाचार हैं, व्यभिचार, अत्याचार हैं।

वह आधुनिक शिक्षा किसी विधि प्राप्त भी कुछ कर सको
तो लाभ क्या, बस क्लर्क बनकर पेट अपना भर सको।
लिखते रहो जो सिर झुका, सुन अफसरों की गालियां
तो दे सकेंगी रात को दो रोटियां घरवालियां।

''बारह बरस दिल्ली रहे पर भाड़ ही झोंका किए''

दुर्भाग्य से अब एक तो वह ब्रह्मचर्याश्रम नहीं।
तिस पर परिश्रम ब्यर्थ यह पड़ता हमें कुछ कम नहीं
फिर शीघ्र ही चश्मा हमारे चक्षु चाहें क्यों नहीं?
हम रुग्ण होकर आमरण दुख से कराहें क्यों नहीं।

है ब्यर्थ वह शिक्षा कि जिससे देश की उन्नति न हो
जापान के विद्यार्थियों की सूक्ति है कैसी अहो।
''साहब! हमें यूरोपियन हिस्ट्री न अब दिखलाइए
बेलून की रचना हमें करके कृपा सिखलाइए।''

मृत हो कि जीवित जाति का साहित्य जीवन चित्र है
वह भ्रष्ट है तो सिद्ध फिर वह जाति भी अपवित्र है।

कहना तथा करना परस्पर एक–सा जिनका नहीं
उनके कथन का भी भला कुछ मूल्य होता है कहीं।

गुड़ भी बनेगा नमक यदि पड़ जाए सांभर झील में।

कुछ 'शीघ्र–बोध' रटा कि फिर वे गणक–पुंगव बन गए
पंचांग पकड़ा और बस सर्वज्ञता में सन गए।
संकल्प तक भी शुद्ध वे साद्यंत कह सकते नहीं
बेपखरवाए पाद–पंकज किंतु रह सकते नहीं।

जिन ब्राह्मणों ने लोभ को संतत तिरस्कृत था किया
देखो, उन्हीं के वंशजों को आज उसने ग्रस लिया।
अब आप उनकी दक्षिणा पहले नियत कर दीजिए
फिर निंद्य से भी निंद्य उनसे काम करवा लीजिए।

आचार उनका आज केवल रह गया 'असनान' में
जप, तप तथा वह तेज अब है शेष मात्र 'विधान' में।
वे भ्रष्ट यद्यपि हो रहे हैं डूबकर अज्ञान में
जाते मरे हैं किंतु फिर भी वंश के अभिमान में।

बी ए गृहस्वामिनी विदित हैं किंतु क्या हैं स्वामिनी
कैसे कहें, हां! हैं अशिक्षारूपिणी वे भामिनी।
अत्युक्ति क्या, दिन–रात का सा भेद जो इनको कहें
दांपत्य भाव भला हमारे धाम में कैसे रहे।

है ध्यान पति से भी अधिक आभूषणों का अब इन्हें
तब तुष्ट हों तो हों कि मढ़ दो मंडनों से जब उन्हें।
है यह उचित ही, क्योंकि जब अज्ञान से हैं दूषिता
क्या भला फिर आभूषणों से भी न हों वे भूषिता।

बस भाग्य की ही भावना में रह गया उद्योग है
आजीविका है नौकरी में, इंद्रियों में भोग है।
परतंत्रता में अभयता, भय राजदंड विधान में

व्यवसाय है बैरिस्टरी या डाक्टरी दूकान में।

है चाटुकारी में चतुरता, कुशलता, छल–छद्म में,
पांडित्य पर निंदा विषय में, शूरता है सद्म में।
बस मौन में गंभीरता है, है बड़प्पन वेश में
जो बात और कहीं नहीं, वह है हमारे देश में।

स्वाधीनता निज धर्म बंधन तोड़ देने में रही
आस्वाद आमिष में, सुरा में सरसता जाती कही।
संगीत विषयालाप में, परदुःख में परिहास है
अश्लील वर्णन मात्र में ही अब कवित्व निवास है।

अपने सहायक आप हो, होगा सहायक प्रभु तभी
बस चाहने से ही किसी को सुख नहीं मिलता कभी।
कर, पद, हृदय, दृग, कर्ण तुमको ईश ने सबकुछ दिया
है कौन ऐसा काम जो तुमसे न जा सकता किया।

सोचो कि जीने से हमारे लाभ होता है किसे
है कौन, मरने से हमारे हानि पहुंचेगी जिसे?
होकर न होने के बराबर हो रहे हैं हम यहां
दुर्लभ मनुज जीवन वृथा ही खो रहे हैं हम यहां।

प्राचीन बातें ही भली हैं यह विचार अलीक है
जैसी अवस्था हो जहां वैसी व्यवस्था ठीक है।

हमको समय को देखकर ही नित्य चलना चाहिए
बदले हवा जब जिस तरह हमको बदलना चाहिए।
विपरीत विश्व–प्रवाह के निज नाव जा सकती नहीं
अब पूर्व की बातें सभी प्रस्ताव पा सकती नहीं।

जो मातृसेवक हो वही सुत श्रेष्ठ जाता है गिना
कोई बड़ा बनता नहीं लघु और नम्र हुए बिना।

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।
क्यों आज 'रामचरित्रमानस' सब कहीं सम्मान्य है?
सत्काव्य–युत उसमें परम आदर्श का प्राधान्य है।

13

पांचाली– रांगेय राघव

सब कुछ के स्वामी हैं यह तो सच है,
पर सब कुछ के हैं नियम बने जगती में
वे नियम परस्पर विनिमय के संबल हैं
स्वामित्व सदा है स्वतंत्रता का नियमन,
उसके हित ही हैं मर्यादाएं निर्मित
किसको लांघें क्या करें कहां जाएं हम!
हम अतल सिंधु हैं माना यह तो लेकिन
हममें कितना है क्षार तनिक यह देखो।
जिन दोषों को हम गिना रहे औरों में
क्या वही नहीं हैं हममें यह बतलाओ।

ओ मन तुझमें कितनी होती विह्वलता कितनों की शांति बिखेरा करता निष्ठुर।
कितनों में भरता अहंकार मदमाता कितनों को तू कर देता कैसा कातर।

जीवन क्या है वह प्रतिक्षण है लड़ना ही
अत्याचारों से संघर्षण ही जीवन।

क्या है नारी का मोल, जननि का गौरव
यदि धर्म पास है तो क्या वह अधिकारी
हमारे उनको अधिकार न उसका जिन पर
यदि स्त्री हो सकती किसी दास की संपद
तो दास नहीं है क्या अधिकारी जग में?

नारी का क्या सम्मान कहो जीवन में?
जो ब्रह्मा सी है सृष्टि कर रही जग में
वह पराधीन क्यों है बलि पशु सी दीना?

पीछे की यादें सब सोने की लगती
आगे की बेला हीरों सी बहलाती
जिसमें से यह दोनों हैं निकला करते
उस वर्तमान में मिट्टी रह जाती।

मैं हूं, तू है, दोनों हैं तब ही मैं तू
मेरा मैं पन है वहीं जहां से तू है।
इस लोक समादृत जीवन में होते हैं–
प्रतिपक्ष पक्ष से सदा निरंतर अनुगत।
इन दोनों में अन्याय वहीं उठता है
जब जीवित रहने के इस संघर्षण में
अपनी ही सोचा करता मानव जग में,
सारी स्वतंत्रता आश्रित निर्भरता है
अन्योन्याश्रित हैं, नहीं स्वावलंबी हैं।
जब हम आशा करते हैं कुछ अपने हित
चाहते दूसरा देवे हमको अपना
जब अपना देते हुए भला क्यों हिचके?

वे अच्छे हैं जो नहीं समझते कुछ भी
कर जाते हैं जो उनके हित में होता
उनका है ध्येय कि वे बस हंस लें गा लें
सोचते न उनके कारण रोते कितने।

धन से आता है धर्म, धर्म से बल है
बल से आता है धन जगती में निश्चय
इन तीनों का है ध्येय व्यक्ति का सुख ही
जिसमें जितना बल हो वह उतना भोगे।

सुख में दुख में जो नहीं संग है पति के
वह नारी लांछन है, कलंक है जग की।

है धर्म बदलता रहता इस जगती में
पर परिवर्तन का मूल लोक का हित है
यदि सबल स्वार्थ ऊपर रखते जाएंगे
तो नहीं सुलझता पंथ उलझता जाता है।

इस भरतखंड में तभी प्रलय आता है
जब ब्राह्मण या स्त्री होते हैं अपमानित।

ओ मर्यादा तूने क्यो बंधन बांधे
नारी को नर पर, क्यों विश्वास नहीं है?
तूने ही उसके कोमल उर को ऐसा
क्षतविक्षत है कर दिया क्रूर नियमों से।

तुमने पूछा था स्त्री का पति स्वामी है
यदि पति होता है दास, रहा क्या स्वामी?

14

स्वामी विवेकानन्द

- मनुष्य प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिए उत्पन्न हुआ है उसका अनुसरण करने के लिए नहीं।
- जब तक तुम स्वयं अपने में विश्वास नहीं करते, परमात्मा में तुम विश्वास नहीं कर सकते।
- अशुभ की जड़ इस भ्रम में है कि हम शरीर मात्र हैं, यदि कोई मौलिक या आदि पाप है तो वह यही है।
- ईश्वर की परिभाषा करना चर्वित–चर्वण है, क्योंकि एकमात्र परम अस्तित्व जिसे हम जानते हैं, वही है।
- धर्म वह वस्तु है, जिससे पशु मनुष्य तक और मनुष्य परमात्मा तक उठ सकता है।
- यह मानना कि मन ही सब कुछ है, विचार ही सब कुछ है केवल एक प्रकार का उच्चतर भौतिकवाद है।
- सत्य हजार ढंग से कहा जा सकता है और फिर भी हर ढंग सच हो सकता है।
- जो मनुष्य किसी भौतिक वस्तु से विचलित नहीं होता है उसने अमरता पा ली।
- ईश्वर मनुष्य बना, मनुष्य भी फिर से ईश्वर बनेगा।
- यदि मैं मिट्टी के एक ढेले को जान लूं तो सारी मिट्टी को जान लूंगा। इसी प्रकार जब तुम स्वयं को जान लोगे तो सब कुछ जान लोगे।
- अगर कुछ बुरा करना चाहो तो वह अपने से बड़ों के सामने करो।
- गुरू की कृपा से शिष्य बिना ग्रंथ पढ़े ही पंडित हो जाता है।
- हम हमेशा अपनी कमजोरी को शक्ति बताने की कोशिश करते हैं, अपनी भावुकता को प्रेम कहते हैं, अपनी कायरता को धैर्य बताते हैं।
- नास्तिक उदार हो सकता है, पर धार्मिक नहीं; परंतु धार्मिक मनुष्य को उदार होना ही चाहिए।
- मनुष्य पशुता, मनुष्यत्व और देवत्व का मिश्रण है।
- सत्य मिथ्या के साथ कभी मैत्री नहीं कर सकता।

- सुख आदमी के सामने आता है तो दुःख का मुकुट पहनकर, जो उसका स्वागत करता है उसे दुःख का भी स्वागत करना चाहिए।
- पश्चिम का आदर्श क्रियाशील रहना है, पूर्व का आदर्श सहन करना है। पूर्ण जीवन क्रियाशीलता और सहनशीलता का समन्वय है।
- व्यक्ति जितना अपने गुणों से महान एवं पूर्ण बनता है, उतना ही अपने दोषों से।
- केवल उन्हीं की उपासना करनी चाहिए, जो हमारे समान, किंतु हमसे महान हों।
- जो अपने आप में विश्वास नहीं करता, वही नास्तिक है।
- सफलता प्राप्त करने के लिए जबरदस्त सतत प्रयत्न और जबरदस्त इच्छा रखो
- असफलता की चिन्ता मत करो वे बिल्कुल स्वाभाविक हैं, असफलताएं जीवन की सौन्दर्य हैं। उनके बिना जीवन क्या होता? जीवन में यदि संघर्ष ही न रहे तो जीवित रहना ब्यर्थ है। यदि तुम हजार बार भी असफल होते हो तो एक बार फिर प्रयत्न करो।
- यदि मानव जाति के आज तक के इतिहास में महान पुरुषों और स्त्रियों के जीवन में सबसे बड़ी प्रवर्तक शक्ति कोई है तो वह आत्मविश्वास ही है।
- इच्छा शक्ति ही सबसे अधिक बलवती है। इसके सामने हर वस्तु झुक सकती है क्योंकि वह ईश्वर और स्वयं ईश्वर से ही आती है।
- यदि आवश्यक ही हो तो निर्दयी भी बनो, पर उच्च स्तर पर।
- निःस्वार्थता ही धर्म की कसौटी है।
- अपने लिए कुछ मत चाहो, दूसरों के लिए ही सब कुछ करो; यही है ईश्वर में तुम्हारे जीवन की स्थिति, गति तथा प्राप्ति।
- ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना श्रेयस्कर है।
- ईसा – मांगो वह तुम्हें मिलेगा, ढूंढ़ो तुम उसे पाओगे, खटखटाओ और वह तुम्हारे लिए खुल जाएगा।
- चित्तशुद्धि और मौन से ही शब्द में शक्ति आती है।
- संसार में अनेक धर्म हैं, यद्यपि उनकी उपासना के नियम भिन्न–भिन्न हैं, तथापि वे वास्तव में एक ही हैं।
- अभावात्मक शिक्षा मृत्यु से भी बुरी है।

- भारत का पतन इसलिए नहीं हुआ कि हमारे प्राचीन नियम और रीति–रिवाज खराब थे, वरन् इसलिए कि उनका जो उचित लक्ष्य है, उस पर पहुंचने के लिए जिस अनुकूल वातावरण और साधनों की आवश्यकता थी, उनका निर्माण नहीं होने दिया गया।
- यदि आप केवल पांच ही परखे हुए विचार आत्मसात कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हैं तो आप पूरे ग्रंथालय को कंठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हैं।
- उपहास, विरोध और फिर स्वीकृति – प्रत्येक कार्य को इन तीन अवस्थाओं में से गुजरना पड़ता है। जो व्यक्ति अपने समय से ओगे की बात सोचता है, उसके संबंध में लोगों की गलत धारणा होना निश्चित है।
- जीवन संघर्ष तथा निराशाओं का अविराम प्रवाह है।
- कोई भी काम छोटा नहीं है, बुद्धिमान मनुष्य प्रत्येक कार्य को अपनी रुचि में परिणत कर सकता है।
- यदि स्वर्ग का कोई रास्ता है तो वह नरक होकर जाता है।
- धन संपत्ति के साथ दुःख भी आता है।
- यदि इच्छाएं घोड़ों के रूप में होती तो केवल मूर्ख लोग ही उन पर सवारी करते।
- इच्छाओं को जितना भोगो उतनी ही बढ़ती हैं।
- जब हम सभी के शुभचिन्तक और हितैषी ही होंगे तो हमें किसी के प्रति घृणा क्यों होगी और हमें कोई चिन्ता क्यों होगी?
- तुम्हारी योग्यता की कसौटी यह नहीं कि तुम क्या–क्या कर सकते हो बल्कि यह है कि तुमने क्या किया?

15

चित्रलेखा–भगवती चरण वर्मा

- गुप्त वे बातें रखी जाती हैं, जो अनुचित होती हैं। गुप्त रखना भय का द्योतक है और भयभीत होना मनुष्य के अपराधी होने का द्योतक है।
- संसार में पाप कुछ भी नहीं है। वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनःप्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है। प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर अभिनय करने आता है। अपनी मनःप्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दुहराता है – यही मनुष्य का जीवन है। .....प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है । केवल व्यक्तियों के सुख के केन्द्र भिन्न होते हैं .....कोई भी व्यक्ति संसार में अपनी इच्छानुसार वह काम न करेगा, जिसमें दुख मिले – यही मनुष्य की मनःप्रवृत्ति है और उसके दृष्टिकोण की विषमता है।
- .....हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं, जो हमें करना पड़ता है।

16

स्वेट मार्डन

- किसी भी व्यक्ति की उन्नति के पीछे उसका सबसे बड़ा रहस्य है, उस व्यक्ति का आत्मनियंत्रण। – गेटे
- वाद–विवाद में शांति से काम लें। आवेश, तीव्रता के कारण छोटी सी भी बात अवगुण बन जाती है। तब सत्य भी अनैतिक बन जाता है। – जार्ज हर्बट
- वास्तव में जो कुछ भी हम सीखते हैं, वह पाठशाला में नहीं, जीवन की पाठशाला में सीखते हैं।
- इस भौतिक जगत में प्रत्येक वस्तु अपने मूलरूप में हमेशा छोटी होती है।
- क्रियात्मक जीवन से हमारी संकल्प शक्ति बढ़ती है।
- सूर्योदय के पूर्व उठें।
- बीते कल की त्रुटियों पर ध्यान न दें।
- शयन के समय किसी विशिष्ट और महत्वपूर्ण कार्य के बारे में तय करें।
- व्यवस्था, नियम और उद्देश्य इन तीनों बातों की उपेक्षा कर जो अपना कार्य करता है, वह अवश्य ही सफलता से वंचित रहता है।
- छोटे–छोटे कार्यों को निःस्वार्थ भाव से बुद्धिमत्ता पूर्वक और सम्यक् रीति से करने से महान सुख के साथ ही महान शक्ति भी प्राप्त होती है।
- शक्ति और विवेक प्रत्येक कार्य के लिए आवश्यक है, जो प्रत्येक में अवश्यमेव होता है।
- मनुष्य का चरित्र क्षण–क्षण बदलता रहता है।
- जो व्यक्ति अपने छोटे से छोटे दोष को भयंकर अपराध समझता है, वह महान बन जाता है। वह अपने प्रत्येक विचार और कार्य का दूरगामी प्रभाव देखता है।
- सत्यनिष्ठ और कर्तव्यनिष्ठ बनते जाने से विवेक जाग्रत होता है।
- कठिनाई वास्तव में हमारी मनोदशा में निहित है, वह मायाजाल या भ्रमजाल है। – अनातोले डेविड

- कोई व्यक्ति किन्हीं भी परिस्थितियों के दायरे में क्यों न घिरा हो, वह अपने आप को उससे मुक्त कर सकता है। – कार्लाइल
- संकट आने पर खामोशी के साथ उसे सहन करें क्योंकि वह सदैव क्षणिक होता है।
- इस संसार में कोई मनुष्य पूर्णतः निरोगी नहीं। – डॉ बर्न
- गुण की प्राप्ति अवगुण के अंत से होती है।
- यदि दूसरे का व्यवहार आपको चुभता है और कष्टकर लगता है तो बदले में किया गया आपका दुर्व्यवहार भी उसे उतना ही कष्टकर लगेगा।
- बिना किसी स्वार्थ और दुर्भावना के आप ऐसी सांसारिक वस्तुओं पर अपना दावा छोड़ दें, जिन्हें प्राप्त करने के लिए दूसरे लोग भी लालायित हैं। ऐसा होने पर आपको उत्तम शांति और महान आध्यात्मिक संबल प्राप्त होगा।
- हमारे प्रतिद्वंद्वी ही वास्तविक सहायक है। हमारा जो संघर्ष कठिनाइयों के साथ होता है, वह हमें हमारे उद्देश्य से परिचित कराता है।
- पुण्यात्मा पहले कभी पापी था और पापी किसी समय आगे चलकर पुण्यात्मा होगा। पापी प्रारंभिक अवस्था है और पुण्यात्मा उत्तर अवस्था।
- हीरा मिट्टी में पड़ा हुआ भी हीरा ही है, मिट्टी मिट्टी ही है, चाहे वह आकाश में उड़कर पहुंच जाए।
- छिपी हुई अच्छाई और छिपी हुई बुराई में बहुत कम अंतर होता है।
- व्यक्ति जितना ही अधिक नम्र और दयालु होता जाता है, वह उतना ही ज़्यादा विवेकशील भी।
- दूसरों को प्रेम से वंचित रखना अपने आपको प्रेम में आनंद से वंचित रखना है।
- वही व्यक्ति पापी को घृणित और नीच बनाता है, जो स्वयं उसी वर्ग का होता है।
- हमारी वास्तविकता हमारे साथ सदा छाया की भांति लगी रहती है।
- दूसरों में दोष इसीलिए दिखाई देते हैं, क्योंकि हम उसके उचित और अनुचित के बारे में अपने–अपने मानदंड बना लेते हैं और इच्छा करते हैं कि सभी हमारे मानदंड के अनुरूप चलें।

- निरंतर लिखते रहने से व्यक्ति में चिंतन की महानता और लेखन कला का ऐसा कौशल आ जाता है, जो मनोरंजन हेतु लिखने वालों को बेहूदा कोशिशों पर भी नहीं आता।
- प्रकृति कभी गतिहीन नहीं रहती।
- 'पढ़ो या भूखों मरो'' लार्ड एलनबरो
- प्रत्येक वस्तु का अपना उद्देश्य है।
- सफलता और असफलता में इतना सूक्ष्म अंतर होता है कि कई बार मनुष्य को ज्ञात नहीं होता है कि कब उसने इन दोनों की रेखा को स्पर्श किया।
- गंदले कीचड़ में भी कमल की भांति खिल उठना सच्चा मानवीय गुण है।
- काम चाहे कितना ही आवश्यक क्यों न हो, उसमें असफल न रहूं।
- मानव सृष्टि एक ही है और जो एक व्यक्ति का सुख है वह सबका सुख है।
- जो व्यक्ति सदाचारी नहीं, वह कभी प्रसन्न नहीं रह सकता। – एपीक्यूरस
- शक्ति केवल अच्छाई में है, उसी से स्वास्थ्य और उसी से दृढ़ता आती है।
- अपवित्र विचारों से बचे रहने का एक ही उपाय है– निरंतर कार्य करना।
- मनुष्य के अभिमान पर की गई चोट, शरीर की चोट से अधिक कष्टदायी होती है।
- खाली समय में अपने सुख–दुःख पर विचार करना ही हमारे दुखी होने का कारण है; इसलिए ऐसी बातें न सोचिए। यदि करने–धरने को और कुछ न हो तो मक्खियां ही मारा कीजिए, पर बेकार न बैठिए। ऐसा करने से आपका रक्त संचालन ठीक रहेगा। आपके मस्तिष्क की चेतना जाग उठेगी और उसकी लहर शीघ्र ही चिंता को दूर कर देगी। – जार्ज बर्नार्ड शा
- एक आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनेक आवश्यकताएं उत्पन्न हो जाती हैं और चिंताएं बढ़ती हैं।
- हमें यह न भूलना चाहिए कि वह वह है और मैं, मैं हूं। वह मैं नहीं बन सकता और जो मैं हूं, वह नहीं बन सकता।
- कृतज्ञता का गुण बड़े परिणाम के बाद विकसित होता है।
- मैं ऐसे व्यक्तियों से मिलूंगा जो बातूनी हैं, जो स्वार्थी, अहंवादी तथा कृतघ्न हैं किंतु उनसे मुझे मिलकर कोई आश्चर्य तथा दुःख नहीं होगा क्योंकि मैं कभी ऐसे संसार की कल्पना नहीं करता, जिसमें ऐसे व्यक्ति न हों। – मार्कस ओरेलियस

- आदर्श पुरुष वह है जिसको दूसरों का उपकार करने में सुख मिले और जो दूसरों के उपकारों को ग्रहण करने में लज्जा अनुभव करे, क्योंकि दूसरों पर कृपा करना महानता का द्योतक है किंतु दूसरों की कृपा प्राप्त करना हीनता का परिचायक है। – अरस्तू
- मानवता को प्राप्त करने के लिए सारा नियम एक ही है। केवल अपने दृष्टिकोण को ठीक मार्ग पर लाने की आवश्यकता है।
- घर का कुल इंतज़ाम स्त्रियों के ही हाथ में होना चाहिए। कोई पुरुष तब तक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता; जब तक उसकी स्त्री उसे सहायता न दे।
- जो मनुष्य छोटे–बड़े सभी से नम्रता और सभ्यता का व्यवहार करता है, वह सबको वश में कर लेता है और सभी लोग उसका आदर–सम्मान करते हैं।
- प्रकृति के नियमों में छोटे–से–छोटे अपराध के लिए भी क्षमा नहीं है।
- कोई वस्तु अच्छी या बुरी नहीं, विचार ही उसे वैसी बना देते हैं। – शैक्सपियर
- यदि आप चाहते हैं कि आपकी संतान सिगरेट पीना छोड़ दे तो उसे उपदेश मत दीजिए। जो कुछ आप चाहते हैं, उसकी बात मत चलाइए; पर उसे बतलाइए कि सिगरेट पीने से तुम कहीं फुटबाल टीम में खेलने या सौ गज की दौड़ जीतने में असमर्थ न हो जाओ।
- लोगों को प्रभावित करने की एकमात्र रीति यह है कि जो कुछ दूसरा व्यक्ति चाहता है, उसी के अनुसार बातचीत की जाए।
- हम जिस वस्तु की मूलतः कामना करते हैं, उसी से कर्म की उत्पत्ति होती है।
- अगर मनुष्य सपने न देखे, इच्छाएं न रखे तो वह पागल हो जाए। उनके जीवन का संतुलन बिगड़ जाएगा। यही उसे ज़िंदगी खींचने और संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।
- मायामोह और संसार की असारता या नश्वरता की दुहाई देना मनुष्य के साथ विश्वासघात करना है और उसे कर्तव्य से च्युत कर देना है। अतएव अपनी इच्छाएं और सपने पूरा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। मानव जीवन की यही सार्थकता है।
- मनुष्य में कोई न कोई अदृश्य शक्ति छिपी है। अगर वह शक्ति जाग्रत और सक्रिय हो उठती है तो मनुष्य अपनी प्रत्येक इच्छाएं और सपने पूरा कर सकता है। यह शक्ति ईश्वर या भाग्य नहीं है। मनोविज्ञान में इसे विश्वास, आत्मविश्वास कहा गया है। इसे मनुष्य की परम शक्ति माना गया है।

- जरूरत से ज़्यादा बुद्धिमानी से भी काम लेना खतरनाक है, तब काम में सफलता नहीं; सनक या झक्कीपन आ जाता है।
- शब्द हमारे विचारों के वाहन हैं।
- हम चाहें तो अपने आप से वार्तालाप कर सकते हैं। मन बातों को स्वीकार कर जयत्व देता है। आवश्यकता इस बात की है कि मन की बातों को मौन रूप में ज़रूर सोचा करें। सस्वर बात करने से मन पर उसका बुरा असर पड़ता है और निराशा और असफलता के क्षणों में बहुत से लोग मन में सस्वर बातें कर असाधारण सफलता पा गए।
- अगर कोई तुम्हारे साथ न चले तो भी तुम अपने रास्ते पर अकेले बढ़ते चले जाओ।
- आत्मविश्वास से कहे गए शब्दों पर लोग शंका नहीं कर पाते।
- आप अपना दुखी चेहरा दिखलाकर वास्तव में दूसरों के उपहास का माध्यम बनते हैं। अधिक से अधिक यही होगा कि लोग आपके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करके यही कहेंगे कि बेचारा बड़ा दुखी है।
- कुछ लोग जीवन भर कंगाल बने रहने; दुख उठाने के लिए ही पैदा होते हैं। ऐसे लोग ने केवल अपना जीवन बर्बाद करते हैं, वरन् अपने आस–पास के लोगों को अपना दुखड़ा सुना–सुनाकर, अपनी हालत दिखला–दिखला कर उदासीनता; निराशा उत्पन्न करते हैं। – कार्लाइल
- उदासीनता, खिन्नता जैसे मनोविकारों के कारण मनुष्य की निर्णय शक्ति क्षीण हो जाती है। वह सटीक और कर्मठ निर्णय नहीं ले पाता है। उसकी बुद्धि साधारण सी बातों से चकरा जाती है।
- हम अपनी वास्तविक शक्ति को भूल बैठे हैं।
- प्रत्येक मनुष्य के अंदर एक व्यक्तित्व और छिपा रहता है। यह अत्यंत पराक्रमी और तमाम इच्छाओं को साकार करने वाला तथा सफलताओं को खींचने वाला होता है। जब हमारा अंतःकरण प्रेरणा ग्रहण कर लेता है, उसी क्षण हमें यह स्पष्ट रूप में अनुभूति होने लगती है कि हमारे भीतर एक गौरवमय व्यक्तित्व छिपा है।
- हमारे शरीर का अणु–अणु अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व भी रखता है। यही कारण है कि शोक या हर्ष का प्रभाव शरीर के प्रत्येक अंग पर पड़ता है।
- अंधों का मस्तिष्क उनकी अंगुलियों के अग्रभागों में माना गया है।

- हत्या करते समय अगर हत्यारे का रक्त थोड़ा सा निकाल लिया जाए और दूसरे मनुष्य के शरीर में इंजेक्शन द्वारा छोड़ दिया जाए तो वह अच्छा–भला मनुष्य भी यकायक अपने सामने वाले की हत्या कर डालेगा। मनुष्य के रक्त में मनोभावों के कारण नाना प्रकार के जीवाणु आ जाते हैं।
- विचार या कार्यशक्ति केवल मस्तिष्क तक ही सीमित नहीं है, वरन् शरीर के अणु–अणु या अंग–अंग में व्याप्त है। मनुष्य के शरीर का प्रत्येक अंग अपनी–अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपनी रक्षा कर सकने में समर्थ है।
- यह एक ध्रुव सत्य है कि किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए उसी का विचार करते रहना नितांत आवश्यक है।
- मानव परिस्थितियों के अधीन नहीं, बल्कि परिस्थितियां मानवाधीन हैं। – डिजरायली
- प्रत्येक वस्तु एक दूसरे को आकर्षित करती हैं। परस्पर आकर्षण पर ही मनुष्य की संपूर्ण क्रियाएं चल रही हैं। प्रकृति भी इसी आधार पर क्रियारत है।
- प्रत्येक घड़ी शुभ है, जब जागो तभी सबेरा, नेक कार्य में विलंब कैसा।
- अमेरिकी न्यायाधीश मिल्टन सेंतीस साल तक निरक्षर थे।
- मनुष्य का अपने को पहचानना सबसे कठिन कार्य है। कोई मनुष्य हमेशा अपने बाहरी रूप के छलावे में रहता है। वास्तव में जिस समय मनुष्य अपने को पहचान लेता है, उस समय वह सही अर्थों में मनुष्य हो जाता है।
- असुंदर के कारण ही सुंदर का मूल्य है।
- आपकी वर्तमान शक्ति से सैकड़ों गुना शक्ति आपके अंतःकरण में विद्यमान है।
- सर्वोत्तम गुण वह है जो आपको आत्मपरिचय कराने में आपका पथ–प्रदर्शन कर सके।
- हम अपने वर्तमान में कभी भी सुखी, संतुष्ट और आनंदित नहीं होते, हमारे जीवन के दुख का कारण यही है।
- प्रसन्नता मनुष्य की परछाईं के समान है। इसके पीछे भागो तो यह आगे–आगे दौड़ती दिखेगी और अगर मुंह मोड़ लो तो यह पीछे की ओर भागने लगती है। कामनाओं की पूर्ति से कभी आत्मिक सुख नहीं मिलता, सुख तो आत्मा के संतोष में है।

- खिलाड़ी के लिए मुस्कान अतिरिक्त शक्ति का काम करती है।
- अनावश्यक गंभीरता मनुष्य के मन की शक्तियों को टुकड़े–टुकड़े कर डालती है। मनुष्य की कार्यकुशलता और योग्यता भस्म हो जाती है। अतएव प्रसन्न रहना आवश्यक है।
- मनुष्य का वर्तमान उसके भूत में किए गए कार्यों का फल होता है। वर्तमान के कार्यों पर उसका भविष्य निर्भर करता है। अपने भूतकालीन समय के कारण वर्तमान दशा होती है। आप भविष्य उज्ज्वल चाहते हैं तो वर्तमान के कार्य उसी के अनुरूप करिए।
- आज आप क्या हैं, इसका महत्व नहीं है। महत्व इस बात का है कि आप भविष्य में क्या बन सकते हैं।
- दुनिया खुद नहीं बदलती, उसे बदलना पड़ता है।
- अपने मन में कभी भी अनिश्चय न रखें। अनिश्चय सदा शक्तियों को एक नहीं होने देता है; जबकि निश्चय मनुष्य का सोया विश्वास जगा देता है।
- रण में बंदूक नहीं लड़ती, उसे थामने वाले सैनिक का हृदय लड़ता है और हृदय भी नहीं, उस हृदय का विश्वास लड़ता है।
- चेहरा विचारों का दर्पण होता है।
- गौरवशाली दार्शनिकों, विचारकों एव लेखकों को कभी भी प्रमाणों से अपनी बात को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, उनका आत्मविश्वास ही उनकी सबसे बड़ी दलील होती है।
- आप जो कुछ करते हैं, उसकी सत्यता में आपको विश्वास होना चाहिए।
- जब देवदूत मानव को पूर्ण संतोष का वरदान देने लगा तो भगवान ने उसे रोक दिया और कहा ''नही यदि तुम मनुष्य को पूर्ण संतोष का वरदान दे दोगे ंतो उसकी खोजपूर्ण जीवन की सारी खुशियां ही समाप्त हो जाएंगी।
- प्रत्येक बालक में महान व्यक्ति बनने के सभी गुण बीज रूप में विद्यमान रहते हैं। आवश्यकता है अनुकूल परिस्थिति की, जिसके द्वारा वह अपने महान रूप को प्रकट कर सके।
- संभव है जिसकी आप सफलता की बातें करते हैं। उनसे भी अधिक महान बनने की सभी योग्यताएं आपमें विद्यमान हों। अभी तक आपने अपने को पहचाना ही कहां है।

- मनुष्य का सच्चा साथी उसकी योग्यता, साहस और उसके अंदर की शक्तियां हैं जो हमेशा संघर्ष करने में हर स्थिति में उसका साथ देती हैं। जब हम स्वयं कठिनाइयों और संकटों से जूझते सफलता हासिल करते हैं, तभी सही मायने में हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है।
- जीवन का अमूल्य सिद्धांत है कि यदि आप अपनी सफलता पर संदेह करने लगेंगे तो कभी पूर्ण सफलता पर संदेह करने लगेंगे तो कभी पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर सकेंगे।
- संसार उनके लिए रास्ता छोड़ देता है जो अपने रास्ते पर दृढ़ रहते हैं।
- विश्वास सोचता नहीं, न ही अनुमान लगाता है– विश्वास तो बस जानता है।
- मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा आश्चर्य है– उसका ब्यर्थ में चिंता करना और उस चिंता को जीवन में महत्व देना।

17

रजनीश–राज

भारत, गांधी और मैं

- जिन पर हम विचार नहीं करते, उनका हमारे जीवन पर कोई संस्पर्श, हमारे जीवन का परिवर्तन करने वाला कोई भी प्रभाव कभी नहीं पड़ता है। पूजा से नहीं हम विचार से रूपांतरित नहीं होते हैं।
- ग़रीब आदमी जब दरिद्रता से संतोष कर लेता है तो वह संतोष सिर्फ दुख को छिपाने का और सांत्वना का एक उपाय होता है।
- दरिद्र आदमी कभी भौतिकवाद से ऊपर नहीं उठ सकता। समृद्ध आदमी ही भौतिकवाद से ऊपर उठ सकता है, क्योंकि समृद्धि को पाकर उसे पता चलता है कि कुछ भी नहीं है समृद्धि में।
- गांधी जैसे आदमी चाहिए लेकिन समाज मार्क्स जैसा चाहिए।
- जो विचारपूर्वक स्वीकार होता है, वह ज़रूरी रूप से आत्मा में प्रविष्ट नहीं हो पाता है। विचार बाहर ही रह जाते हैं, भीतर नहीं आते। भीतर तो निर्विचार जाता है।
- अनुयायी सदा अंधे होते हैं।
- एक आचरण आत्मा से पैदा होता है, एक बाहर से थोपा जाता है। जो आचरण बाहर से थोपा जाता है, वह जब तक हाथ में शक्ति न हो तब तक टिक सकता है।
- भले आदमी को कोई बुरा आदमी नहीं दिखाई पड़ता है, लेकिन ध्यान रहे बुरे आदमी को कोई भला आदमी नहीं दिखाई पड़ता है।
- सर्वोदय से समाजवाद नहीं आएगा, लेकिन समाजवाद से सर्वोदय आ सकता है, क्योंकि सर्वोदय का अर्थ है– सबका उदय, सबका हित। सबका हित तभी हो सकता है, जब सबका हित समान हो। अभी ग़रीब और अमीर का हित समान नहीं है। इसलिए सर्वोदय नहीं आ सकता है।
- जब तक आर्थिक समानता न हो तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता आत्मवंचना –सेल्फ डिफेक्शन– है।
- मोक्ष का ख्याल गर्भ के अनुभव से ही पैदा हुआ था।

- जीवन की खोज निरंतर अतीत से मुक्त होने की खोज है।
- परंपरा का सहारा अहंकार की पुष्टि के लिए लाया जा सकता है।
- मरने के लिए भी ज़िंदगी चाहिए।
- जो कहा जाता है वह एक है, जितने लोग सुनते हैं व्याख्याएं उतनी हो जाती हैं।
- जो पुराने को गिराने की सामर्थ्य नहीं रखते, वे नए का निर्माण करने का सामर्थ्य खो देते हैं।
- सत्य कभी भी विचार करने से भयभीत नहीं होता है, असत्य हमेशा विचार करने से भयभीत होता है।
- कचरा ही कचरा जब पास में हो तो उसको फिर आग में डालने से हम बहुत डरेंगे।
- 'जी' हम उनके साथ लगाते हैं, जिनके साथ लगाने जैसा भीतर कुछ भी नहीं; बाहर से 'जी' लगाकर इज़्ज़त जोड़ देते हैं। परमात्मा के साथ तो जी नहीं लगाते हैं।
- जब हृदय में आदर होता है तो शब्दों में हम विचार नहीं करते, फिक्र नहीं करते और जब हृदय में आदर नहीं होता तो हम शब्दों की बहुत फिक्र करते हैं कि क्या कहें, क्या न कहें।
- प्रेम के अपने रास्ते होते हैं और श्रद्धा के अपने, लेकिन जो न प्रेम जानते हैं, न श्रद्धा जानते हैं; सिर्फ थोथा शिष्टाचार जानते हैं, उन बेचारों को प्रेम और श्रद्धा के रास्ते का कोई पता नहीं होगा। जिनके बीच प्रेम हैं, उनके बीच शिष्टाचार समाप्त हो जाता है।
- महापुरुष हम उसे कहते हैं, जिसके पास समाज का शिष्टाचार समाप्त हो गया है, उससे हम सीधी–सीधी बात कर सकते हैं।
- प्रशंसा प्राप्त करना बहुत आसान है, गाली खाने की हिम्मत जुटाना बहुत कठिन है।
- विश्वास नहीं; विचार विकास का द्वार है।
- पुराने को तोड़े बिना नए को बनाया भी तो नहीं जा सकता है। विध्वंस भी रचना की प्रकिया का हिस्सा है। अतीत की आलोचना भविष्य में गति करने का पहला चरण है।
- मेरी बात की आलोचना करने से आप खबर देते हैं कि आपने मेरी बात को मूल्य दिया। इस योग्य समझा कि आप उस पर सोच रहे हैं। आलोचना निंदा नहीं, सम्मान है।

- हम पक्ष में उसी के हो सकते हैं, जिसके विपक्ष में होना भी ज़रूरी मालूम पड़ सकता हो।
- विचार का जन्म होता है संदेह से, संघर्ष से, आलोचना से।
- साधारण से साधारण मनुष्य भी तौला नहीं जा सकता।
- कायरों को अहिंसा की बात एकदम जंच जाती है।
- हम उस आदमी से बदला लेते हैं जो हमारे अज्ञान को प्रकट कर देता है; क्योंकि वह हमारे अहंकार को चोट पहुंचा देता है।
- हमेशा भीड़ के भय के कारण हम असत्यों को स्वीकार किए बैठे रहते हैं।
- सत्य तो अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है, लेकिन असत्य को भीड़ का मत चाहिए।
- दबाव मात्र हिंसा है। दबाव डालने के ढंग अहिंसात्मक हो सकते हैं लेकिन दबाव खुद हिंसा है।
- क्रांति का अंतिम अर्थ है आत्मिक परिवर्तन, हार्दिक परिवर्तन; लोगों की चेतना बदल जाना।
- आदमी की आत्मा दबाव को इंकार करती है।
- जबरदस्ती को इंकार करने से हिंसा शुरू हो जाएगी।
- जो मिलता है, मन उससे प्रसन्न नहीं होता; पर जो छूट जाता है उससे दुखी होता है।
- दरिद्र के साथ दया करने से दरिद्रता पलती है, पोषित होती है।
- जिस पर भी आपने दया की, उसको बहुत गहरे में अपना शत्रु बना लिया, मित्र नहीं। वह आपसे बदला लेगा, क्योंकि कोई भी आदमी अपमानित होता है; जब उसे दया मांगनी पड़ती है, पीड़ित होता है। ऊपर से मुस्कुराकर कहता है कि भगवान तुम्हें खुशी रखे, लेकिन वह भली–भांति जानता है कि उसे इस हालत में कौन ले आया हैं।
- नेकी अपमान करती है किसी का; और नेकी तुम्हारे अहंकार को मज़बूत करती है और दूसरे मनुष्य को पीड़ित करती है।
- जब तक शोषण का पाप जारी है तब तक चोरी जैसे छोटे पाप पैदा होते रहेंगे।
- गुलाम बनाने के लिए आदमी का ज़िंदा रहना ज़रूरी है।

- पूजा मरे हुए आदमी की की जाती है।
- धार्मिक तो नैतिक होता है, लेकिन नैतिक धार्मिक नहीं।
- प्रतिक्रियाओं से कभी किसी वृत्ति से मुक्ति नहीं मिलती है। वृत्तियों से, वासनाओं से मुक्ति आती है समझ से। और जो व्यक्ति प्रतिक्रिया में होता है, विरोध में होता है, शत्रुता में होता है, उसमें समझ कैसे आ सकती है।
- भय की प्रतिक्रिया में व्यक्ति निर्भय हो जाता है, अभय नहीं। निर्भय उल्टा हो गया भय है। अभय में न भय है, न निर्भयता है।
- अनीति से मुक्त होने के लिए नीति से भी मुक्त होना होता है और दोनों से ही मुक्त होकर चेतना धार्मिक हो जाती है।

18

महावीर, ब्रह्मचर्य, कर्मवाद और पुनर्जन्म– आचार्य रजनीश

- अतीत सिर्फ स्मृति में है और कहीं भी नहीं और भविष्य केवल कल्पना में है और कहीं भी नहीं। है तो सिर्फ वर्तमान। इसलिए समय का एक ही अर्थ हो सकता है– वर्तमान।
- ध्यान का अर्थ ही है कुछ न करना।
- मुझे कभी कोई हरा न सका क्योंकि मैं पहले से ही हारा हुआ था। – लाओत्से
- नैतिक साहस होता ही नहीं। कथित नैतिकता साहस की कमी के कारण होती है, साहस के कारण नहीं।
- जिस व्यक्ति को पुण्य की गहराइयां छूनी हों, उस व्यक्ति के भीतर पाप की गहराइयों को छूने की क्षमता चाहिए। – नीत्शे
- जिसकी तुम कसम खाते हो उससे तुम सदा उल्टे होते हो। और जो तुम होते हो, उसकी तुम्हें कभी कसम नहीं खानी पड़ती।
- साधन और साध्य अंततः अलग–अलग नहीं है, क्योंकि साधन ही विकसित होते–होते साध्य हो जाता है।
- कार्य–कारण के बीच कभी अंतराल नहीं होता। अगर अंतराल बीच में आ जाएगा तो कार्य कारण विच्छिन्न हो जाएंगे।
- नियम पर्याप्त है, नियंता की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि नियम स्वयं वह काम करता है। अगर नियंता है तो नियम में गड़बड़ होने की संभावना रहती है।
- बुरा आदमी एक बहुत बड़ी जटिल घटना है। हो सकता है वह झूठ बोलता है, बेईमानी करता है लेकिन उसमें कुछ और गुण हो जो हमें दिखाई नहीं देते। वह साहसी हो सकता है, पहल करने वाला हो सकता है, बुद्धिमान हो सकता है, एक–एक कदम को समझकर उठाने वाला हो सकता है।
- अक्सर बुद्धिमान आदमी को अच्छा होना मुश्किल हो जाता है।
- दुख तो हमें किसी का दिखता नहीं, दुख सिर्फ अपना दिखता है और सुख सदा दूसरे का दिखता है। ऐसे ही, शुभ कर्म हमें अपना दिखता है और अशुभ कर्म दूसरे का

दिखता है। ....प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म को शुभ मानता है क्योंकि उसके अहंकार को इससे तृप्ति मिलती है और वह अपने दुखों की गिनती करता है, सुखों की नहीं।

- अगर हम दूसरों की बातचीत पता लगाने जाएं तो सौ में से नब्बे प्रतिशत बातचीत किसी भी निंदा से संबंधित होगी। निंदा में रस है क्योंकि दूसरे को छोटा दिखाने में अपने को बड़ा होने का ख्याल है। इसलिए हर आदमी दूसरे को छोटा दिखाने की कोशिश में लगा है।.....जब कोई किसी की बुराई करता है तो हम बिना खोजबीन के मान लेते हैं, तर्क भी नहीं करते, विवाद नहीं करते; लेकिन जब कोई किसी की अच्छाई की बात करता है तो हम बड़े सचेत हो जाते हैं।
- असल में हम उस घटना को हम अकस्मात कहते हैं; जिसका हम कारण नहीं खोज पाते।
- भीतरी संकल्प भी उसके हजारों उन अनुभवों और कारणों का फल होता है; जिनसे वह गुजरा है।
- एक जन्म से दूसरे जन्म में कर्म के फल नहीं जाते लेकिन कर्म और फल जो हमने किए और भोगे, उनकी सूखी रेखा हमारे साथ रह जाती है, जिन्हें मैं संस्कार कहता हूँ। इस सूखी रेखा से आपको ज्ञान हो जाना काफी है। इसलिए मोक्ष या निर्वाण तत्काल हो सकता है।
- अगर पुरानी व्याख्या सही है तो तो कभी कोई मुक्त हो ही नहीं सकता, क्योंकि अगरएक भी कर्म शेष रह गया तो उसको भोगने भ्रें में फिर नए कर्म निर्मित होते चले जाएंगे।
- जो गुलामी चाहे वही गुलाम हो सकता है। – डायोजनीज
- शक्ति की उपलब्धि में ही शक्ति के अनुपयोग की संभावना छिपी है।
- बैंक उस आदमी को पैसे उधार देता है जिसको पैसे की ज़रूरत नहीं और जिस आदमी को ज़रूरत है उसे बैंक पैसा नहीं देता।
- आधे सत्य असत्य से भी ज़्यादा खतरनाक होते हैं, क्योंकि आधे सत्यों में पूर्ण सत्य होने का भ्रम पैदा होता है।
- आने वाले सौ वर्षों में मनुष्य की संख्या का तीव्रता से बढ़ने का जो भय है, उससे नई ज़मीन की खोज शुरू हो गई है, जहां हम आदमी को पहुंचा सकें।
- स्वप्न में मछली देखना सेक्स का प्रतीक है। – फ्रायड

- अगर हम सीखने को उत्सुक हैं तो सत्य सब जगह से सीखा जा सकता है।
- सब सुख दुख में बदल सकते हैं और ऐसा कोई दुख नहीं जो सुख में न बदल सके। सब दुख भी सुख में बदल सकते हैं।
- पृथ्वी की अपेक्षा सौ गुना भोजन समुद्र के पानी से निकाला जा सकता है।
- खेल का मतलब है– व्यवस्थित उपद्रव।
- जो आदमी किसी की खुशामद करेगा, वह अपने से पीछे वाले लोगों से खुशामद मांगेगा। जो आदमी किसी की खुशामद नहीं करेगा, वह खुशामद भी नहीं मांगेगा। दोनों बातें एक साथ चलती हैं। जो आदमी नम्रता दिखलाएगा, वह दूसरों से नम्रता की मांग करेगा।
- अभागा होगा वह दिन, जिस दिन आदमी अपने से संतुष्ट हो जाएगा। – नीत्शे; क्योंकि जब आदमी अपने प्रति ही असंतुष्ट हो जाता है तब उसके जीवन में धर्म की यात्रा शुरू होती है।
- अहंकार विधायक घोषणा है। नम्रता अहंकार की निषेधात्मक घोषणा है।
- अच्छा बाप बेटे को अनिवार्यतः बिगाड़ने का कारण बनता है, क्योंकि वह उसे इतना सुख पहुंचाना चाहता है और इतना शुभ बनाना चाहता है कि बेटे पर उसका यह सुख बोझ बन जाता है।
- परम अहिंसा की स्थिति में व्यक्ति किसी को दुख तो पहुंचाना ही नहीं चाहता, सुख भी पहुंचाना नहीं चाहता; क्योंकि बहुत गहरे में देखने पर सुख और दुख एक ही चीज के दो रूप हैं।

19

नए भारत की खोज– आचार्य रजनीश

- जब जीवन असार है तो समस्याएं भी असार हो गई हैं।
- सच तो यह है कि सत्यों को सिद्ध करने की कोई ज़रूरत नहीं होती है, सिर्फ असत्य को ही सिद्ध करने की ज़रूरत पड़ती है।
- जब कोई क़ौम मौत की बहुत ज़्यादा चिंतना करने लगे तो समझना चाहिए कि वह क़ौम बीमार पड़ गई है तो जीते जी आदमी को जीवन की चिंतना करनी चाहित, मरने की नहीं।
- प्रतिभा हल करने में ही विकसित होती है। सामर्थ्य जूझने से ही विकसित होती है। चुनौती से सोई हुई शक्तियां जागती हैं।
- जब तक कोई समाज बिना प्रेम के ओर सामाजिक व्यवस्था से विवाह करना चाहेगा, तब तक वह समाज दहेज से मुक्त नहीं हो सकता। दहेज से मुक्त होने का एक ही उपाय है कि युवको और युवतियों के बीच मां बाप खड़े न हों।
- स्वाभाविक है, जिस चीज को इंकार किया जाता है, उसकी जिज्ञासा पैदा होती है।
- कोई भी शिक्षित व्यक्ति किसी को भी मालिक मानने को राजी नहीं हो सकता। शिक्षित व्यक्ति खुद अपना मालिक हो सकता है।
- संदेह की अग्नि से जो गुजरकर बच जाता है, उसी का नाम सत्य है और जो डरता है वह असत्य है।
- आस्तिक– ईश्वर है, मानता है, जानता नहीं।
- नास्तिक– ईश्वर नहीं है, मानता है, जानता नहीं।
- ब्रह्मचर्य संभव है लेकिन सेक्स को छिपाकर नहीं, सेक्स को जानकर, पहचानकर, उसके अतिक्रमण से।
- चरित्र की बातों की आड़ में दुश्चरित्रता छिपी होती है।
- आदर्श पर हमारी आंख लगी है, जो हम नहीं हैं और जो हम हैं, वहां से आंख हट गई है।

- श्रुति यानि जो सुना है, जाना नहीं। स्मृति यानि जो याद किया गया है, जाना नहीं।
- किसी सवाल को ठीक से समझ लेना ही उसका समाधान है।
- जितना जीवन सुरक्षित हो जाता है, उतना ही मर जाता है। कब्र सबसे सुरक्षित स्थान है।
- दो डरे हुए आदमी अगर इकट्ठे हो जाएं तो डर दुगुना हो जाता है; आधा नहीं।
- हिटलर ने शादी नहीं की।
- स्टालिन ने हमशक्ल आदमी बनाया था।
- नकली आदमी हमेशा अकड़े हुए रहते हैं, क्योंकि अगर अकड़ चली जाए तो कहीं नकल न खुल जाए।
- जो आदमी दूसरे को भयभीत करने में आनंदित होता है, वह आदमी स्वयं भयभीत होना चाहिए।
- अगर दुनिया में बहुत अच्छे आदमी पैदा होंगे तो महापुरुषों को याद रखना मुश्किल हो जाएगा। ...जब तक हम अच्छे आदमियों को याद रखते हैं तब तक समझ लेना कि समाज बुरा है।
- नेता बनने के लिए खतरा पैदा करना ज़रूरी है। – हिटलर
- अगर दुनिया में कोई ताक़त उतर आए और सारी राजधानी के राजनीतिज्ञों को पकड़ लो और पागलखाने में डाल दें तो दुनिया आज और अभी शांत हो जाए।
- बनाने की ताक़त हो तो तोड़ने से कोई डर नहीं है। यह बात ज़रूर है कि तोड़ने के लिए तोड़ने का कोई मतलब नहीं है।
- लक्ष्य हमेशा भविष्य में होता है और जीवन वर्तमान में होता है।
- जिसके प्रति हमारा बोझ है, उसके साथ हम कभी आनंदित नहीं हो सकते। इसलिए कोई पति किसी पत्नी के साथ कभी आनंदित नहीं है।
- सुविधा हमेशा कमज़ोरों को दी जाती है।
- कोई आदमी कितना ही ग़लत हो, उसे अपनी बात कहने का हक़ है और कोई आदमी कितना ही सही हो तो भी ग़लत आदमी की आवाज़ बंद करने का कोई हक़ नहीं है।

20

एडॉल्फ हिटलर की आत्मकथा – माइन काम्फ़

- बुराई को बताना भी बुराई से बचने की प्रेरणा देने का एक माध्यम है।
- यदि तुम अपने जीवन में जोखिम उठाने से कतराते हो तो सच मानो तुम अपने जीवन में कभी विजयी नहीं बन सकते।
- इस संसार में प्रत्येक उत्कृष्ट पदार्थ को कुछ न कुछ उत्कृष्टतर बनाया जा सकता है। प्रत्येक पराजय को भविष्य की विजय का आधार बनाया जा सकता है। प्रत्येक हारा हुआ युद्ध पुनरुत्थान का कारण बन सकता है।
- राज्य अपने आप में साध्य नहीं है, बल्कि साध्य की प्राप्ति का साधन है।
- विजय हमेशा उसकी होती है, जो पहल करता है।
- वस्तुतः इतिहास का अध्ययन केवल यह जानने के लिए किया जाना चाहिए कि भूतकाल में क्या हुआ, बल्कि भविष्य में क्या किया जाना चाहिए; इस दिशा के निर्देश के लिए ही किया जाना चाहिए।
- आदर्श का महत्व इस बात पर निर्भर करता है है कि कोई काम समाज के लिए कितना उपयोगी है। जिस काम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में जितने अधिक लोगों जितना अधिक लाभ होगा; नैतिक अथवा आदर्श की दृष्टि से उसका मूल्य उतना ही अधिक होगा।
- मनुष्य के मूल्य का अनुमान उसके काम करने के ढंग से, न कि उसे मिलने वाले पारिश्रमिक से लगाया जाना चाहिए।
- प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यताओं के अनुरूप व्यवसाय सुलभ कराना सुव्यवस्थित राज्य का एक दायित्व है।
- समान अधिकारों के सिद्धांत को लागू करने से समानता को कोई आधार नहीं मिल जाता।
- मध्यम वर्ग समाज के दोनों–श्रेष्ठतम और निकृष्टतम – अर्थात् उच्च और निम्न–वर्गों के संघर्ष में विजयी के प्रभुत्व को तुरंत स्वीकार कर लेता है। यदि श्रेष्ठतम प्रभुत्व प्राप्त कर लेता है तो मध्य वर्ग उसका अनुयायी बन जाता है और यदि निकृष्टतम वर्ग सफल होता है तो मध्यम वर्ग उसके प्रभुत्व को भले स्वीकार न करे तो भी उसका विरोध नहीं करता है। वस्तुतः मध्यम वर्ग का व्यक्ति अपनी लड़ाई स्वयं कभी नहीं लड़ता है।

- अपने आकार को निश्चित सीमा से आगे बढ़ा लेने वाले आंदोलन की संघर्ष करने की शक्ति धीरे धीरे घटती जाती है और फिर ऐसे आंदोलन अपने सिद्धांतों का प्रचार अपेक्षित दृढ़ता, विश्वास तथा साहस से नहीं कर पाते।
- किसी भी आंदोलन के लिए अपने को जीवित रखने के लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि लोकप्रियता तथा उद्देश्य में सफलता प्राप्ति के बाद नए सदस्य बनाना बंद कर दे।
- विदेश नीति का उद्देश्य क्षेत्र का अधिग्रहण होना चाहिए।
- घरेलू नीति का उद्देश्य अपने राष्ट्रवाद के अनुरूप राजनीतिक गतिविधियों का संतुलित संचालन होना चाहिए।

21

साहित्य का खुला आकाश– विद्यानिवास मिश्र

- साहित्य 'उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं'– कहीं पैदा होता है, कहीं अन्यत्र शोभा पाता है– इसीलिए साहित्य और उत्सव पर्याय हैं।
- एक ओर भाषा आगम है, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संक्रांत है, संक्रांति के अपरिहार्य अधूरेपन के कारण कुछ न कुछ उसमें जुड़ता जाता है, कुछ छूटता जाता है, कुछ नवगठित होता जाता है। दूसरी ओर, भाषा आम्नाय है, जिसका शाब्दिक अर्थ है यहां तक मापी हुई और आगे भी मापी जाने के लिए प्रस्तुत। परंपरा शब्द की अपेक्षा हमारे शास्त्रों में आम्नाय का अधिक प्रयोग हुआ है।
- भाषा की नवीनता उपलब्धि में उतनी नहीं, जितनी उपलब्धि की बेचैनी में है। जब वह बेचैनी चुकने लगती है तो भाषा बोझिल और असहज होने लगती है। सजीवता का लक्षण है आकांक्षा की तीव्रता।
- भाषा, परंपरा और संस्कृति तीनों प्रक्रियाएं हैं, तीनों साध्य हैं, तीनों सिद्धि की आकांक्षी हैं। पूर्व सिद्धियों से अपरितृप्त है, तीनों में अनविच्छिन्नता है, निरंतरता है। एकदम छोड़ना तीनों के वश के बाहर की बात है; पर एकरस न रह पाना भी तीनों की आंतरिक विवशता है।
- परंपरा ट्रेडिशन नहीं है, ट्रेडिशन ज्यों का त्यों स्थानांतरण है, परंपरा पर अर्थात् श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर की ओर जाने की प्रक्रिया है, वह संतान में, शिष्य में परिवर्तन देखती है और उसके अपने से आगे जाने में अपनी सार्थकता समझती है।
- परंपरा में पूर्व के प्रति विनम्रता और भविष्यत् के प्रति आशा दोनों सन्निहित हैं, इसलिए वर्तमान की सजगता उसकी अपरिहार्य शर्त है।
- अनुभव जितना ही गहरा होता है, उतना अधूरा होता है।
- संस्कार का मूल प्रयोजन होता है गुणों की स्वीकृति और स्वीकृति का मार्जन।
- संस्कृति मानव चित्त की खेती है। – आचार्य नरेंद्रदेव
- साहित्य न समाधान है, आह्वान। वह बस चित्त का उन्मथन है, तुम जहां ठहरे हुए हो, वहां से विचलित हो।

- साहित्य राजनीति का उत्स भी है और राजनीति का बराज–जलरोकी बांध– भी।
- साहित्य कभी नहीं कहता, ऐसे चला, वैसे चलो, वह नीति नहीं है। साहित्य राम के पीछे नहीं चलाता, राम के भीतर चलाता है। इसी अर्थ में राजनीति का अंतर्यामी तो है, पर राजनीति का अनुगामी नहीं। वह जब अनुगामी हो जाता है तो स्वयं तो छोटा होता ही है, राजनीति भी छोटी हो जाती है।
- साहित्य और राजनीति एक दूसरे के कार्य में रुचि लें, पर हस्तक्षेप न करें।
- लिटरेचर और साहित्य में एक मौलिक अंतर है। लिखी हुई सामग्री मात्र लिटरेचर है, पर साहित्य एक तो हमारी अवधारणा में मूलतः वाचिक है, दूसरे वह शब्दराशि मात्र नहीं है, उसका एक चुना हुआ, विशेष उद्देश्य से चुना हुआ रूप है, इस अंतर को पहचानना चाहता हूं।
- साहित्य शब्द का अर्थ– 1– सहित; रस के सहित होना। 2– ऐसे रस के सहित होना जो निरतिशयप्रिय हैं, जो दूसरे की, पराए की इच्छा के अधीन न हो, शुद्ध रूप से अपने मान का अभीष्ट हो। 3– अन्य अर्थ–1; हिंत का अर्थ है विहित– ढंका हुआ, आधा गृहीत हो, आधा न हो पाए। कुछ दिखे, कुछ न दिखे; जब तक यह न हो, तब तक साहित्य में पुनः–पुनः स्थापित होने की क्षमता कैसे आए, साहित्य निरंतर उत्कंठित करते रहने की क्षमता कैसे आए, तुलसी की इस चौपाई की भांति
- ज्यों मुख मुकुर मुकुरू निज पानी।
  गहि न जाइ अस अद्भुद बानी।।

  2– सन्निहित–दूसरा अर्थ– जब तक ऐसा न लगे कि कवि ने, कथाकार ने मेरी बात को मेरे मुंह से छीन लिया, मेरी अव्यक्त व्याकुलता को वाणी दे दी, मेरे सुख–दुःख को पा लिया, तब तक साहित्य सहित का, सन्निहित का भाव नहीं है।

  3–निहित– उचित स्थान में रखा हुआ।

  4– प्रहित– दूसरे के द्वारा पठाया गया, प्रेषित, प्रेरित।

  5– अवहित– बड़े ध्यान से, बड़ी एकचित्तता से, एकाग्रता से जिसे देखा गया हो, वह हित है; इस प्रकार की समाधि में रचना न हो तो वह साहित्य नहीं होगी।

  6– सुहित
- साहित्य के बने बनाए मूल्य कभी नहीं होते, जब कभी होते हैं तो साहित्य इतिहास या राजनीति का पिछलग्गू हो जाता है, इनका झंडाबरदार हो जाता है। साहित्य की

स्वायत्तता ही इस माने में है कि वह बंधे–बंधाए मूल्यों को अस्वीकार करने का अपना विशेषाधिकार रखता है।

- साहित्य का यह भी एक प्रयोजन है कि मूल्यों की प्रासंगिकता की जांच केवल अपने युग की दृष्टि से ही न करे, आगे की संभावना को भी दृष्टि में रखकर जांच करे।
- मध्ययुगीन साहित्य न जीवन का निषेध है, न कर्म का, न सामाजिकता का। वह निषेध के निषेध का साहित्य ज़रूर है, इसीलिए ऊपर से प्राचीन साहित्य की तरह वह विधि–रूप नहीं दिखता, पर वह विधि–निषेध को नए सिरे से जांचने वाला साहित्य है, इसलिए विधि–निषेध की पूरी व्यवस्था का अतिक्रमण करता है, कभी मुखर रूप में, कभी अनकहे मौन के रूप में।
- कंचना जितना कच्चाद होता है, उतना ही पानीदार होता है। मनुष्य जितना सहज होता है, उतना ही शुद्ध।
- समाज शब्द मनुष्य केंद्रित पश्चिमी चिंतन के दबाव से इतना छा गया है कि 'लोक' भूल गया है।
- सामाजिक मान्यता बदलने का काम साहित्य नहीं करता, वह केवल बदलाव के लिए मन में उद्वेग पैदा करता है। बदलाव जिस सामाजिक संकल्प से आता है, उसके लिए कुछ और प्रयत्न आवश्यक होते हैं। कबीर, नानक, चैतन्य, शंकरदेव ने साहित्य रचा ही नहीं, प्रयत्न भी किया, यात्राएं कीं; पर आज साहित्यकार सारा प्रयत्न शब्द तक सीमित किए हुए हैं।
- साहित्य; सहित का भाव है अर्थात् उसमें दो बातें होनी चाहिए। लोगों को अपने साथ ले चलने की क्षमता हो और उसमें हित की चिंता हो।
- साहित्य प्रश्न छेड़ता है कि मनुष्य के लिए अधिक काम्य कल्याण पथ क्या है। वह किसी भी दिए हुए कल्याण के मार्ग से संतुष्ट नहीं रहता है। आज शिवतर की चिंता मनुष्य को नहीं है, क्षिप्रतर लाभ की चिंता ज़रूर है।
- साहित्य तो जीवन के आस्वाद्य का आस्वाद्य है और केवल व्यक्ति–जीवन के आस्वाद्य का आस्वाद्य नहीं, संपूर्ण जीवन के आस्वाद्य का आस्वाद्य है।
- कुछ पाना, खोना और होना तो एक नहीं रहते। बच्चा किसी चीज को पाता है तो तोड़ना चाहता है। किशोर कुछ पाता है तो उसे छिपाकर रखना चाहता है और छिपाकर रख नहीं पाता। वह किसी एक को यह बताना चाहता है कि मुझे यह मिला है। जबकि

सयाना आदमी जो पाता है, उसे बताना चाहता है और बूढ़ा आदमी जब पाता है तो उसे बंद रखना चाहता है। यही बात संस्कृति की अवस्थाओं पर भी लागू होती है। आज संस्कृति बुढ़ापे से बचपन की ओर जा रही है।

22

पद्य सार

- दस बार बीस बार बरजि दई है जाहि एते पै न मानै जौ तौ जरन बरन देव
  कैसो कहा कीजै कछू आपनो करो न होय जाके जैसे दिन ताहि तैसेइ भरन देव
  ठाकुर कहत मन आपनो मगन राखो प्रेम निहसंक रस–रंग विहरन देव
  विधि के बनाए जीव जेते हैं जहां के तहां खेलत फिरत तिन्हें खेलन फिरन देव ।।
- जो जितना ऊंचा होता है/उतना ही एकाकी होता है/पृथ्वी पर/मनुष्य ही ऐसा प्राणी है/
  जो भीड़ में अकेला और/अकेले में भीड़ से/घिरा अनुभव करता है– अटल बिहारी वाजपेयी
- तेरे इश्क की इंतिहा चाहता हूं
  मेरी सादगी देख क्या चाहता हूं ।
- सितारों से आगे जहां और भी हैं अभी इश्क के इम्तहां और भी हैं
  तू शाहीन है परवाज है काम तेरा तेरे सामने आसमां और भी है ।
- ऐसी चोरी का पता ख़ाक लगाए कोई
  सामने बैठ के जब दिल को चुराए कोई ।
- आती है उसी मौज से दरिया में रवानी
  जिस मौज की तकदीर में साहिल नहीं होता ।
- माना कि इस ज़मीं को गुलज़ार न कर सके
  कुछ खार कम कर गए गुज़रे जिधर से हम ।
- इक शहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर
  हम ग़रीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मज़ाक ।
- न गरज किसी से न वास्ता मुझे अपने ही काम से
  तिरे जिक्र से तिरी फिक्र से तिरी याद से तिरे नाम से ।
- वो आएं घर पे मेरे यह खुदा की रहमत
  कभी हम उनको कभी बोरिये को देखते हैं ।
- वक़्त किसकी सुनता है गुज़र जाने के बाद
  आशियां बनते नहीं तिनके बिखर जाने के बाद ।

- सिफारिश तुम्हारी करा देते लेकिन
  खुदा तक हमारी रसाई नहीं है ।
- अपनी तक़लीफ़ किसी से भी नहीं अब कहनी
  नहीं खुदा से भी क्या खुद उसे मालूम नहीं ।
- लोग पत्थर भी नहीं फेंकते बेमतलब
  कुछ तो यारों को आया है दीवाने में ।
- जिसने जीने की मुसीबत झेल ली
  उसको मरने की मुसीबत कुछ नहीं ।
- मैं तो फरिश्ता बनने के खतरे में था खड़ा
  कमजोरियों ने कुछ मुझे इंसां बना दिया ।
- एक जो राह है निकलने की
  उसपे बिल्ली की हुक्मरानी है ।
- कोशिशें आराम से जीने की करके थक गया
  अब तो मैं आराम से मरने की तैयारी में हूं ।
- दर्द हमको दबाए बैठा है
  दर्द को हम दबाए बैठे हैं ।
- वक़्त मेरे जाने का नज़दीक है
  मौत को भी कुछ बहाना चाहिए ।
- दूर रहकर उदास रहता हूं
  यक़ीनन तेरे पास रहता हूं ।
- दिल दे तो इस मिजाज़ का परवरदिगार दे
  जो रंज की घड़ी भी खुशी में गुजार दे।
- दरिया में भी सुकूं था मौजें भी नहीं थीं
  फिर भी मेरी कश्ती किनारे न लग सकी ।
- उम्र भर करता रहा हर शख्स पर मैं तबसरे
  झांक कर अपने गिरेबां में कभी देखा नहीं ।
- खुदी को जुदा जिस बसर ने किया

खुदा की कसम वह खुदा हो गया ।

- इलाही मौत भी आए तो इन्हीं रंगीन गलियों में
  जहां लाशों को भी आंचल के कफ़न पहनाए जाते हैं ।
- मुमकिन है कोई लहर मुझे भी बहा ले जाए
  सदियों से मैं उम्मीद की साहिल पै खड़ा हूं ।
- मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर
  लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया ।
- इंसान वह नहीं जो हवा के साथ बदले
  इंसान तो वही है जो हवा का रुख बदले ।
- माना कि तेरी दीद के काबिल नहीं हूं
  पर मेरा शौक़ देख मेरा इंतज़ार देख ।
- तुम्हें मालूम है कि खुशहालियों की ख़्वाहिश में
  अमीर–ए–शहर ने कितने फकीर मार दिए
  तमन्नाओं में कब तलक ज़िंदगी उलझाई जाएगी
  खिलौने देकर मुफ़लिसी कब तलक बहलाई जाएगी ।
- नजर से नजर ने मुलाक़ात कर ली
  रहे दोनों खामोश पर बात कर ली ।
- नहीं सुख पाते हैं औरों को सताने वाले
  खुद जला करते हैं औरों को जलाने वाले ।
- पत्थर पै घिसके चंदन कहता ये बार–बार
  जो जितने मिटे हैं वो उतने बुलंद हो गए ।
- थक–थक के हर मुक़ाम पे दो चार रह गए
  तेरा पता न पाया तो लाचार क्या करें ?
- हसरत पे उस मुसाफ़िर की बेकसके रोइये
  जो थक के बैठ जाता है मंजिल के सामने ।
- मुहब्बत हो ही जाती है अगर दिल दिल से मिलता है
  मगर मुश्किल तो है यारो कि दिल मुश्किल से मिलता है ।
- फ़ासलों की दुनिया में दूरियां नहीं बाकी

आदमी जहां भी है दायरों के अंदर है ।

- लाख सूरज उजाला लुटाए मगर
  वह तरसता स्वयं चांदनी के लिए ।
- मंजिल तक पहुंचे ही बिना अंदाज की बातें करते हैं
  दो पग अभी चले ही नहीं रफ्तार की बातें करते हैं।
- मिलेंगे फूल पहले कांटों को तोड़ना होगा
  मुड़ेंगे लोग पहले खुद को मोड़ना होगा ।
- कभी सर्दी कभी गर्मी ये कुदरत के नज़ारे हैं
  उन्हें भी प्यास लगती है जो सरोवर के किनारे हैं ।
- दोस्तों से भी डर दुश्मनों की तरह इश्क में तू किसी का भरोसा न कर
  इस ज़माने में सब मतलबी यार हैं तू किसी आदमी का भरोसा न कर ।
  रात की जुल्मतों से न दामन बचा अक़्ल से काम ले ओ पतंगे ज़रा
  ये तेरी मौत का सामान है शम्मां की रोशनी का भरोसा न कर ।
  आग फिर आग है आग से न उलझ मेरी बातों का मतलब समझ न समझ
  खुदगरज़ लोगों से तू न रख वास्ता मतलबी आदमी का भरोसा न कर ।
  सब्र से काम ले इतनी उजरत न कर वरना रोना पड़ेगा तुझे उम्र भर
  मत बुझा अपने घर के चिराग़ों को तू चांद की चांदनी का भरोसा न कर ।
- न आया जिसे शेव–ए–ज़िंदगी
  बस वही ज़िंदगी से खफा हो गया ।
- जिसको तूफां से उलझने की आदत हो मोहसिन
  ऐसी कश्ती को समुंदर भी दुआ देता है ।
- तेरी तस्वीर में इक बात तुझसे भी निराली है
  खूब जी भरके हंस लेते हैं न झिड़कन है न गाली है ।
- शमा ने कब कहा परवाने से जल जाने को
  रोकता कौन है कुछ करने को दीवाने को ।
- तूफां से अगर खेलना इंसान सीख ले
  मौजों से आप उभरें कनारे नए–नए ।
- न आया हमें इश्क करना न आया

जिए उम्र भर और मरना न आया ।

- हैं कुछ खराबियां मेरी तामीर में जरूर
  सौ मर्तवा बना के मिटाया गया हूं मैं ।
- दुनिया में कहीं ग़म के अलावा खुशी नहीं
  वह भी हमें नसीब है कभी है ! कभी नहीं ।
- खुदा की देन है जिसको नसीब हो जाए
  हर एक दिल का ग़मे–जाविदां नहीं मिलता ।
- अजीब रस्म निकाली है बागवां ने
  जो गुल खिले उन्हें चमन से निकाल दिया ।
- कुदरत को नापसंद है सख्ती जुबान में
  बस इसलिए पैदा न की सख्ती जुआन में ।
- लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में किसकी बनी है आलमें नापाएदार में ।
  कह दो इन हसरतों से कहीं और जा बसें इतनी जगह कहां है दिलेदार दार में ।
  उम्रे दराज मांग के लाए थे चार दिन दो आरजू में कट गए दो इंतजार में ।
  इतना है बदनसीब जफ़र दफन के लिए दो गज ज़मीं भी न मिले कोपेयार में ।
- अगर तलाश करें क्या नहीं दुनिया में
  शराब होके भी ज़िंदगी खराब नहीं ।
- उलट जाती हैं तदबीरें पलट जाती हैं तकदीरें
  अगर ढूंढें नई दुनिया तो इंसां पा ही जाता है
- हमारा झूठ इक चुमकार है बेदर्द दुनिया का
  हमारे झूठ से बदतर ज़माने की सच्चाई है ।
- जो हो सके तो हटा दो राह के पत्थर
  तुम्हारे बाद भी कोई गुज़रेगा ।
- किस किस को करें याद किस किस को रोइये
  आराम बड़ी चीज है मुंह ढक के सोइए ।
- उस कश्ती से किसने पूछा क्या गुज़री तूफ़ानों में
  जिसने न जाने कितने मुसाफ़िर अब तक पार उतारे हैं ।
- ये ठीक है कि अंधेरा नहीं है महफ़िल में

मगर चिराग़ पे क्या–क्या गुज़र गयी होगी ।

- दूर रहकर उदास रहता हूं।
  यक़ीनन तेरे पास रहता हूं।
- दरिया में भी सुकूं था मौजें भी नहीं थी।
  फिर भी मेरी कश्ती किनारे न लग सकी।
- इश्क़ जब तक न करे रुसवा।
  आदमी काम का नहीं होता है।
- जीना भी एक मुश्किल फन है सबके बस की बात नहीं
  कुछ तूफ़ान ज़मीं से हारे कुछ क़तरे तूफ़ान हुए ।
- ज़रूरतों के अंधेरे में डूब जाती हैं
  न जाने कितनी ज़मीनें जो आसमां होतीं ।
- चाहे जिस शान से निकले सूरज
  शाम होती है तो ढल जाता है ।
- आंखें वीरान हैं होंठों पे कोई बात नहीं
  यह अगर हम हैं तो तस्वीर किसे कहते हैं ।
- कोई आहट कोई आवाज़ कोई शोर नहीं
  मेरे ही घर की तरह चांद में रक्खा क्या है ?
- यही सहरा कि जिसे शहर कहा जाता है
  इसी सहरा में हमारा भी मकां है लोगो ।
- हम भी कैसे दीवाने हैं किन लोगों में आ बैठे
  जान पे खेल के जब सच बोले, तब झूठे कहलाए ।
- अच्छा अपना ठाठ फकीरी मंगनी के सुख साज से ।
  अच्छा सार्थक मौन ब्यर्थ के श्रवण मधुर के छन्द से ।
- निश्चेष्ट होकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है।
  न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है। जयद्रथ बध
- लोग कहते हैं राष्ट्रभाषा है। माफ करिए मुझे निराशा है।
  किसको परवाह यहां भाषा की। रात–दिन कुर्सी का तमाशा है।– रमानाथ अवस्थी

- आधियां नहीं जिनमें उमंग भरती हैं । छातियां जहां संगीनों से डरती हैं ।
  षोणित के बदले अश्रु जहां बहता है । वह देष कभी स्वाधीन नहीं रहता है ।
- तुलसी जसि भवितव्यता तैसी मिलइ सहाइ।
  आपुनु आवइ ताहि पहि ताहि तहां लै जाइ।।
- तुलसी देखु सुबेषु भूलहिं मूढ़ न चतुर नर।
  सुंदर केकिहि पेखु वचन सुधा सम अशन अहि।।
- जलु पय सरिस बिकाई देखहु प्रीति कि रीति भलि।
  बिलग होइ रस जाइ कपट खटाई परत पुनि।।
- पन्नगारि असि नीति श्रुति सम्मत सज्जन कहहिं।
  अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित।।
- जेहि ते कछु निज स्वारथ होई। तेहि पर ममता कर सब कोई।।
- जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा। जाइअ बिनु बोलउ न संदेहा।।
- तदपि बिरोध मान जहं कोई। तहां गए कल्यान न होई।।
- राम कीन्ह चाहइ सोइ होई। करै अन्यथा असि जनि कोई।।
- मातु पिता प्रभु गुर कै बानी। बिनहिं बिचार करहिं सुभ जानी।।
- जिन्ह कृत महामोह मद पाना। तिन्ह कर कहा करिय नहिं काना।।
- हित अनहित पसु पच्छिउ जाना। मानुष तन गुन ग्यान निधाना।।
- हरइ सिस्य धन सोक न हरई। सो गुरु घोर नरक महं परई।।
- तात कुतरक करहु जनि जाए। बैर पेम नहिं दुरइ दुराए।।
- कादर मन कर एक अधारा। दैव–दैव आलसी पुकारा।।
- हर दिवस शाम में ढल जाता है। हर तिमिर धूप में जल जाता है।
  रे मन! इस तरह न हिम्मत हार। वक्त कैसा हो! बदल जाता है।–नीरज
- स्थिति से नहीं महत्व गुणों से बढ़ता है।
  यों मयूर से गीध अधिक ऊंचे उड़ता है। मैथिलीशरणगुप्त–सैरंध्री
- जैसे बीते काल बिता देना ही होगा।
  जो कुछ देगा दैव, हमें लेना ही होगा।
- चाहे कोई खुश हो या गालियां हजार दे।

अरे! मस्तराम बन के ज़िंदगी गुजार दे।

- क्या बताएं यार क्या कारे नुमायां कर गए।
  बीए किया नौकर हुए पेंशन मिली और मर गए। – अक़बर इलाहाबादी
- इंसां की खाहिशों की कोई इंतिहा नहीं
  दो गज़ जमीं भी चाहिए दो गज़ कफ़न के बाद– कैफ़ी आज़मी
- अपने ग़म ले के कहीं और न जाया जाए ।
  घर में बिखरी हुयी चीजों को सजाया जाए ।। निदा फाजली
- ऐसे बड़े न होइए जैसे सिंधु खजूर।
  उन ढिंग प्यासे ही रहत इन फल छाया दूर।।
- धोय–धोय इन दृगन सों कढ़ि गो नीर अबीर।
  जतन बताओ ऐ सखी! निकसत नाहिं अहीर।।
- सब रंग तंत रवाब तन विरह बजाबै नित्त।
  और न कोई सुन सके कै साईं कै चित्त।।
- मरना मरना सब कहै मर नहिं जानै कोय।
  मरना वही सराहिए फेर न मरना होय।।
- द्वारन द्वारन गुरु फिरे कोउ दीक्षा लेहु।
  तुम डूबौ या ऊखरौ टका परदनी देहु।।
- कान में कर दिया कुर तुम चेला हम गुर।
  घर में हुई खटपट चल बाबा के मठ पर।
  बाबा ने काटी चोटी मांग खा बेटा रोटी।
- भाला बा पै घालिए जो भाला की लेय।
  भाला उसे न मारिए जो दांत तिनूका देय।।
- ये भी देख वो भी देख इन नैनों का यही सरेख।
  देखत देखत इतना देख मिट जाय दुविधा रह जाय एक।।
- चुपड़ी रोटी देख के छीन लेय नादान।
  बदनामी दो मिनट की दिन भर को आराम।।
- कु से तजो कुमार्ग को रा से भज लो राम।
  न से नाम खुदा रटो है कुरान शुभ नाम।।

- कबिरा साईं मुज्झ को रूखी रोटी देय।
  चुपड़ी मांगत मैं डरूं रूखी छीन न लेय।।
- आधी तौ रूखी भली पूरी तौ संताप।
  जो चाहेगा चूपड़ी अधिक करेगा पाप।।
- उसी गली से मूत है उसी गली से मूत।
  राम भजे तो पूत है नहीं मूत का मूत।।
- सीख दई मानें नहीं करै रैन दिन सोर।
  पूत नहीं वह मूत है महापाप फल घोर।।
- सहज मिले सो दूध सम मांगे मिले सो पानि।
  कह कबीर वह रक्त सम जामे ऐंचा तानि।।
- भगति भाव भादों नदी बढ़त बढ़त बढ़ि जाय।
  सरिता वही सराहिए जेठ मास ठहराय।।
- राम नाम नीको लगे फीके लागें दाम।
  दुविधा में दोऊ गए माया मिली न राम।।
- मांगनो मांगन जात है देबे को उपदेश।
  हम ना दियो सो देख लो आज हमारो वेश।।
- सूखी रोटी रिन घना और कर्कशा नारि।
  पायन को पनही नहीं पाप के लक्षण चारि।।
- अन्न पुराना घृत नया और सुलक्षण नारि।
  मिले सवारी तुरग की पुण्य के लक्षण चारि।।
- विप्र बैद नाई नृपति श्वान सौत मंजार।
  जहां जुगल जोड़ी मिलै तहं तहं होत बिगार।।
- नित प्रति अपने चरित खों देखें चतुर सुजान।
  कै हम पशु के तुल्य हैं कै सत्पुरुष समान।
- सच तो यह अपने प्रिय का अवगुण भी गुण दिखलाता है।
  या यों कहिए प्रेमीजन का अवगुण पर ध्यान न जाता है।।
- यदि श्रेष्ठ लाल उपजाना है तो तुम भी श्रेष्ठ विधान करो।

सर्वदा गर्भिणी के आगे ईश्वर का सुयश बखान करो।।

- दैत्यों और दानवों में भाई–भाई का नाता है।
  पर ईर्ष्या और द्वेष में पड़ भाई को भाई खाता है।।
- गरजें तो अति बरसें न बूंद यह सब धोखा मेघों में है।
  जो कहा किया जो दिया, दिया बस एक बात मर्दों में है।।
- सुखियों को भी दुख सहनशक्ति आती अवसर पड़ने पर है।
  मन साध लिया जाए तो फिर जंगल या महल बराबर है।।
- होने के बाद न उद्यम हो ऐसे प्रभात से सांझ भली।
  जिसके नाम से नाम न चले ऐसे बेटे से बांझ भली।।
- अपने घमंड में दुष्ट जीव औरों को नहीं देखते हैं।
  उस समय ज्ञान कुछ होता है जब नीचा कहीं देखते हैं।।
  इस पर भी वे अच्छे हैं जो ठोकर खा तुरत संभलते हैं।
  हैं कर्महीन जो गिरकर भी अपने को नहीं बदलते हैं।।
- सती, संत गुरु, ब्राह्मण, पास, पड़ोसी, खास।
  हाकिम, वैद्य, रसोइया, घर का भेदी, दास।।
  इनसे जो वैर बढ़ाते हैं वे निश्चय मारे जाते हैं।
  बेमौत मौत के घाट वही बेवक्त उतारे जाते हैं।।
- काग गए नृप भोज के बागन बांधि किला सतखंड दिखाए।
  कंचन पींजरा मांहि करे पुनि षटरस व्यंजन पान कराए।।
  पंडित चार बुलाय लए पुनि चारहु देश के वेद सुनाए।
  एक दिना नृप छोड़ दियो सो ढोर के ढांच पे चींथत पाए।।
- वैद्य को वैद्य गुनी को गुनी ठग को ठग सूम को सूम सुहावे।
  काग को काग मराल मराल को और गधा को गधा पगरावे।।
  कृष्ण भने बुध को बुध त्यों ज्यों रागी को रागी मिले सुर गावे।
  ज्ञानी से ज्ञानी करे चर्चा लबरा के ढिंग लबरा सुख पावे।।
- तेरी तस्वीर में एक बात तुझ से भी निराली है।
  खूब जी भर के हंस लेते हैं न झिड़कन है न गाली है।।
- खुदी को जुदा जिस बसर ने किया

खुदा की क़सम वह खुदा हो गया।

- खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तदबीर से पहले।
  खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है।।
- लाम के मानिंद हैं गेशू श्रीघनश्याम के
  काफिर वही होते हैं जो बंदे नहीं इस लाम के।
- मुहब्बत हो ही जाती है अगर दिल दिल से मिलता है
  मगर मुश्किल तो है यारो कि दिल मुश्किल से मिलता है।
- शमा ने कब कहा परवाने से जल जाने को
  रोकता कौन है कुछ करने को दीवाने को।
- अजीब रस्म निकाली है बागवानों (मृत्यु) ने
  जो गुल खिले उन्हें चमन से निकाल दिया।
- उठा के हाथ शराबी ने दुआ मांगी
  खुदा करे समंदर शराब हो जाए।
- कुदरत को ना पसंद है सख़्ती ज़ुबान में
  बस इसलिए पैदा न की सख़्ती (हड्डी) ज़ुबान में।
- रहिए जहां में जब तलक इंसां की शान से
  वरना कफ़न उठाइए उठिए जहान से।
- कल वो आलम था, खुदा को भी न कहते थे खुदा
  अब ये आलम है कि हर बुत को खुदा कहते हैं।
- नहीं सताते किसी को भी जो ज़माने में
  वही ज़माने में अक्सर सताए जाते हैं।
- कबहुंक हौं यहि रहनि रहौंगो
  श्री रघुनाथ कृपालु कृपा ते संत सुभाव गहौंगो।
  जथा लाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो।
  परहित निरत निरंतर मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।
  परुष बचन अति दुसर श्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
  विगत मान सम सीतल मन, पर गुन नहिं दोष कहौंगो।
  परिहरि देह जनित चिंता, दुःख–सुख समबुद्धि सहौंगो।

तुलसीदास प्रभु यहि पथ रहि अविचल हरि भगति लहौंगो।।

- सबसे सरल भाषा वही
  सबसे मधुर बोली वही
  बोलें जो नैना बावरे
  समझें जो सइयां सांवरे। – हसन कमाल
- मुमकिन है सफर आसां साथ में चलकर देखें
  कुछ आप बदलकर देखें कुछ हम भी बदलकर देखें।
- सरे राह कुछ भी कहा नहीं कभी उसके घर में गया नहीं
  मैं जनम–जनम से उसी का हूं उसे आज तक ये पता नहीं।
  उसे पाक–नज़रों से चूमना भी इबादतों में शुमार है
  कोई फूल लाख क़रीब हो कभी मैंने उसे छुआ नहीं।
  ये खुदा की देन अजीब है कि इसी का नाम नसीब है
  जिसे तूने चाहा वो मिल गया जिसे मैंने चाहा मिला नहीं।
  इसी शहर में कई साल से मिरे कुछ क़रीबी अज़ीज़ हैं
  उन्हें मेरी कोई ख़बर नहीं मुझे उनका कोई पता नहीं।

23

गद्य सार

- आशावादी – यदि मैं काम करता हूं तो मैं धनार्जन करता हूं और यदि मैं बेकार हूं तो मैं आनन्द करता हूं । या तो मैं काम करता हूं या मैं बेकार हूं । अतः या तो मैं धनार्जन करता हूं या मैं आनन्द करता हूं ।
- निराशावादी – यदि मैं काम करता हूं तो मैं आनंद नहीं करता और यदि मैं बेकार हूं तो मैं धनार्जन नहीं करता । या तो मैं काम करता हूं या मैं बेकार हूं । अतः या तो मैं धनार्जन नहीं करता या मैं आनन्द नहीं करता ।
- बातचीत में वाक्चातुरी की अपेक्षा शिष्टता अधिक अनुकूल रहती है और वह चेहरे को ऐसी खास भंगिमा देती है जो सुन्दरता से अधिक सुखद होती है ।
- कल पर विचार अवश्य कीजिये, उस पर मनन कीजिए, योजनाएं बनाइए, तैयारियां कीजिए किंतु उसके लिए चिंतित मत होइए ।
- समझदार के लिए हर सुबह नई जिन्दगी का श्रीगणेश है ।
- बुद्धिमान मनुष्य अपने अनुभवों से सीखता है । अधिक बुद्धिमान दूसरों के अनुभवों से सीखता है ।
- सच बोलने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि तुम्हें याद नहीं रखना पड़ता कि तुमने किससे क्या कहा था ।
- पुरुष या स्त्री में आचरण की जांच इसी से हो जाती है कि कलह के दौरान वे कैसा व्यवहार करते हैं।
- चरित्र दो वस्तुओं से बनता है। आपकी विचारधारा से और आपके समय बिताने के ढंग से।
- महान उद्देश्य और दृढ़ चित्त वाला मनुष्य जो करना चाहे सो कर सकता है।
- अच्छी पुस्तक वह है जो आशा से खोली जाए और लाभ से बंद की जाए।
- आई हुई परिस्थिति का शांतिपूर्वक मुक़ाबला करने से आत्मबल बढ़ता है।
- प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव नज़र आता है।
- प्रारंभिक जीवन में कुछ असफलताएं उठाने से बहुत बड़ा व्यावहारिक लाभ होता है।
- भविष्य चाहे कितना ही सुंदर हो उस पर विश्वास मत करो। भूतकाल की चिंता न करो। जो कुछ करना हो उसे अपने पर और ईश्वर पर विश्वास रखकर वर्तमान में करो।

- अन्याय सहने की अपेक्षा अन्याय करना अधिक अपमानकारक है।
- काम की अधिकता नहीं, अनियमितता आदमी को मार डालती है
- सुंदरतम ढंग से निकृष्टतम बाते करना ही कूटनीति है।
- हम मनुष्य दूसरों की अपेक्षा और सुखी होना चाहते हैं, इसी से इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती; क्योंकि हम दूसरों को वास्तविकता से भी अधिक सुखी समझते हैं।
- बुरा आदमी उस समय और भी बुरा हो जाता है, जब वह अच्छा होने का ढोंग रचता है।
- वह आदमी ज़रूर बुरी तरह अज्ञान का शिकार है जो ऐसे हर सवाल का जवाब देता है जो उससे पूछा जाए।
- यदि हम किसी को अपने पथ पर लाना चाहेंगे तो उसे अपने पथ पर लाने के लिए पहले अपना पथ रोकना पड़ेगा किंतु यात्रा लंबी है और जीवन थोड़ा है।
- पुण्य पाप को न चाहने में नहीं, अपितु पुण्य को ही न चाहने में है।
- तिरस्कार दर्शाने की सर्वोत्तम विधि है– मौन।
- अयोग्य बड़ाई को प्रच्छन्न व्यंग्य समझिए। – ब्रैडहर्स्ट
- सौंदर्य स्त्रियों को प्रायः अभिमानी बनाता है, सद्‌गुण उनको अतिप्रशंसनीय बनाता है और विनय से वे देवतुल्य बन जाती हैं। – विलियम शेक्सपियर
- भावों के आरोपण से एक ही कार्य किसी के लिए बोझ, किसी की दक्षता बढ़ाने का साधन तथा किसी के लिए कर्मयोग बन जाता है। – स्वामी विवेकानंद
- अशुभ अशुभ नहीं, किंतु यह शुभ है कि अशुभ है। – संत ऑगस्टाइन
- उबाने वाला वह व्यक्ति है जो तब बातें करता है, जब आप चाहते हैं िकवह सुने।
- निषेधात्मक विचार मनुष्य की शक्ति क्षीण करते हैं। – विल्टन
- अपने ऊपर विजय प्राप्त करना सबसे बड़ी विजय है। – प्रेटो
- प्रेम सबसे करो, विश्वास कुछ पर करो, बुरा किसी का मत करो। – शेक्सपियर
- महान पुरुषों के कार्य की सिद्धि उनके सत्व से होती है न कि साधन से।
- कर्म की सीमा जहां समाप्त होती है, वहीं से भाग्य की शुरूआत होती है।
- पद से तुम्हारी नहीं बल्कि तुमसे पद की पहचान होनी चाहिए। यह तभी होगा जब तुम्हारे काम महान और अच्छे हों।
- जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही उपर झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है।

- समय और ज्वारभाटा किसी का इंतज़ार नहीं करते। समय की प्रतिबद्धता से सफलता जीवन के क़दम चूमती है।
- शक्ति हमें भ्रष्ट बनाती है और निरपेक्ष शक्ति हमें पूर्ण रूप से भ्रष्ट बनाती है क्योंकि भ्रष्ट न होने का मतलब है कि उसमें शक्ति नहीं है, निर्बल है।
- जानता तो मैं सब कुछ हूं पर करता नहीं हूं तो जानना बेकार है।
- कांट – अपने सहधर्मियों के साथ मनुष्य कभी भी शान्तिपूर्वक नहीं रह सकता और उनके बिना तो वह बिल्कुल नहीं रह सकता इस द्वंद्व से जूझते रहना ही मानव नियति है।
- केवल वही विधान हमारे उपर लागू हो सकता है जिसका निर्माण हमने स्वयं किया हो।
- महात्मा गांधी – व्यक्ति को नैतिक आचरण के लिए किसी नियम के द्वारा बाध्य नहीं किया जा सकता।
- एक ब्रिटिश विचारक – यद्यपि मैं साम्यवादी नहीं, पर मार्क्स एक ऐसे व्यक्ति का नाम है, जिसके पक्ष या विपक्ष में रहना तो संभव है, पर उसके प्रति उदासीन रहना संभव नहीं।
- पूंजीपति समाज में जीवित रहने के लिए या तो पूजीपति बनना आवश्यक है या फिर पूंजीपतियों के आश्रित रहना आवश्यक है।
- एंगेल्स – राज्य, विधि, नीति और धर्म ये सब अधिरचनाएं हैं, जो व्यक्ति के वास्तविक स्वरूप पर आवरण डालती हैं। इस स्थिति में मे ंकर्ता या भोक्ता न रहकर अन्य बन जाता है। धर्म नैतिकता का तेजाब है जो हमें अंदर से खोखला कर देता है। यह अधिरचनाएं संघर्ष को समाप्त कर देती हैं। एंगेल्स ने धर्म को सार्वजनिक नशा मार्क्स ने अफीम कहा है।
- मुसोलिनी – किसी व्यक्ति का सबसे बड़ा अधिकार यह है कि वह अपने जीवन को राष्ट्र के लिए समर्पित कर दे।
- राबर्ट ओवेन एक उद्योगपति – किसी साम्यवादी ने साम्यवाद के गुण बखाने तो उसने अपने हिस्से के 50 पैसे ले जाने को कहा।
- धर्मतंत्र में एक राजा के लड़के के साथ 'व्हिप मैन' इसलिए कि सर द्वारा पिटाई होने की स्थिति में वह सम्मुख रहे ।
- अच्छे और बुरे दोनों युगों का अंत होता है । यदि वर्तमान व्यवस्था उचित है तब ठीक है और यदि वर्तमान व्यवस्था अनुचित है तो चिंतित नहीं होना चाहिए क्योंकि उसका अंत होकर अच्छा युग शुरू होने वाला है।

- यदि ईश्वर है और उस पर विश्वास किया जाए तो किंचित लाभ हो सकता है यदि ईश्वर नहीं है और उस पर विश्वास नहीं किया जाए तो कोई हानि नहीं किंतु यदि ईश्वर है और उस पर विश्वास नहीं किया जाता है तो किंचित हानि भी हो सकती है । अतः हर स्थिति में ईश्वर पर विश्वास करना लाभदायक है।
- के.सी. भट्टाचार्य – विचार विचारक की सत्ता सिद्ध करता है । वास्तविक स्वराज तो विचारों का स्वराज है। स्वराज का अर्थ है – स्वर : आत्मा, आत्मनियंत्रण । इसीलिए इस स्वतंत्र भारत में रहकर भी हम परतंत्र हैं क्योंकि विदेशी सांस्कृतिक दासता से मुक्त रहने पर हमें अंग्रेजों या किसी की गुलामी का कोई अर्थ नहीं।
- दण्ड शुभ नहीं होता उसका उद्देश्य शुभ होता है।
- दुर्खीम – पूर्ण समरस समाज में प्रतिस्पर्द्धा और विकास की इच्छा का अभाव होता है। इसलिए वह अधःपतन कीओर अग्रसर होता है।
- मनुष्य स्वभाव से ही चिन्तनशील है। जीवन और चिन्तन दोनों साथ–साथ चलते हैं। चिन्तन तथा भावना के अनुसार ही मनुष्य के व्यक्तित्व का गठन होता है। मानव समाज पर दर्शन के प्रभाव का यही प्रमुख कारण है। किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति से परिचित होने के लिए उसकी दार्शनिक विचारधारा को जानना आवश्यक है।
- निर्वासित राजा का भी मनोभाव राजा जैसा ही होता है।
- सत्य साहस का उत्पादक होता है। असत्य स्थान पर साहस और सरलता दोनों नहीं टिक सकती हैं और ये दोनों ही सौन्दर्य और शील के आधार हैं।
- कोई भी वरदान मर्यादा का अनुशासन रखता है। दशरथजी को मर्यादा रहित वरदान देने का अधिकार नहीं था किंतु उन्होंने राज्य संविधान से अपने को उपर रखकर वरदान दिया। शासक जब अपने को संविधान और परंपरा से उपर समझता है तो उत्पात होते हैं।
- शासक को अपनी सीमा का सदैव स्मरण रखना चाहिए। कोई शासक शासन का स्वामी नहीं वह उसका विधिसम्मत संचालक है। दशरथ के समान प्राण न देने वाले शासकों के प्राण दूसरे ले लेते हैं।
- निषादराज गुह का रामप्रेम और भरत भेंट भारत की राष्टीय आध्यात्मिक जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है। इसमें मानवीय शान्ति, सद्भावना, शील और सौन्दर्य की सनातन निर्माणात्मक स्थितियां हैं। दो अलग–अलग व्यवसायों, जीवन कार्यों में लगे वर्गों का यह

मेल और एकता मानस दर्शन का ज्योतिस्तम्भ है। सामंजस्य की आधारशिला हैं। मानवदेह में देवत्व या ईश्वरत्व की साधना है

- प्रो0 जेम्स सी. कोलमेन – 17वीं शताब्दी को पुनर्जागरणकाल, 18वीं शताब्दी को बौद्धिक काल, 19वीं शताब्दी को प्रगतिकाल और 20वीं शताब्दी को चिन्ताओं का काल कहा जाता है।
- छोटी सी बात को अत्यधिक चिंता ही मानसिक तनाव का सर्जक है।
- वाल्टर टेम्पिल – मनुष्य रोते हुए पैदा होता है, शिकायत करते हुए जीता है और अंततः निराश होते मर जाता है।
- मुसीबत में मुस्कराते रहना ही सफल जीवन की रहस्य है। यदि हम अपने अनुकूल समय में प्रसन्न रहें व प्रतिकूल समय में दिमाग़ पर तनाव की स्थिति पैदा करें तो यह उचित नहीं है। हमें हर प्रतिकूल स्थिति का बहुत ही दृढ़ता व धैर्य के साथ मुक़ाबला करना चाहिए क्योंकि चिंता करने से किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। इसीलिए कहा गया है चिंता चिता समान है। चिंताएं बच्चों के खिलौनों के समान हैं जिन्हें हम अपने से अलग करना बर्दाश्त नहीं कर सकते।
- जीवन की कुछ समस्याओं का कोई हल नहीं होता लेकिन कुछ उतनी जटिल भी नहीं होती जितनी दिखाई देती हैं।
- सफल व्यक्ति बनने के लिए अपने व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास कीजिए। अपने अंदर छिपी शक्तियों को बाहर निकालिए। उनका उपयोग कीजिए। निराशा के स्थान पर आशा, भय के स्थान पर विश्वास और अकर्मण्यता के स्थान पर कर्मठता को अपनाइए। ज़िंदगी का मज़ा मुसीबतों से लड़कर विजय प्राप्त करने में ही है। इसलिए तकलीफों से घबड़ाने की बजाय उनका स्वागत करना चाहिए।
- पेज – सुख ही सफल जीवन की कुंजी है। सुख में व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने उपरवाले को देखे और उपर बढ़ने के लिए प्रगतिशील रहे। दुःख में अपने से नीचे की ओर देखे तभी हमें परम संतुष्टि प्राप्त हो सकती है।
- यदि लंबी उम्र चाहते हो तो खाओ कम चबाओ ज्यादा। अनाज खाओ कम सब्जी खाओ ज्यादा। खाली बैठो कम जुटे रहो अधिक। बैठो कम टहलो अधिक। चिंता करो कम

प्रसन्न रहो अधिक। खर्च करो कम बचाओ अधिक। बातें करो कम काम करो अधिक। दिखावा करो कम प्रकृति पर रहो अधिक। आलस्य करो कम कर्म करो अधिक। बुराई करो कम भलाई करो अधिक।

- जितना खाओ उससे दुगना पानी पियो। उससे दुगना हंसो और जितना हंसो उससे दुगना टहलो और फिर देखो कि तुम बीमार नहीं पड़ोगे।
- जीवन एक गणित है जिसमें मित्रों को जोड़ो दुश्मनों को घटाओ सुखों का गुणा करो और दुखों का विभाजन करो।
- महत्ता से महत्ता और क्षुद्रता से क्षुद्रता का विकास होता है।
- दर्शन विज्ञान की खोजों, इतिहासकारों की उपलब्धियों, कवि और रहस्यवादी कलाकार की अंतदृष्टियों के सामूहिक रूप पर वैयक्तिक नित्य अनुभव के साथ व्यवस्थित चिंतन द्वारा विनियोजित संगठित गवेषणा है।
- आस्टिन – राजनीति एक पारे की तरह है जिस पर यदि तुम उंगली रखने का प्रयास करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलेगा।
- क्रोचे – आप अतीत को आज जो कुछ सर्वोत्म शेष है उसी के द्वारा समझा सकते हैं।
- एमर्सन – सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनंदन यह है कि हम उसको आचरण में लाएं।
- अपमानपूर्वक हजार वर्ष जीने की अपेक्षा सम्मान के साथ एक घड़ी भर जीना अच्छा है।
- सी. हम्फ्रेन – समस्त उन्नति का आधार आत्मनिर्भरता है।
- इब्सन – सबसे शक्तिशाली वही व्यक्ति है जो आत्मनिर्भर रहता है।
- जिस स्थिति में स्थिर सुख अनुभव हो वह आसन है।
- अगर आप किसी को उपर उठाना चाहते हों तो पहले आपका उंचे स्थान पर खड़े होना आवश्यक है।
- यदि परमात्मा ने सफलता का कठिनाई के साथ गठबंधन न किया होता, उसे सर्वसुलभ बना दिया होता तो वह मनुष्य जाति का सबसे बड़ा दुर्भाग्य होता। तब सरलता से मिली हुई सफलता बिल्कुल नीरस हो जाती। जो वस्तु जितनी कठिनता से जितना खर्च करके मिलती है वह उतनी ही आनंददायक होती है।
- उपासना का अर्थ है – ईश्वर के आदर्शों के समीप बैठना।
- कष्ट और कठिनाई का व्यवधान उन्नति की हर दिशा में मौजूद रहता है।

- यदि महत्वपूर्ण को प्राप्त करने में कुछ बाधा न होती हो तो वे महत्वपूर्ण न रह जाती और न उनमें कुछ रस आता।
- चिन्तन का अच्छा और बुरा प्रवाह ही क्रिया और व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।
- लेस्ली ब्राउन : इथिकल साइंस ऑफ सोल – किसी व्यक्ति के कार्य के स्वरूप का बाह्य अवलोकन करके उसे नीति अनीति की संज्ञा नहीं दी जा सकती । कार्य के पीछे कर्ता की मंशा और भावना क्या थी। इसे भली –भांति समझने के उपरांत ही किसी कार्य को नैतिक या अनैतिक कहा जा सकता है।
- व्यष्टि से समष्टि का निर्माण होता है। मिट्टी यदि अच्छी हो, मूर्तिकार योग्य हो तो उससे बनने वाली प्रतिमा की प्रशंसा हुए बिना नहीं रह सकती।
- अपने को निर्बल समझने वाला ही निर्बल है।– महात्मा गांधी
- भावना एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका सीधा प्रभाव हमारे अचेतन मन पर पड़ता है। अचेतन मन– जिसे गुप्त मन भी कहते हैं, ईष्वर प्रदत्त शक्ति का भांडागार है, दिव्य क्षमताओं का वह मूल स्रोत है।
- किसी को इस आधार पर मत मान लो कि मानव समाज का बहुत बड़ा वर्ग उसमें विश्वास करता दिखता है, क्योंकि मानव–समाज का बहुत बड़ा हिस्सा तो दरअसल षैतान के सिद्धांत में विश्वास रखता है। एक ज़माना था जब मानव समाज को बहुत बड़ा हिस्सा गुलामी में विष्वास करता था, मगर यह तो इसका प्रमाण नहीं कि गुलामी की प्रथा उचित थी। –स्वामी रामतीर्थ
- धर्म में किसी भी चीज को उसकी विशेषता के आधार पर, गुण के आधार पर और उपयोगिता के आधार पर स्वीकार किया जाना चाहिए।
- भोगवाद का अंत निराशा में होता है। भोगवादी शीघ्र ही मिथ्या एवं नष्वर सुखों में अपनी सारी शक्तियां नष्ट कर डालते हैं।
- प्रेम के बदले प्रेम की आशा करना ठीक हो सकता है, पर उस आशा को सफलीभूत बनाने का उद्यम अनधिकृत चेष्टा है।
- व्यक्तित्व की उत्कृष्टता किसी बात को काटने में नहीं, अपितु उसे सिद्ध करने में होती है।
- एक साहस भरा योग्य काम करने की इच्छा करने वाले किसी भी व्यक्ति को किसी का आशीर्वाद लेने की इच्छा कभी नहीं करनी चाहिए। देश के बड़े से बड़े नेता की भी नहीं। एक योग्य काम अपना आशीर्वाद अपने साथ ही लेकर चलता है। – महात्मा गांधी

- अज्ञान संसार का शत्रु नहीं, शत्रु है ज्ञान का दंभ।
- कभी–कभी अज्ञान ढाल बन जाता है और ज्ञान दुख का कारण।
- जब विवाह काम विकार की गुलामी का रूप धारण कर लेता है, तब हर बार की तुष्टि से गुलामी और भी बढ़ जाती है और तुम अधिकाधिक नीचे डूबते जाते है।
- गुस्सा एक मानवीय वृत्ति है, किंतु बात–बात में सर्वदा गुस्सा करते रहना सनक की शक्ल अख्तियार कर लेता है।
- पुरुष से नारी अधिक बुद्धिमती होती है, क्योंकि वह पुरुष से कम जानती है किंतु समझती उससे अधिक है।
- उससे कभी मित्रता मत करो जो तुमसे बेहतर नहीं।
- जितनी ही हम प्रगति करते जाते हैं, उतनी ही अपनी अयोग्यता का भान होता जाता है। संतोष प्रयत्न में है, प्राप्ति में नहीं। पूर्ण प्रयत्न पूर्ण विजय है। – महात्मा गांधी
- यह दुनिया एक ऐसी क़िताब है, जिसके शुरु और अंत के पेज खो गए हैं, शेष बचे बीच के पेजों के आधार पर शुरू और अंत के पेजों को खोजना ही दर्शन है। किसी अरबी कवि का प्रोफेसर जटाशंकर द्वारा
- अंधेरे कमरे में काला चश्मा लगाकर एक ऐसी काली बिल्ली को खोजना; जो वहां नहीं है, दर्शन है।
- संस्कृत वाङमय में एक शब्द है 'समज' जिसका अर्थ है, पशुओं का समूह; किंतु जब इसी 'समज' में दंड – ा लगा दिया जाता है, तभी 'समाज' शब्द बनता है अर्थात् समाज एक उद्देश्यपरक नियंत्रित मानवों का समूह है।
- धार्मिक हो जाना ही पर्याप्त नहीं है, धर्म के साथ श्रद्धा–भावना जोड़ लेना ही पर्याप्त नहीं। उसके साथ यह देखना भी परमावश्यक है कि वह धर्म देश, समाज और विश्व के मंगल का पथ और उसमें हमारी उपयुक्त भूमिका प्रस्तुत करता है या नहीं।
- संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु को ऐसा रूप देना, जिसके द्वारा वह अधिक उपयोगी बन जाए।
- सच्चा पुरुषार्थी वास्तव में वही है जो बार–बार असफलता को देखकर भी अपने प्रयत्न में शिथिलता न आने दे और हर असफलता के बाद एक नए उत्साह से सफलता के लिए निरंतर उद्योग करता रहे।

- निराशा मनुष्य की क्रियाशीलता पर सर्प की भांति लिपटकर ने केवल उसकी भांति ही अवरुद्ध कर देती है, प्रत्युत् अपने विषैले प्रभाव से उसके जीवन तत्व को भी नष्ट कर डालती है।
- यह काल हमें बदलता प्रतीत इसलिए होता है क्योंकि उसे घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में हम देखते हैं।
- दूसरों को उपदेश देने से पूर्व यही अच्छा है कि उस कठिन कार्य को अपनों को साथ लेकर स्वयं ही आरंभ किया जाए।
- असाधारण परिवर्तन ही युग परिवर्तन है।
- अपने बारे में जानकर अपनी सेवा करना– आत्मसुधार करना– अधिक सरल है, बनिस्बत् इसके कि हम औरों को सारी दुनिया को बदलने का प्रयास करें।
- अब तुमने जानने योग्य पहली बात जान ली कि तुम कुछ नहीं जानते, यह ज्ञान की पहली सीढ़ी है। – गुरजियफ
- फिनॉमिनालिज्म – वस्तुतः सबसे बड़ा ज्ञानी–विद्वान, व्यक्ति स्वयं होता है, क्योंकि अन्य की विद्वत्ता की सार्थकता भी इसी बात पर निर्भर है कि वे उसे कैसे प्रतीत होते हैं। उनकी विद्वत्ता उन्हें किस रूप में प्रदत्त होती है। अर्थनिरूपण का यही सामान्य ढंग है, शायद इसका अपवाद भी नहीं है।

- वास्तविक प्रमाण तो वही हो सकता है, जिसे अपने को प्रमाणित करने के लिए अन्य के सहारे की आवश्यकता न हो।

- जापान का हाराकीरी दर्शन – जब आप इस जीवन और समाज में अपनी भूमिका अदा कर चुके हों तो आपको धरती पर बोझ बने रहने का कोई हक़ नहीं है।

- सूक्तियों से जीवन की सच्ची परिस्थितियों का मार्मिक अनुभव होता है।
- जिसे पुस्तकें पढ़ने का शौक हो वह सब जगह सुखी रह सकता है।
- पुरुष या स्त्री में आचरण की जांच इसी से की जाती है कि कलह के दौरान वे कैसा व्यवहार करते हैं।

- चरित्र दो वस्तुओं से बनता है। आपकी विचारधारा से और आपके समय बिताने के ढंग से।
- अच्छी पुस्तक वह है जो आशा से खोली जाए और लाभ से बंद की जाए।
- आई हुई परिस्थिति का शान्तिपूर्वक मुकाबला करने से आत्मबल बढ़ता है।
- प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव नजर आता है।
- प्रारंभिक जीवन में कुछ असफलताएं उठाने से बहुत बड़ा व्यावहारिक लाभ होता है।
- मनुष्य को इसकी बड़ी सावधानी रखनी चाहिए कि वह इतना अधिक बुद्धिमान कभी न हो जाए कि हंसने जैसी महान खुशी से अलग रहने लगे।
- भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर क्यों न हो उस पर विश्वास मत करो। भूतकाल की चिन्ता न करो। जो कुछ करना हो उसे अपने पर और ईश्वर पर विश्वास रखकर वर्तमान में करो।
- अन्याय सहने की अपेक्षा अन्याय करना अधिक अपमानकारक है।
- काम की अधिकता नहीं, अनियमितता आदमी को मार डालती है।
- सुन्दरतम ढंग से निकृष्टतम बातें करना और कहना ही कूटनीति है।
- हम मनुष्य दूसरों की अपेक्षा और सुखी होना चाहते हैं। इसी से इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती, क्योंकि दूसरों को वास्तविकता से भी अधिक सुखी समझते हैं।
- बुरा व्यक्ति उस समय और भी बुरा हो जाता है जब वह अच्छा होने का ढोंग रचता है।
- वह आदमी जरूर बुरी तरह से अज्ञान का शिकार है जो ऐसे हर सवाल का जवाब देता है जो उससे पूछा जाए।
- प्रलोभनों के प्रतिरोध का प्रत्येक क्षण महान विजय है।

डा राकेश नारायण द्विवेदी
जन्म तिथि एवं स्थान :
चार जुलाई सन् तिहत्तर, ललितपुर
शैक्षणिक योग्यता :
एम ए हिंदी, नेट-जे आर एफ, पी-एच.डी
पद : स प्रोफेसर (व वे)
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
संस्था का नाम :
गांधी महाविद्यालय, उरई (जालौन) उ प्र
स्थायी नियुक्ति वर्ष/सेवा अवधि :
सन् 2003/11 वर्ष
शोध विषय :
डा राही मासूम रज़ा के उपन्यासों
में पात्र परिकल्पना
विशेषज्ञता : बुंदेली साहित्य

प्रमुख कृतियां : 1- बानपुर विविधा (संपादन) 2008
2- भइया अपने गांव में (संपादन बुंदेली काव्य) 2011
3- स्थान-नाम : समय के साक्षी 2012
4- बुंदेली गीतगोविंद (संकलन, संशोधन व प्राक्कथन), ई रूप में 2014
5- राही मासूम रज़ा और उनके औपन्यासिक पात्र, ई रूप में 2014
6- बानपुर और बुंदेलखंड (संशोधित "बानपुर विविधा) ई रूप में 2014
7- साहित्यिक शोध में समय, समाज और संस्कृति, ई बुक 2015
8- रश्मि आलोक (चुने हुये रचनांश), ई बुक 2015

पुरस्कार : क- 'भइया अपने गांव में' के लिये : 1- अवधेश पुरस्कार,
2- अखिल भारतीय बुंदेली साहित्य एवं संस्कृति पुरस्कार,
3- काशीराम वर्मा स्मृति पुरस्कार,
ख- विश्व हिंदी सेवी सम्मान सिल्पाकार्न यूनिवर्सिटी बैंकाक में विश्व हिंदी मंच द्वारा)

पत्राचार का पता : 245, शब्दार्णव, नया पटेल नगर, कॉंच रोड, उरई

मोबाइल : 9236114604
ईमेल : rakeshndwivedi@gmail.com